महान-क्रान्तिकारी

रासबिहारी बोस

(क्रान्ति के सूत्रधार)

लेखक

श्री शंकर सहाय सक्सेना

(भूतपूर्व निदेशक, कालेज शिक्षा, राजस्थान)

रचयिता—क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, बलिदानों की प्रशस्ति या शहीद पुराण, एक भारतीय तीर्थ यात्री (नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की जीवनी), देश जिन्हें भूल गया (बलिदानी वीरों की जीवनियां), बिजोलिया किसान आन्दोलन का इतिहास, पथिक (श्री विजयसिंह पथिक की जीवनी), जो देश के लिए जिए (लोकनायक माणिक्यलाल वर्मा की जीवनी) आदि।

प्रकाशक

मुक्तवाणी प्रकाशन

पुस्तक प्रकाशक

मॉडर्न मार्केट

बीकानेर—334 001

मूल्य- 30 रु०

प्रकाशक

मुक्तवाणी प्रकाशन

प्रकाशक व विक्रेता

माडन मार्केट

बीकानेर-33 4001

* सर्वाधिकार प्रकाशक के
आधीन सुरक्षित हैं।

* लेखक श्री शंकर सहाय सक्सेना

* संस्करण 1988-89

मुद्रक

शिक्षा-भारती प्रेस

बड़ा बाजार

बीकानेर-334 001

महान-क्रान्तिकारी



रासबिहारी बोस

"I was a fighter,
one fight more,
The last and the
best"

Ras Behari Bose
25/4/1942

"मै एक योद्धा था,
एक युद्ध और,
अन्तिम और सर्वोतम"

रास बिहारी बोस
२५/४/१६४२

मुख्यमन्त्री
राजस्थान



भूमिका

श्री शंकर सहाय जी सक्सेना राजस्थान के उन विद्वानों में हैं जो हमारे स्वाधीनता-संग्राम के घटना-चक्र के प्रत्यक्षदर्शी रहे हैं। विशेष रूप से राजस्थान में राजनीतिक जागरण के जो जन-आंदोलन हुए और उनका संचालन जिन स्वाधीनता सेनानियों ने किया, उनसे वे निकट से परिचित रहे हैं। व्यक्तिशः मेरे लिए वे अत्यंत आदरास्पद रहे हैं और इस नाते मुझसे इस पुस्तक की भूमिका लिखने का आग्रह करके उन्होंने मेरे प्रति अपनी सहज आत्मीयता का परिचय दिया है।

मुझे यह देखकर प्रसन्नता होती है कि सक्सेनाजी ने एक ऐसे कार्य को हाथ में उठाया है, जो अब तक लगभग उपेक्षित रहा है। राजस्थान में जिन विभूतियों ने अपने जीवन के समस्त सुखों का उत्सर्ग कर इस प्रदेश में अंग्रेजी सत्ता और सामंतवाद के विरुद्ध शंखनाद किया था, उनकी जानकारी जन-जन तक पहुंचनी चाहिए, ताकि हमारी आज की पीढ़ी और भावी पीढ़ी यह जान सके कि जिस आजादी की छत्रछाया तले हम आज फूल-फल रहे हैं, उसका बिरवा कितने संघर्षों और बलिदानों के बीच रोपा गया था। उन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, बिजोलिया का किसान आंदोलन, विजयसिंह जी पथिक और माणिक्य लाल जी वर्मा पर जो ग्रंथ पूर्व में प्रकाशित किये हैं वे अपनी तथ्यात्मकता और प्रामाणिकता के लिए सुविदित हैं। इसी श्रृंखला में महान् क्रांतिकारी रासबिहारी बोस पर लिखी गई उनकी यह पुस्तक नवीनतम कड़ी के रूप में हमारे सामने है।

सक्सेनाजी उस पीढ़ी के विद्वान हैं जो लेखन-कर्म के लिए गहन अध्ययन, तथ्यान्वेषण और निष्पक्ष दृष्टि को अनिवार्य मानते हैं। उनकी इस पुस्तक की सामग्री इसका जीवंत प्रमाण है।

स्वर्गीय रासबिहारी बोस कितने तेजस्वी क्रातिकारी थे और देश को दासता से मुक्त कराने के लिए वे कितने विकल थे, इसका ब्यौरा सक्सेनाजी ने काल क्रम से बडे रोचक ढग से प्रस्तुत किया है। वे एक उग्र राष्ट्रवादी थे और राजस्थान के क्रातिकारियो से उनके घनिष्ठतम सम्बध थे। लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की जो योजना उन्होने बनाई थी, उसमे इसीलिए हमारे प्रदेश के प्रसिद्ध क्रातिकारी जोरावर सिंह जी और प्रतापसिंह जी की सक्रिय भूमिका थी। इस बम प्रकरण पर सक्सेनाजी ने विस्तार से प्रकाश डाला है और अनेक ऐसे तथ्यो को उद्घाटित किया है, जो अब तक अज्ञात थे। समूची पुस्तक मे रासबिहारी बोस की जीवन यात्रा और उनके देशभक्ति पूर्ण कार्य कलाप को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि इस कृति मे औपन्यासिक रसात्मकता उत्पन्न हो गई है जो पाठक को बराबर बाधे रहती है।

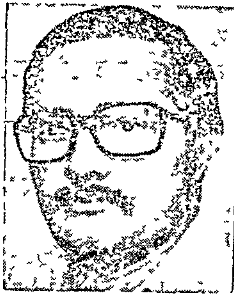
मैं श्रद्धेय शकर सहाय जी सक्सेना को इस श्रेष्ठ पुस्तक के लेखन के लिए अपनी हार्दिक बधाई देता हू और अनुरोध करता हू कि वे राष्ट्र भक्त विभूतियो की यशोगाथाओ को प्रकाशित करने का यह क्रम निरतर जारी रखें।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक भी उनकी पूर्व कृतियो की तरह ही विद्वानो द्वारा समादृत होगी और इसका व्यापक प्रचार प्रसार होगा।

दिनाक 12 10 88 **शिवचरण माथुर**

प्रेषिति —**श्री अरुण सकसेना**
सचालक
मुक्तवाणी प्रकाशन
पुस्तक प्रकाशक एव विक्रेता
माडन मार्केट, बीकानेर-334 001

शिक्षामन्त्री,
राजस्थान



महान क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस पुस्तक की प्रस्तावना

मुक्तवाणी प्रकाशन, के सचालक श्री अरुण सक्सेना द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस' का प्रस्तुत प्रयास प्रशसनीय है। देश प्रेम व सामाजिक उत्थान के लिए उनके हृदय म जो अग्नि धधक रही है, उसकी स्फुलिंग, अमर शहीदो की जीवनियो के रूप मे, वे आने वाली पीढियो को सौंप देना चाहते हैं। इसीलिए वे भारत के महान सपूतो के जीवन चरित्र व उनसे सम्बद्ध प्रेरणादायी घटनाओ का निरतर प्रकाशन करते आ रहे हैं।

स्वनामधन्य श्री रासबिहारी बोस उन कतिपय व्यक्तियो मे से एक हैं जिन्होने 1857 के स्वतन्त्रता सग्राम के पश्चात निष्प्राण पडे भारत मे जान फूकी थी और स्वतन्त्रता की अग्नि पुन प्रज्वलित की थी वे क्राति के अग्रदूत थे अमरीका मे भारतीय स्वतन्त्रता की अलख जगाने वाले लाला हरदयाल के शब्दो म—"हम नही जानते यह मुक्तिदाता रासबिहारी बोस कहा से आया। वह भारतीयो की सतत् कामनाओ तथा उच्छ्वासो के उत्तर म आशीर्वाद के रूप मे आया है। उसने हमे गहन निद्रा से जगा दिया। दासो और कायरो के मध्य उस अकेले ने यह दिखला दिया कि भारत मे पुरुषत्व मर नही गया है। अपनी वज्रवाणी से उसने भारत की भूमि पर स्वतन्त्रता का विजय दीप किया।"

श्री रासबिहारी बोस का तप-प्राय जीवन व उर्वरक मस्तिष्क अनेक ऐसी योजनाओ का स्रोत रहा जिसने ब्रिटिश साम्राज्य को जड से हिला दिया उस समय का सर्वाधिक शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य अपने कुशलतम गुप्तचरो के भरपूर प्रयत्न के बाद भी उन पर हाथ न रख सका था। किसी न ठीक ही कहा है कि 'देश की खातिर लहू अपना बहाना फर्ज है, गोलिया सीने पे खाकर मुस्कुराना फर्ज है आखिरी दम तक कदम आगे बढाना फर्ज है गौर कर इस पर वतन का तू अगर जाबाज है, ये मेरी आवाज गोया मुल्क की आवाज है, यह उक्ति उनके जीवन पर चरितार्थ होती है। अत इस महान स्वतन्त्रता सेनानी के जीवन से सम्बन्धित यह पुस्तक अपने उद्देश्य मे सफल होगी तथा राष्ट्र के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी। श्री रासबिहारी बोस का जीवन अनुकरणीय है। जैसे ध्रुवतारे तक हम पहुच नहीं सकते फिर भी उससे हमे दिशा निर्देश मिलता है उसी प्रकार स्वतन्त्रता सग्राम के इन दैदीप्यमान नक्षत्रो की ऊचाई तक चाहे हम न पहुच पायें वे हम भारतीयो के लिए आदर्श की एक दिशा निर्धारित करते रहेंगे।

पुस्तक के प्रकाशक व लेखक दोनो ही इस कार्य के लिए बधाई के पात्र हैं। मैं आशा करता हू कि यह पुस्तक भावी पीढी के लिये प्रेरणा का स्रोत रहेगी।

[बी० डी० कल्ला]
शिक्षामन्त्री, राजस्थान सरकार

महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस

(क्रान्ति के सूत्रधार)

विषय सूची

प्रस्तावना

भारत की आजादी की लड़ाई के साथ जिनका थोड़ा-सा भी सम्बन्ध है, उनके लिए रासबिहारी बोस के नाम की जानकारी आश्चर्यजनक नहीं है। किन्तु नई पीढ़ी के लिए जिनकी इतिहास से थोड़ी भी जानकारी नहीं है, उनके लिए रासबिहारी बोस एक अनजाना नाम है। भारत की आजादी की लड़ाई के महान सेनानी, महान् क्रांतिकारी और क्रांति के सूत्रधार, महान विप्लवी रासबिहारी बोस एक चिरपरिचित नाम है।

रासबिहारी बोस कहने के साथ ही एक ऐसी मूर्ति सामने आती है जिसका जीवन त्याग का एक अपूर्व उदाहरण रहा है। जिसकी महानता और अमरता को मृत्यु ने और अधिक बढ़ा दिया है। भारत की आजादी की लड़ाई में जो अद्वितीय रहा है। वह रासबिहारी बोस १८५७ के बाद का पहला क्रांतिकारी नेता है जिसने भारतीय सैनिकों को मिला कर ब्रिटिश साम्राज्यशाही को उखाड़ फेंकने के लिए सशक्त-क्रांति का आयोजन किया। विदेशों में जिसने समस्त बिखरे हुए भारतीयों को संगठित कर आजादी के संघर्ष को आगे बढ़ाया और मजबूत किया, उस व्यक्ति को स्वतन्त्र भारत में भी स्वतन्त्रता प्राप्त करने के ३८ वर्ष बाद उचित सम्मान नहीं मिले, एक लज्जाजनक राष्ट्रीय दुर्घटना ही कही जा सकती है।

१९१२ में राजकीय समारोह के साथ दिल्ली में प्रवेश करते समय भारत के तत्कालीन वाईसराय लॉर्ड हार्डिंग के ऊपर बम प्रहार कर जिस व्यक्ति रासबिहारी बोस ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ों को हिला दिया, जिसका क्रांतिकारी संगठन झेलम से लेकर गंगा के डेल्टा और बर्मा के जंगलों तक फैला हुआ था, ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध सशक्त-क्रांति की जिसने निश्चित योजना बना रखी थी, और अपने इस काम के लिए जिस व्यक्ति ने एक ओर सॉन फ्रान्सिसको से बर्लिन तक और दूसरी ओर टोकियो से काबुल तक अपना प्रभाव फैला रखा था, उसके बारे में देश में कुछ वृद्ध व्यक्तियों को अवश्य जानकारी है। किंतु नई पीढ़ी के युवकों को लेश मात्र भी नहीं।

कुछ देश द्रोहियों की मुखबरी के कारण १९१२ में सशस्त्र क्रांति असफल हुई। रासबिहारी को अपना देश छोड़ कर १९१५ में जापान जाना पड़ा। जून, १९१५ में वे पी० एन० टगोर के नाम से जापान पहुंचे। वहां जाने के बाद भी वे एक क्षण भी आलसी नहीं रहे। शंघाई जाकर उन्होंने जर्मन लोगों से सम्बन्ध स्थापित किया और चीनी एजेंसियों की मार्फत प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारत में हथियार भेजने का प्रयत्न किया। यह भी सफल नहीं हो सका। तब रासबिहारी बोस टोकियो चले आए।

ब्रिटिश सरकार को उनके एक भाषण के बाद यह ज्ञात हो गया कि वे पी० एन० टगोर नहीं हैं बल्कि महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस हैं। तब उसने जापान सरकार पर यह दबाव डाला कि उनको बंद करके अंग्रेज सरकार को दिया जाए। इसी बीच चीन के महान क्रांतिकारी डॉ० सनयात सेन ने भी भाग कर जापान में तोयामा के यहां आकर आश्रय लिया। रासबिहारी बोस ने इसी बीच जापानी महिला से विवाह कर लिया और जापानी नागरिकता प्राप्त कर ली।

महान विप्लवी रासबिहारी बोस ने १९२६ में पान एशियन लीग की स्थापना की। भारत से बाहर रहकर भी भारत की आजादी की लड़ाई को सक्रिय बनाने के उद्देश्य से उन्होंने भारत से बाहर रहने वाले भारतीयों को संगठित कर उनमें आजादी की भावना भरने का प्रयत्न किया। उन्होंने भारत के सम्बन्ध में सोलह पुस्तकें लिखी।

१९४३ में श्री सुभाष चन्द्र बोस ने INA (आजाद हिन्द फौज) का निर्माण किया। और देश को 'करो या मरो' का नारा दिया। २१ अक्टूबर, १९४३ को आजाद हिन्द सरकार की स्थापना हुई। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस को सरकार का सर्वोच्च सलाहकार नियुक्त किया। लगातार परिश्रम करने के कारण वो महान क्रांतिकारी नेता रोग ग्रस्त हो गया और २१ जनवरी १९४५ को रासबिहारी बोस ने सदा के लिए आँखें बंद कर लीं। उनका जापान में इतना सम्मान किया गया कि उनके मृत शरीर को राजकीय सवारी पर, जिसमें कि जापान के सम्राट की ही सवारी जाती थी जो—जो जी के मन्दिर के प्रांगण में ले जाया गया। उनको गैर सरकारी अधिकारियों को मिलने वाला सर्वोच्च आदर— सकैण्ड क्लास ऑर्डर से सम्मानित किया गया।

अत्यन्त लज्जा की बात यह है कि आज स्वतन्त्र भारत में कोई स्मारक उनके नाम का नहीं है। यह भारतीयों की महान कृतघ्नता है।

—शंकर सहाय सक्सेना

प्रथम अध्याय

पूर्वाभास

क्रांतिकारी आंदोलन का श्री गणेश महाराष्ट्र और बंगाल में उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशकों में हो चुका था। महाराष्ट्र में उदयपुर के ठाकुर साहब के नेतृत्व में गुप्त क्रांतिकारी संगठन खड़ा हो गया था और ठाकुर साहब, उदयपुर ने भारतीय सेना की तीन रजीमेंटों को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए तैयार कर लिया था। उन्हीं उदयपुर के ठाकुर साहब ने श्री अरविंद घोष को क्रान्तिकारी संगठन में दीक्षित किया था जबकि वे बड़ौदा में थे।

श्री अरविंद ने बड़ौदा में रहते हुए बंगाल में क्रांतिकारी आन्दोलन को आरम्भ किया और उसका नेतृत्व प्रदान किया और बाद को तो वे बड़ौदा से बंगाल ही चले आए और बंगाल के क्रांतिकारी आंदोलन को उनका सीधा नेतृत्व प्राप्त हुआ। कहने का अर्थ यह है कि भारत में क्रांतिकारी आंदोलन का आरम्भ महान क्रांतिकारी रास बिहारी बोस के बहुत पहले प्रारम्भ हो चुका था परन्तु जिस विशाल क्षेत्र अर्थात् समस्त उत्तर भारत में क्रांतिकारियों को संगठित कर उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत में पेशावर से लेकर कलकत्ता तक भारतीय सेनाओं को विद्रोह के लिए तैयार करने तथा भारत में ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए जैसा विस्तृत और विशाल आयोजन रास-बिहारी बोस के नेतृत्व में हुआ वैसा विप्लव का आयोजन १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता के युद्ध के उपरान्त भारत में नहीं हुआ था।

देश के दुर्भाग्यवश यह देश व्यापी विद्रोह सफल नहीं हुआ, और रास बिहारी बोस विदेशों से अस्त्र शस्त्र प्राप्त करने, तथा ब्रिटिश सरकार के गुप्तचरों से बचने के लिए जापान चले गए। वह महान देशभक्त और क्रांतिकारी अपनी मृत्यु शैय्या पर भी भारत की स्वतन्त्रता के लिए जूझता रहा। जब से रास बिहारी बोस ने होश सम्हाला और मृत्यु की अन्तिम घड़ी तक जो महान देशभक्त क्रांतिकारी भारत माता को अंग्रेजों की दासता से मुक्त करने के लिए संघर्ष करता रहा और १९४७ में जो देश को स्वत-

रता प्राप्त हुए उनका बहुत कुछ श्रेय आजाद हिन्द फौज को है जिसे रासबिहारी बोस ने सगठित किया था और [illegible] अपार जीवन व [illegible] में जापानी में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को सुपुर्द [illegible] कर दिया था। उस [illegible] में दक्षिण, जापान [illegible] मातृभूमि की स्वाधीनता में [illegible] उस [illegible] क्रान्तिकारी [illegible] इस उस जापान [illegible] भारतीयों की उस [illegible] क्रान्तिकारी का [illegible] था। प्राण के पूर्व में इस जीवन घटना का [illegible] आ [illegible] क्रान्तिकारी और [illegible] जीवन [illegible] मृत्यु [illegible] इस प्रकार उनका [illegible] और उनका गाथा का [illegible] पश्चात अपनी मातृभूमि [illegible] कर दिया। बलिदान करने के लिए अपना [illegible]

बाल्यकाल

राम बिहारी बोस [illegible] २५ मई १८८६ को [illegible] बिघाती गाव म जो हुगली जिले म [illegible] राम बिहारी बोस की बहिन सुश्री सुशीला [illegible] तथ्य की पुष्टि की थी कि उनका [illegible] भी [illegible] में अपने मामा के यहां हुआ था। [illegible] श्री [illegible] मठ। भी इस बात की पुष्टि की है। परन्तु [illegible] गाव के [illegible] बिहारी मण्डल ने जो १०८ वर्ष के थे। १६ अप्रेल १९६१ को [illegible] राम बिहारी बोस [illegible] म सुबालदाह ग्राम मित्र [illegible] बिहारी बोस के बड़े पुत्र राम बिहारी बोस [illegible] आधार पर की थी (दू प्रेट म हुआ था। [illegible] प्रत्यक्ष जानकारी के [illegible] पृष्ठ ८०) इण्डियन [illegible] उनका [illegible] बिघाती' गाव को ही जा भी हो अधिकांश [illegible] सुबालदाह ग्राम में व्यतीत

मानते हैं।

राम बिहारी बोस का [illegible] पहुंच [illegible] राम बिहारी बोस की माता हुआ। जहां उनके पितामह श्री कालीचरण [illegible] राम बिहारी बोस को [illegible] अपने श्वसुर के पास आ अपने भाई के घर से [illegible] राम बिहारी को [illegible] राम बिहारी का बाल्यकाल गई थीं। श्री कालीचरण बोस की [illegible] बगाल ने व्यतीत हुआ।

राम बिहारी बोस के पिता श्री विनोद बिहारी बोस आरम्भ म बगाल ने सचिवालय म सरकारी कर्मचारी थे। [illegible] चन्दरनगर म एक मकान खरीद लिया। जब रामबिहारी बोस चार वर्ष के थे तब उनके पिता [illegible] म चन्दरनगर चले आए। अस्तु [illegible] रामबिहारी बोस की प्रारम्भिक शिक्षा चन्दरनगर म हुई।

चन्दरनगर म [illegible] राम बिहारी बोस अपने एक अभिन्न मित्र के साथ अध रात्रि को चन्दरनगर म भागीरथी नदी के पश्चिमी तट स्थित श्मशान घाट म जाते और श्मशान मे मानव खोपडिया इकट्ठी करते और घर [illegible] उनसे खेलते थे। इस साह सिक खेल मे जहां एक ओर उस [illegible] के अन्तर म निर्भयता तथा साहस की भावना बलवती होती थी वहां मनुष्य शरीर की नश्वरता का भी भान होता था।

जब बालक रास बिहारी बोस कुछ बड़े हुए और स्कूल में अध्ययन के लिए जाने लगे तो उनका मन नीरस पाठ्य पुस्तकों में नहीं लगता था। वे उद्दंड छात्रों में गिने जाते थे। जब वे 'डूपले कॉलेज' चन्दननगर (जो अब कनाईलाल विद्यामंदिर कहलाता है) की दूसरी कक्षा के छात्र थे तब उनका अपने अध्यापकों से झगड़ा हो गया। इस कारण उनको उस स्कूल को छोड़ना पड़ा और वे कलकत्ता के मार्टन स्कूल में भर्ती हो गए। जहां रास बिहारी का मन पाठ्य पुस्तकों को पढ़ने में नहीं लगता था वहां वे उस प्रकार की पुस्तकों को बड़े ध्यान से पढ़ते थे जिनमें वीरोचित कार्यों अथवा शौर्य का वर्णन होता था। वे 'आनंद मठ', 'पलाशीर युद्ध' (पलासी का युद्ध) जैसी पुस्तकों को जिनमें भारतीयों द्वारा देश को अंग्रेजों की दासता से स्वतंत्र करने के लिए बलिदान की कथा वर्णित होती बड़ी तल्लीनता के साथ पढ़ते थे जिससे उनके कोमल मानस पटल पर देश प्रेम और मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए बलिदान तथा त्याग करने की भावना गहराई से अंकित हो गई। उनमें देशप्रेम तथा क्रांति की भावना जन्मजात थी। बालक रास बिहारी बोस में भारत के महान देशभक्त क्रांतिकारी का निर्माण हो रहा था। उनको बंकिम चन्द्र चटर्जी की पुस्तकों ने बहुत प्रभावित किया था। चन्दरनगर के डूपले कालेज में अपने अध्यापकों से झगड़ा हो जाने पर वे कलकत्ता अपने पिता के पास आ गए जो बंगाल सरकार के सचिवालय में काम करते थे। देशभक्ति तथा शौर्य की कथा जहां उनकी रुचिकर थी वहां वे लाठी चलाने में अत्यन्त निपुण थे। एक सामान्य बंगाली छात्र की भांति वे शांत और सीधे सादे छात्र नहीं थे। मानो आराम और शांति का जीवन उनके लिए नहीं था। उनकी प्रकृति तथा उनका उद्दंड स्वभाव उनको नित नए साहसिक कार्य के लिए प्रेरित करता रहता था।

उसी समय 'निरालम्ब स्वामी' उपनाम जतीन्द्र नाथ बंद्योपाध्याय अरविंदु घोष के उग्र राष्ट्रवाद के संदेश को लेकर बंगाल में क्रांतिकारी आंदोलन को फैलाने तथा गुप्त क्रांतिकारी संगठन को खड़ा करने आए। रास बिहारी बोस चन्दरनगर के अन्य क्रांतिकारियों के साथ उनसे बहुत अधिक प्रभावित हुए। वे चारुचन्द्र राय के सुहृद सम्मिलन के सदस्य बन गए। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य देश में क्रांतिकारी आंदोलन का प्रसार करना था। उस समय रास बिहारी बोस केवल पन्द्रह वर्ष के थे परन्तु उनके अंतर में क्रांतिकारी विचार गहराई से बैठ गए थे और सशस्त्र क्रांति के द्वारा भारत से अंग्रेजों को निकाल बाहर करने का विचार उनके मस्तिष्क में घूमने लगा था।

इसी उद्देश्य से वे सेना में भर्ती होना चाहते थे। पहले उन्होंने चन्दरनगर में फ्रेंच भारतीय सेना में प्रवेश प्राप्त करने का प्रयत्न किया परन्तु वे असफल रहे। उनको सेना में नहीं लिया गया। उसके उपरान्त उन्होंने कलकत्ता में ब्रिटिश सेना में भर्ती होने का प्रयत्न किया किंतु वहां भी उन्हें नहीं लिया गया। उस समय बंगालियों को सेना में न लेने का नियम था क्योंकि ऐसी मान्यता थी कि बंगाली सेना के लिए उपयुक्त नहीं होते। जब उन्हें वहां सफलता नहीं मिली तो वे घर से भाग खड़े हुए और जयपुर राज्य की सेना में भर्ती होने के लिए चल पड़े। परन्तु मार्ग में उनके पिता के एक मित्र मिल गए वे उन्हें पकड़ कर चन्दरनगर ले आए।

जब रास बिहारी बोस के पिता को शिमला में राजकीय प्रेस में महाराज का

पद मिला और वे कलकत्ता से शिमला गए थे तब रासबिहारी पुन चन्दरनगर आ गए थे। जहा उनके अभिभावक रहते थे। सेना म भर्ती होने म असफल हो जाने पर रास बिहारी बोस ने पढाई छोड दी थी व क्रांतिकारी बन गए थे और क्रांतिकारी आदोलन म सक्रिय भाग लेने के लिए आतुर थे।

जब उनके माता पिता ने देखा कि लडके ने पढना छोड दिया है तो वे निराश हुए परन्तु मा उन्ह लेकर शिमला गई जहा उनके पिता ने उनको राजकीय प्रेस म कापी हाल्डर के स्थान पर नियुक्त करवा दिया। परन्तु वहा भी रास बिहारी अधिक दिनो काम नहीं कर सके। वहा काम करते हुए रासबिहारी का अंग्रेजी भाषा के लिखने तथा बोलने का अच्छा अभ्यास हो गया और उन्होने टकन सीख लिया। प्रेस म कुछ कर्मचारियो ने गडबड की रासबिहारी के पिता को सदेह हो गया कि उस गडबडी म रासबिहारी का हाथ था अस्तु उन्होने रास बिहारी को त्याग पत्र देने के लिए कह दिया। रासबिहारी बोस ने प्रेस की सेवा म त्यागपत्र दे दिया।

उनके पिता ने देहरादून की फोरेस्ट रिसर्च इस्टीट्यूट म रास बिहारी बोस की नियुक्ति करवा दी। देहली लाहौर षडयन्त्र अभियोग के फैसले म उन्ह देहरादून फोरेस्ट रिसर्च इस्टीटयूट क रसायन विभाग के अध्यक्ष सरदार पूर्नसिंह की रसायन शाला म लबरेटरी असिस्टट के पद पर नियुक्त हुए थे।

रासबिहारी बोस १९०६ म देहरादून फोरेस्ट रिसर्च इस्टीटयूट म नियुक्त हुए जबकि वे बाईस वर्ष के थे।

यह हम पहले ही लिख चुके हैं कि जब रास बिहारी बोस पन्द्रह वर्ष के थे और चन्दरनगर मे थे तभी वे निरालम्ब स्वामी (जितेन्द्र नाथ बन्दोपाध्याय) के द्वारा प्रभावित हुए थे और सुहृद सम्मिलन के सदस्य बन गए थे। पन्द्रह वर्ष की अल्प आयु मे ही उन्होने अपना समस्त जीवन मातृभूमि को स्वतन्त्र करने के लिए अर्पित कर दिया था।

देश की राजनीतिक स्थिति

उस समय देश की राजनीतिक स्थिति म परिवर्तन आ रहा था और उग्र राष्ट्रीयता की भावना बलवती हो गई थी। स्वामी विवेकानन्द ने धार्मिक प्रवृत्तियो पर आधारित जिस राष्ट्रवाद का सन्देश दिया था वह देश म गूज रहा था। देशभक्ति तथा सामाजिक सुधारो के विचार जिन्ह राजा राम मोहन राय ने देश को दिया और जिनको विद्या सागर बकिमचन्द्र तथा रवीन्द्र नाथ टगोर आदि ने और अधिक विकसित कर प्रसारित किया देश म फल रहे थे। श्री अरविंद ने इन्दु प्रकाश म 'न्यू लम्प्स फार ओल्ड' (पुरानो के स्थान पर नए दीपक) शीर्षक लेखमाला म राष्ट्रीय महासभा (इडियन नेशनल काग्रेस) जो उस समय नरम दल के नेताओ से प्रभावित थी की नीति की तथा उन नेताओ की ऐसी कटु और तीव्र आलोचना की कि तत्कालीन काग्रेस नेता तिलमिला उठे।

काग्रेस के विषय म लिखते हुए उन्होने लिखा—

'कांग्रेस के बारे मे मुझे यह कहना है इसके उद्देश्य भ्रांत है, तथा उन्हें

चरितार्थ करने म इसकी भावनाओ म सच्चाई, ईमानदारी और पूरा मनोयोग दिख-लाई नही देता । जो साधन इसने अपनाए है व नितान्त अनुपयुक्त हैं और जिन नताओ म इसे आस्था है व नेता बनने यो य व्यक्ति नही हैं । अर्थात इस समय हम अन्धे नतृत्व म चल रहे है-यदि बिल्कुल अन्ध नही तो एक आग वाले नेतृत्व म 'उन्होने काग्रेस की सरकार की भिक्षा मागने की नीति को अमान्य कर दिया । उन्होने पहली बार देश मे सशक्त स्वर म कहा कि 'देश की स्वतन्त्रता रुधिर और अग्नि म पवित्र होकर ही प्राप्त होती है ।'

उनके लखो स काग्रेस क्षत्र मे एसी खलबली और क्षोभ उत्पन्न हुआ कि वे उन लेखो के लखक की तालश म लग गए । परन्तु श्री अरविंद क्योकि बडौदा राज्य की सेवा मे थे इस कारण उन्हान उपनाम म व लिखे थे अस्तु लेखक का पता नही चल सका । तब न्यायमूर्ति महादेव गाविंद रानाड न 'इन्दु प्रकाश" के सम्पादक देशपाडे से कहा "कि यदि व इस प्रकार के लेख छापते रह ता सरकार उनको गिरफ्तार कर लगी ।"

इसी समय श्री अरविंद ने देश की हीन दशा की औषधि शक्ति प्राप्त करने की ओर अपन प्रेरणादायक लख मे देश का नीचे लिख शब्दा म आह्वान किया ।

"यदि हम अपनी ब द आखो को खोले और हमार आसपास पृथ्वी के अ य देशो म जो हो रहा है उस पर दृष्टिपात करें ता जहा भी हमारी दृष्टि जावेगी । तो हम देखेंगे कि हमारी दृष्टि के समक्ष शक्ति का महान और विशाल पु ज खडा है, द्रुति गति से उभरने वाली असीम शक्ति का विस्तार हो रहा है । हमारे चारो ओर विराट रूप न बल और शक्ति का प्रदशन हो रहा है । धूमकेतु के समान शक्ति की विकरालधारा प्रवाहित हो रही है । सब कोई बडा और मजबूत बन रहा है । युद्ध की शक्ति धन की शक्ति, विज्ञान की शक्ति आज पहले की अपेक्षा से दस गुनी अधिक शक्तिशाली और प्रचड हैं । सौ गुनी अधिक भयकर शीघ्रगामी तथा अपने काय मे व्यस्त है, हजार गुनी अपन साधनो अस्त्र शस्त्रो और औजारो म बहुपु ज हैं । इतिहास इस बात का साक्षी है कि मानव समाज मे शक्ति का ऐसा विस्तार और विकास मानव जाति के इतिहास मे कभी नही हुआ था । प्रत्यक स्थान पर माता काय कर रही है । उसके महान शक्ति शाली और निर्माण कारी हाथो म अगणित रूपो के राक्षस असुर और देवता निर्मित होकर इस पृथ्वी रूपी अखाडे मे उतर रह है । हमने पश्चिम म धीमी गति से परन्तु महान शक्तिशाली साम्राज्यो के उदय को देखा । हमने जापान के तीव्र गति से और आरोह्य तथा सतुष्ट न होने वाले नवजीवन को विकसित हाते दखा । कुछ म्लेच्छ शक्तिया हैं जो काली अथवा रक्तवर्ण कपिज रग की होती हैं उनम तमोगुण और रजो गुण की अधिकता होती है । अन्य अन्य शक्तिया है जो त्याग और आत्म बलिदान की अग्नि मे अवगाहन कर शुद्ध होकर निकलती है । पर तु अपनी नई प्रावस्था मे सभी माता हैं जो कि सजन और पुन निर्माण का काय करती है । माता पुराना मे नवीन भावना उडेलती है और वह नयो को जीवन प्रदान करती है ।

किंतु भारत मे श्वास की गति बहुत धीमी है उसके पुननिर्माण मे बहुत दर लग रही है । भारत जो अत्य त प्राचीन माता है वास्तव मे पुन जन्म लने के लिए

प्रयत्नशील है।

वह कष्ट और अश्रुओं के साथ पुनः जन्म लेने का प्रयत्न कर रही है परन्तु उस का प्रयत्न व्यर्थ हो जाता है। उसका रोग क्या है? वह जो इतनी विशाल है और शक्तिशाली हो सकती है उसको कौन-सा रोग लगा रहा है। अवश्य ही हममें कोई बड़ा दोष है। हममें कोई जीवन के लिए आवश्यक तथा मार्मिक वस्तु की कमी है। हममें जो कमी है उसकी खोज निकालना कठिन नहीं है। हमारे पास सब कुछ वस्तुएँ हैं परन्तु हममें शक्ति का अभाव रही है। हम आत्मा हीन हैं। हमने शक्ति का त्याग किया इसलिए शक्ति ने हमें त्याग दिया। माता हमारे हृदयों में, हमारे मस्तिष्कों में और हमारी भुजाओं में नहीं है।

यदि भारत को जीवित रहना है तो उसे पुनः तरुण बनाना होगा। जिस प्रकार प्राचीन काल में जीवन शक्ति की वेगवती धारा भारत में प्रवाहित होती थी उसी प्रकार उसे पुनः जीवन शक्ति को प्राप्त करना होगा। जिस प्रकार समुद्र का जल हिल्लोल कभी प्रशांत और कभी प्रक्षुब्ध होता है उसी प्रकार भारत को अपनी इच्छानुसार कम अथवा शक्ति का समुद्र बनाना होगा। हममें बहुत से तामस निराशा के वशीभूत होने के कारण अकर्मण्यता के भीमकाय वाले दैत्य के प्रभाव में प्रभावित होकर आजकल कहते हैं कि यह असम्भव है। भारत का पतन हो गया है उसमें रुधिर तथा जीवन शक्ति का अभाव है वह इतना अधिक निर्बल हो गया है कि वह अच्छा नहीं हो सकता हमारी जाति का विनाश अवश्यम्भावी है। यह मूर्खतापूर्ण और आलस्य में पड़े हुए अकर्मण्य लोगों का कथन है। कोई भी व्यक्ति या राष्ट्र निर्बल नहीं होता जब तक कि वह स्वयं अपनी भूलों से अपने को निर्बल न बना ले। किसी व्यक्ति अथवा राष्ट्र का विनाश और पतन नहीं होता जब तक कि वह जान बूझ कर उसको आमन्त्रण न करे।

भारत का विनाश अथवा पतन नहीं हो सकता क्योंकि मानव समाज के विभिन्न समूहों में भारत का अत्यन्त भव्य तथा उच्चतम भाग्य सुनिश्चित और नियति द्वारा सुरक्षित है।

श्री अरविंद के ऐसे प्रेरणादायक प्रतिध्वनित होने वाले और आत्मा को झकझोर देने वाले शब्दों ने तरुण रास बिहारी के मस्तिष्क में गहन देशभक्ति की भावना को जागृत कर दिया। श्री अरविंद के शक्ति प्राप्त करने के उद्बोधन ने युवक रास बिहारी बोस को गहन विश्वास और तीव्र भावना वाला क्रांतिकारी बना दिया। मातृभूमि जो दासता की शृंखलाओं में बन्द थी उसे बंधन मुक्त करने के लिए उसको स्वतन्त्र करने के लिए उनके अन्तर में अमिट पिपासा उत्पन्न हो गई। और उन्होंने पन्द्रह वर्ष की अवस्था में ही देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने जीवन को उत्सर्ग करने का व्रत ले लिया। यह तो हम पहले ही लिख चुके हैं कि जितेन्द्रनाथ बन्धोपाध्याय (बनर्जी) जो बाद को निरालम्ब स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए उनको बड़ौदा से श्री अरविंद ने बंगाल में क्रांतिकारी संगठन खड़ा करने के लिए भेजा था। उन्होंने चन्दरनगर में रास बिहारी बोस तथा अन्य युवकों को क्रांतिकारी पथ में दीक्षित किया।

उस समय देश में लार्ड कर्जन द्वारा १६०५ में जो बंगाल का भयंकर दो

भुवा मे बाट दिया गया था। उसमे समस्त देश मे बगाल मे विशेषकर उग्र राष्ट्रवाद फूट पडा था। कांग्रेस मे भी लोकमान्य तिलक लाला लाजपतराय तथा विपिनचन्द्र पाल के नेतृत्व मे उग्र राष्ट्रवाद की भावना बल पकड रही थी। सूरत कांग्रेस अधिवेशन मे कांग्रेस नरम दल और गरम दल मे बट गई। लोकमान्य तिलक ने अग्रेजो से भीख मागने के स्थान पर उग्र राष्ट्रवाद का सदेश दिया। उन्होने कहा 'स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है।'

मुज्जफरपुर बम काड के उपरात सरकार का दमन चक्र चलने के साथ साथ लोकमान्य ने कहा कि सरकार को इन दुर्घटनाओ के मूल कारणो की खोज करनी चाहिए और उनको दूर कर देना चाहिए। ऐसे काड सरकार द्वारा जनमत के विरुद्ध किए गए बग भग के परिणाम हैं अत उनको ही समाप्त कर देना चाहिए। इसी आशय के उन्होने अपने पत्र केसरी मे लेख १ बम गोला का रहस्य, २ ये उपाय टिकाऊ नही, ३ देश का दुर्देव लिखे। सरकार ने उन पर राजद्रोह का अभियोग चलाया और २२ जुलाई १९०८ को उनको ६ वर्ष के निर्वासन (अडमान) का दण्ड दे दिया गया। सारे देश मे इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई।

तो युवक राम बिहारी देश मे जो उग्र राष्ट्रवाद की वेगवती धारा प्रवाहित हो रही थी उसमे अवगाहन कर मातृभूमि को सशस्त्र विद्रोह तथा क्रांति के द्वारा स्वतन्त्र करने के स्वप्न अपने जीवन के प्रारम्भ मे ही देखने लगे थे।

रासबिहारी बोस का उत्तर भारत के क्रांतिकारियो के नेता के रूप मे उदय

यह हम पहले ही कह आए हैं कि युवक रासबिहारी बोस प्रसिद्ध क्रांतिकारी जितेन्द्र मोहन चटर्जी के सम्पर्क मे आए। बगभग के कारण जो उग्र राष्ट्रीयता का विकास हुआ उस समय जितेन्द्र मोहन चटर्जी ने एक गुप्त सस्था बनाई जिसका उद्देश्य अग्रेजो, विशेषकर अग्रेज सैनिको से भारतीयो के साथ अपमान जनक व्यवहार करने उनके प्रति अत्याचार करने के लिए बदला लेना था।

दूसरा अध्याय

रासबिहारी चन्द्रनगर मे

देहरादून मे नियुक्त होने पर आरम्भ मे रासबिहारी बोस टगोर विला मे रहे जो कि प्रफुल्ल नाथ टगार के उद्यान मे बना हुआ विशाल मकान था। उस विशाल उद्यान और कोठी के प्रबधक श्री अतुल चन्द्र बोस ने रासबिहारी बोस को आरम्भ म वहा रहन की सुविधा ही नही दी वरन् आगे भी वे उनकी आर्थिक सहायता करते रहे। जब रासबिहारी बोस टगोर विला को छोडकर अन्यत्र रहने लगे तो भी वे बहुधा वहा आते और अपने युवक मित्रा से विभिन्न विषयो पर चर्चा करते थे। टैगोर विला म एक सौ बीघा भूमि थी उसमे आम और लीची के सघन बाग थे जहा रासबिहारी और उनके तरुण साथी गुप्त वार्ता के लिए अनुकूल स्थान पाकर बहुधा मिलते थे। रासबिहारी बोस ने वहा बम बनाने की भी व्यवस्था की थी। इस काय मे अतुलचन्द्र बोस उस कोठी और बाग के कोष से उनकी आर्थिक सहायता करते थे। बगाल सरकार के गुप्तचर विभाग के रिकाड के अनुसार उस बाग म रासबिहारी बोस अतुल घोष (गुप्तचर विभाग के प्रलेख मे बोस को घोष लिख दिया गया।) टगोर विला के प्रबधक का नाम अतुल बोस था। हरिपद बोस और शलेन बनर्जी प्रतिदिन मिला करत थे। वे आपस मे गहरे मित्र बन गए थे। गुप्तचर विभाग के प्रलेख के अनुसार इलाहाबाद उच्च न्यायालय के प्रसिद्ध वकील कुछ महीने आकर टगोर विला म रहे थे। रासबिहारी तथा उनके मित्र उनस प्रतिदिन मिलते थे।

जितेन्द्र मोहन चटर्जी से सम्पर्क

जितेन्द्र मोहन चटर्जी सहारनपुर के निवासी थे। उन्होने वहा एक गुप्त क्रान्तिकारी समिति स्थापित कर रखी थी जिसका मुख्य उद्देश्य अग्रेज सनिको के मुख्यत स्टेशनो पर दुर्व्यवहार का बदला लेना था। ब्रिटिश शासन का भारत से उखाड फेंकना था। १६०६ म जितेन्द्र मोहन चटर्जी आरा ी बडी वहिन के बड़े लडके के

मे देहरादून आए थे। वे उस विवाह मे सम्मिलित होने के लिए अपने बहनोई श्री पूरन चन्द्र बनर्जी के यहा कुछ दिन टिके। श्री रासबिहारी बोस भी उस विवाह मे सम्मिलित हुए थे। जितेन्द्र मोहन चटर्जी और रासबिहारी मे गहरी आत्मीयता उत्पन्न हो गई जो कि भारत मे क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा उपयोगी सिद्ध हुई।

बगभग के उपरात पजाब तथा उत्तर प्रदेश मे भी क्रांतिकारियो के महत्वपूर्ण केन्द्र स्थापित हो गए थे। इन क्रांतिकारी केन्द्रो को सगठित करने मे बगाल के क्रांतिकारियो ने महत्वपूर्ण भूमिका निबाही थी।

यह हम पहले लिख चुके है कि श्री अरविंद घोष जब बडौदा मे थे तो उन्होंने जतीन्द्रनाथ बन्द्योपाध्याय (बनर्जी) जो बाद को निरालम्ब स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए बगाल मे क्रांतिकारी सगठन स्थापित करने के लिए भेजा था। बाद को उन्होने अपने भाई वारीन्द्र कुमार घोष को भी बगाल मे काय करने के लिए भेजा। दुर्भाग्यवश वारीन्द्र का जतीन्द्रनाथ से गहरा मतभेद हो गया। जतीन्द्र नाथ ने बगाल को छोड दिया। और वे क्रातिकारी भावना का प्रसार करने के लिए निकल पडे।

१९०६ मे जब वे पजाब मे आए तो उन्होने लालचन्द्र फलक, किशन सिह, अमर शहीद (भगत सिह के पिता) डाक्टर हरी चरण मुखर्जी (अम्बाला के) पेशावर के डाक्टर चारू चन्द्र घोष स्यालकोट मे लाला अमर दास इत्यादि को देश को स्वतत्र करने के लिए क्रातिकारी सगठन खडा करने की प्रेरणा दी। बाद को इस क्रांतिकारी सगठन का लाला लाजपत राय सरदार अजीत सिह (अमर शहीद भगत सिह के दादा) सूफी अम्बा प्रसाद तथा लाला हरदयाल से भी सम्बन्ध स्थापित हो गया था।

जब १९०८ मे लाला हरदयाल इग्लैंड से भारत वापस लौटे तो वे इस क्रांतिकारी दल की ओर आकर्षित हुए। उन्होने शीघ्र ही उस दल मे समर्पित और निष्ठावान कार्यकर्त्ताओ को आकर्षित कर लिया उनमे जितेन्द्र मोहन चटर्जी प्रमुख थे। जब लाला हरदयाल पुन इग्लैंड जाने लगे ★ तो उन्होने जितेन्द्र मोहन चटर्जी का देहली स्टेशन पर मास्टर अमीरचन्द से परिचय करवाया और बतलाया कि वे उनके अत्यन्त विश्वस्त पात्र एव सहायक है और उनके इग्लैंड चले जाने के उपरात दल का नेतृत्व करेंगे। अमीरचन्द देहली के अत्यन्त प्रभावशाली क्रांतिकारी नेता थे। उन्होने अपने पासपास अवध विहारी, बनराज, बाल मुकुन्द जसे समर्पित और निष्ठावान क्रांतिकारियो को इकट्ठा कर रक्खा था। जितेन्द्र मोहन कुछ दिनो मास्टर अमीरचन्द के पास रहकर सहारनपुर चले आए और अपने राजनीतिक गुरु लाला हरदयाल के द्वारा उनको बतलाये हुए काय मे जुट गए। लाला हरदयाल के दिए हुए परिचय पत्रो को लेकर उन्होने सम्पर्क बढाया और क्रांतिकारी दल म नए सदस्य भर्ती किए। उन्होने अपने हाथ से लिखकर क्रांतिकारी दल के भावी कार्य का कार्यक्रम बनाया। उन्होने रासबिहारी के पास सदेश-

---

★ लाला लाजपतराय को यह ज्ञात हो गया था कि सरकार ने लाला हरदयाल को गिरफ्तार करने का निश्चय कर लिया है अस्तु उन्होने लाला हरदयाल को भारत से चले जाने का परामश दिया था।

वाहक भेजे कि वे उनका सम्पर्क बगाल के क्रान्तिकारी दला से करवा दें। चन्दरनगर के प्रमुख और अत्यन्त साहसी क्रातिकारी श्रीपचन्द्र घोष का जितेन्द्र मोहन,का परिचय रासबिहारी बोस के माध्यम से ही हुआ था।

श्रीपचन्द्र का जिते द्र मोहन से परिचय हा जाने के उपरात वह कई बार (१६०६–१६१०) सहारनपुर उनसे मिलने आए। वे 'अमीर' के छदम नाम स राम बिहारी बोस (मानिक) को पत्र लिखत थे।

जितेन्द्र मोहन द्वारा हाथ से लिखे हुए पार्टी के कायक्रम की पाडुलिपि पुलिस को सरदार अजीत सिंह के पत्र 'झगसियाल' के कार्यालय म मिल गई। यही नही उन्हें यह भी पता चला कि उसका लेखक कौन है। जसे ही जितेन्द्र मोहन को यह पता चला कि पुलिस को उनकी लिखी हुई दल के कायक्रम की पुस्तिका मिल गई है। उन्होने क्रातिकारी दल के नेतृत्व का भार रासबिहारी बोस को सौंपकर इग्लैंड कानून का अध्ययन करने के लिए जाने का निश्चय कर लिया। उ होने रासबिहारी बोस को सहारनपुर बुलाया उन्हे दल के सम्ब ध म सभी आवश्यक सूचनाए दी और १६१० मे वे इग्लैंड के लिए चल दिए। पुलिस उनका गिरफ्तार करने का प्रयत्न ही करती रही। जब पुलिस जितेन्द्र मोहन का पता लगाने का प्रयत्न कर रही थी तभी सरदार अजीत सिंह तथा सूफी अम्बा प्रसाद की गिरफ्तारी के वारट निकाले गए क्योंकि "झगसियाल' तथा 'स्वराज्य' पत्रो को चलाने वाल वे ही थे। सरदार अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद १६०६ मे ईरान चले गए।

रासबिहारी बोस ने देहरादून मे क्रातिकारियो का दल एकत्रित कर लिया था और वे भावी कायक्रम की रूप रेखा तयार कर रहे थे। जितेन्द्र माहन के इग्लैंड चले जाने के उपरात पजाब के क्रातिकारियो का नेतृत्व भी उनके हाथ म आ गया। अब वे देहरादून म बठकर पजाब और उत्तर प्रदेश के क्रातिकारी आन्दोलन का सचालन करने लगे।

मोतीलाल राय से सम्पर्क

१६११ के आरम्भ मे श्री राम बिहारी बोस अपनी माता के बीमार होने का समाचार पाकर चन्दरनगर गाए। उनके बालपन के अभिन्न और घनिष्ट मित्र श्रीपचन्द्र घोष ने चन्दरनगर के क्रातिकारियो के नेता श्री मोतीलाल राय से उनका परिचय कराया। श्री मोतीलाल राय श्री अरविंदु घोष के परम निष्ठावान अनुयायी थे। जब रासबिहारी बोस श्री मोतीलाल राय से मिल तो वे श्री मोतीलाल राय से बहुत प्रभावित हुए। श्री मोतीलाल राय न रासबिहारी बोस को गीता के आदश 'आत्म समपण' का प्रेरणा दायक सदेश दिया। रासबिहारी बोस उससे इतने प्रभावित हुए कि उन्होने सर्वोच्च लक्ष्य अर्थात् मातृभूमि को स्वाधीन बनाने के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन को पूर्णतया समर्पित कर देने का सत्यनिष्ठा स व्रत ले लिया।

श्री मोतीलाल राय न रासबिहारी बोस द्वारा शपथ लिए जाने की घटना नीचे लिखे शब्दो म वणन किया है।

"मुझे वह दिन याद है कि जब रासबिहारी बोस मेरे क्रातिकारी शिष्य के

सहयोगी श्रीषचन्द्र घोष के साथ मुझसे मिलने आए थे। हम दोनों उस ऐतिहासिक कक्ष में बैठे थे जिसमें कुछ महीने पूर्व श्री अरविंद अपनी फरारी अवस्था में छिपकर रहे थे। ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे अन्तर से प्रेरणादायक शब्द निकले जबकि मैं श्री अरविन्द द्वारा मुझे बतलाए हुए आत्मसमर्पण आध्यात्मिक योग की व्याख्या कर रहा था। ऐसा प्रतीत होता था मानो रासबिहारी गहन मौन के साथ उन शब्दों को पी रहे थे। चर्चा के समाप्त होने पर एकाएक वे ध्यान मग्न हो गए और अत्यन्त उल्लास के साथ उनके मुख से शब्द निकले 'मंगलमय भगवान कार्य कर रहे हैं यह आध्यात्मिक संचालन शक्ति है क्या मोतीलाल ? अब मुझे संसार में अपना शीश तो हथेली पर रखकर विचरण करना होगा मैं सत्यमेव ऐसा ही करूँगा।' इस प्रकार मोतीलाल राय के आत्मसमर्पण की व्याख्या के फलस्वरूप रासबिहारी बोस ने आत्मसमर्पण के पथ को अपना लिया।

उसी बीच में रासबिहारी बोस की माता का स्वर्गवास हो गया और क्योंकि उनका अवकाश समाप्त हो गया था वे वापस देहरादून चले गए। परन्तु इसके पश्चात शीघ्र ही उन्होंने सितम्बर १९११ में लम्बा अवकाश ले लिया और चन्दरनगर वापस आ गए तो रासबिहारी बोस, मोतीलाल राय, श्रीषचन्द्र घोष में और अनुशीलन समिति के श्री प्रतुलचन्द्र गंगाली में क्रांतिकारी दल के कार्यक्रम के सम्बन्ध में लम्बी चर्चाएं होती थी। उसी समय दिसम्बर १९११ में दिल्ली दरबार में सम्राट् ने बंगभंग के समाप्त किए जाने और कलकत्ता के स्थान पर देहली को भारत की राजधानी बनाने की घोषणा कर दी। जब एक ओर श्री मोतीलाल राय, श्रीषचन्द्र घोष तथा रासबिहारी बोस के मध्य तथा दूसरी ओर अनुशीलन समिति के प्रफुल्लचन्द्र गंगाली के मध्य भारत में सशस्त्र विद्रोह की रूप रेखा पर चर्चा तथा वाद-विवाद होता था तभी तत्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की कल्पना ने उन तरुण क्रांतिकारियों के मस्तिष्क में मूर्त-रूप लिया था। वे भारत के वायसराय पर बम फेंक कर यह प्रदर्शित करना चाहते थे कि भारत ब्रिटिश शासन को सहन नहीं कर सकता वह ब्रिटेन की दासता को समाप्त करने पर कटिबद्ध है। अभी तक अंग्रेज शासक संसार में यह ढिंढोरा पीटते थे कि भारतवासी ब्रिटिश शासन से अत्यन्त सन्तुष्ट हैं और वे सम्राट के प्रति आधार और श्रद्धा रखते हैं। सम्राट के प्रतिनिधि पर बम फेंक कर वे संसार को बताना चाहते थे कि भारतीय ब्रिटिश शासन को समाप्त कर उसकी दासता से मुक्त होना चाहते हैं।

श्री मोतीलाल राय के अनुसार भारत के वायसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने का विचार श्री श्रीषचन्द्र घोष के मस्तिष्क की उपज थी। रासबिहारी बोस ने तुरन्त उस क्रांतिकारी विचार को मूर्ति रूप देने का निश्चय कर लिया। इसी विचार से वे अपने साथ देहरादून बसन्त विश्वास को लाए। प्रकट रूप में बसन्त विश्वास रासबिहारी बोस का रसोइया तथा सेवक था परन्तु वे उसको बम फेंकने के लिए बंगाल से देहरादून लाए थे। बसन्त विश्वास तथा मन्मथनाथ विश्वास नदिया जिले के पोरागाछा गांव के निवासी थे और आपस में चचेरे भाई थे। वे 'श्रमजीवी समवाय' को १९०८ में अमरेन्द्रनाथ चटर्जी तथा खिराद गंगाली ने स्थापित किया था। श्रमजीवी समवाय क्रांतिकारी हलचलों का प्रमुख केन्द्र बन गया। इस आर्थिक संस्था पर सभी बंगाल के क्रांतिकारी आते थे। चन्दरनगर के श्री मोतीलाल राय तथा श्रीषचन्द्र घोष

वहा नियमित रूप से जाते थे ।

पोरागाछा स्कूल के हैडमास्टर श्री सिरोद गागुली ने प्रारम्भ मे बसन्त विश्वास और मन्मथ विश्वास को श्रमजीवी समवाय म काम करने के लिए चुना था। परन्तु अमरेन्द्रनाथ चटर्जी ने उन्हें क्रातिकारी काय के लिए श्री मोतीलाल राय को सौंप दिया श्री मोतीलाल राय ने उनका परिचय श्री रासबिहारी बोस से कराया रासबिहारी बोस ने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने के लिए बसन्त विश्वास को चुना।

वे बसन्त विश्वास को अपने साथ देहरादून ले गए उसको वहा क्रातिकारी काय का प्रशिक्षण दिया गया। कई महीनो तक प्रशिक्षण दे चुकने के बाद बसन्त विश्वास को वे लाहौर ले गए और वहां एक डिस्पेन्सरी म नौकर करवा दिया। उस डिस्पेन्सरी का नाम 'पापुलर डिस्पेन्सरी था।'

१३ अक्टूबर, १९१२ को अथवा उसके आसपास रासबिहारी ने अग्रवाल आश्रम के समीप एक कमरे म एक गुप्त गोष्ठी बुलाई। उसम उनके अतिरिक्त अवध बिहारी, दीनानाथ और बाल मुकुन्द उपस्थित थ। उस गुप्त मीटिंग म यह निश्चय किया गया कि वायसराय पर बम फेंका जावे और एक विज्ञप्ति उस काड की प्रशसा करते हुए निकाली जाव। अवध बिहारी, दीनानाथ और बाल मुकुन्द सगठन के शीप नेता नियुक्त किए गए। ★

इसके कुछ दिनो बाद ही रासबिहारी सारी व्यवस्था को देखने तथा तत्सम्बन्धी अन्तिम व्यवस्था करने के लिए चन्दरनगर गए अपनी चन्दरनगर की यात्रा मे रास-बिहारी, अपर सरक्यूलर रोड, कलकत्ता म राजा बजार मे अनुशीलन समिति के केन्द्र के सामने जिसका सचालन श्री अमृतलाल हाजरा करते थे, के सामने एक मेस म श्री नलनी किशोर गुहा से मिले। श्री रासबिहारी बोस ने श्री गुहा से कहा कि वे "स्वाधीन भारत" म एक लेख लिखकर वायसराय के देहली म प्रवेश के सम्बन्ध मे किए जाने वाले प्रदशन की भतसना करे और यह घोषित करें कि यह राष्ट्रीय अपमान है और भारत के हितो के विरुद्ध है। श्री रासबिहारी बोस ने श्री गुहा को इस सम्बन्ध मे एक छोटे से कागज पर टकण की हुई कुछ सूचनाए भी दी जो कि वे अपनी कमीज के मुडे हुए कफ म छिपाए हुए थे। नलनी किशोर गुहा ने रासबिहारी बोस के आदेश के अनुसार लेख लिखकर स्वाधीन भारत म प्रकाशित करवाया यद्यपि उस समय उनको यह नही मालूम था कि वायसराय पर बम फेंकने का षडयन्त्र हो रहा है।

योजना के अनुसार बसन्त विश्वास लाहौर से २१ दिसम्बर, १९१२ को देहली गया और अवध बिहारी भी उसके पीछे देहली की ओर चल पडा, देहली म बसन्त कुमार विश्वास अमीरचन्द के मकान पर ठहरा और ऐसा प्रतीत होता है कि बम काड के समय अवध बिहारी भी लाहौर के बाहर था। २३ दिसम्बर १९१२ को जिस दिन

★ श्री एम हैरीमन अतिरिक्त सशन जज का देहली लाहौर षडयन्त्रो सम्बन्धी फसला ता ५ अक्टूबर, १९१४। दीन नाथ को सरकार क्योकि वह एप्रूवर बन गया था महत्व देना चाहती थी इस कारण जज ने उसको भी सगठन का नेता लिख दिया वास्तव म वह प्रमुख क्रातिकारी नेता नही था।

बम फेंका गया रासबिहारी भी देहली पहुचे। उनका देहली पहुचने का उद्देश्य यह था कि उनके व्यक्तिगत निर्देशन म बम फेंरा जावे।

जितेन्द्र मोहन चटर्जी का बोस से सम्पर्क

१६०६ मे वे अपने भतीजे के विवाह म सम्मिलित होने देहरादून आए और वहा उनका रास बिहारी से सम्पक हुआ। रासबिहारी बोस भी उस विवाह मे सम्मिलित हुए थे। जितेन्द्र मोहन चटर्जी तथा रासबिहारी बोम की मित्रता भारत के क्रातिकारी आदोलन के लिए अमूल्य निधि सिद्ध हुई।

पजाब और उत्तर प्रदेश उस समय सयुक्त प्रात बगाली क्रातिकारी आदोलन के महत्वपूरण केन्द्र थे। पजाब मे क्रातिकारी भावना को तीव्र करने का श्रेय जितेन्द्र मोहन चटर्जी (बाद का वे स्वामी निरालम्ब नाम से प्रसिद्ध हुए) और उनके बाद रासबिहारी बोस को है जितेन्द्र मोहन चटर्जी का बगाली क्रातिकारियो से जब अलगाव हो गया तो १६०६ व पजाब आए। उन्हाने वहा एक क्रातिकारी युवक समूह सगठित किया। और उसने भारत का क्रातिकारी तरीका से स्वतन्त्र करने की भावना जाग्रत की। उस समूह मे लालचन्द फलक, किशन सिंह (सरदार भगतसिंह के पिता) लाला लाजपत राय, सरदार अजीत सिंह तथा डाक्टर हरिचरण, डाक्टर चारूचन्द घोप तथा लाला अमरदास।

१६०८ मे जब लाला हरदयाल इग्लैंड से आए तो स्वभावत वे इस क्रातिकारी युवक दल की ओर आकर्षित हुए और उन्होन इन युवको को नेतृत्व प्रदान किया, उन्होने शीघ्र ही इन युवक क्रातिकारियो को अपने समीप और अपने विश्वास मे ले लिया। जितेन्द्र मोहन चटर्जी उनम प्रमुख थे।

अगस्त, १६०८ म जब लाला हरदयाल पुन योरोप गए तो इस युवक क्रातिकारियो के दल का नेतृत्व स्वभावत जितेन्द्र मोहन चटर्जी के कन्धा पर आया। वास्तव म लाला हरदयाल जब देहली से बम्बई और वहा से योरोप को जा रहे थे तो उन्हाने अमीर चन्द से कहा कि मेरे बाद जितेन्द्र माहन चटर्जी मेरे स्थान पर राष्ट्रीय चेतना जन साधारण म जगाने का काय करेंगे। अमीर चन्द देहली मे एक स्कूल मे अध्यापक थे उन्होन भी अपने आसपास कुछ युवको को राष्ट्रीय काय के लिए जमा कर लिया था जिनमे अवध बिहारी, बलराज और बालमुकन्द प्रमुख थे। जितेन्द्र मोहन चटर्जी ने लाला हरदयाल के परिचय पत्रो का लकर देहली मे अनेक व्यक्तियो से सम्पक स्थापित कर लिया और नए युवक अपने दल मे भर्ती किए। उन्होने अपने दल के लिए एक क्रातिकारी कायक्रम बनाया। उन्हाने देहरादून रासबिहारी बोस के पास सदेशवाहक भेजकर कहलाया कि वे बगाल के क्रातिकारियो से उनका सम्पक स्थापित करायें। रास बिहारी बोस के द्वारा ही उन्हाने चन्दरनगर के प्रसिद्ध क्रातिकारी नता शिरीषचन्द्र घोष से सम्पक स्थापित किया। शिरीषचन्द्र घोप ने उसके उपरात १६०६-१० म कई बार सहारनपुर आकर जितेन्द्र मोहन चटर्जी से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित किया। वे रास बिहारी बोस से उनके छद्म नाम "अमीर" से पत्र-व्यवहार करते थे।

कुछ ही दिनो बाद जितेन्द्र मोहन चटर्जी को पुलिस से बचने के लिए भूमिगत होना पड़ा। बात यह थी कि जितेन्द्र मोहन चटर्जी ने क्रांतिकारी दल का जो क्रांतिकारी कार्यक्रम बनाया था वह एक पुस्तिका में लिखा था। उस पुस्तक की पाडुलिपि उन्होने सरदार अजीत सिंह को भेजी थी। पुलिस को वह पुस्तिका अजीत सिंह की पत्रिका 'झगसयाल' के कार्यालय में तलाशी लेने पर मिली। क्योंकि पुस्तिका स्वयं जितेन्द्र मोहन चटर्जी के द्वारा लिखी हुई थी। पुलिस को उसके लेखक का पता लगाने में कठिनाई नहीं हुई।

"झगसयाल" और "स्वराज्य" पत्र सरदार अजीत सिंह तथा सूफी अम्बा प्रसाद निकालते थे अस्तु उनकी गिरफ्तारी के वारंट निकाले गए। पुलिस जितेन्द्र मोहन चटर्जी को गिरफ्तार करने के लिए आकाश पाताल एक कर रही थी। जितेन्द्र मोहन ने क्रांतिकारी गुप्त दल का भार रास बिहारी बोस को सौंपकर देश से बाहर जाने का निश्चय किया। उन्होने रासबिहारी बोस को सहारनपुर से बुलाया और उन्हें क्रांतिकारी दल सम्बन्धी समस्त जानकारी देकर, वे इंग्लैंड कानून का अध्ययन करने चले गए। (१६१०)

जितेन्द्र मोहन चटर्जी के भारत से चले जाने के बाद रास बिहारी बोस पंजाब तथा उत्तर प्रदेश के क्रांतिकारी दल के नेता बने। और देहरादून का उनका निवास स्थान क्रांतिकारी दल का प्रमुख स्थान बन गया। गुप्तचर विभाग के अधिकारी 'डेनहम" ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि बंगाल और पंजाब के क्रांतिकारी देहरादून में एक दूसरे से मिलते थे।

१६११ के आरम्भ मे रास बिहारी बोस अपनी माता के अस्वस्थ होने का समाचार पाकर चन्दरनगर आए। और उनके मित्र शिरीषचन्द्र घोष ने उनका परिचय चन्दरनगर के क्रांतिकारी दल के नेता श्री मोतीलाल राय से कराया। मोती लाल राय श्री अरविंद घोष के परम भक्त और अनुयायी थे। उन्होने चन्दरनगर मे 'प्रवर्तक संघ' का संगठन किया था। रासबिहारी बोस, मोतीलाल राय के "आत्म समर्पण योग" से बहुत प्रभावित हुए और उन्होने शपथ ले ली कि वे देश को स्वतन्त्र करने के लिए अपना जीवन लगा देंगे।

जब वे चन्दरनगर में ही थे उनकी माता श्री का स्वर्गवास हो गया उनका अवकाश समाप्त हो गया था अस्तु रासबिहारी बोस चन्दरनगर लौट आए। शीघ्र ही रासबिहारी बोस ने लम्बी छुट्टी ली और सितम्बर, १६११ में वे फिर चन्दरनगर लौट आए। जब वे चन्दरनगर मे आए तो स्वाभाविक था कि मोतीलाल राय, शिरीषचन्द्र घोष और रासबिहारी बोस आपस मे मिलकर बात करते। इस अवधि मे उन तीनो की अनुशीलन समिति के अतुल चन्द्र गगोली से चर्चा होती थी इस चर्चा मे तत्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिग पर बम फेंकने के विचार ने जन्म लिया। क्रांतिकारियों का मुख्य उद्देश्य उच्च अंग्रेज अधिकारियों के हृदय मे भय का संचार करना भारत सरकार की नई नीति दमन तथा समझौते की नीति की निरर्थकता को सिद्ध करना तथा ब्रिटिश सरकार के विश्व के देशो मे इस प्रचार को "कि भारतीय ब्रिटेन के शासन को दैवी वरदान मानते हैं" असत्य सिद्ध करना था।

श्री मोतीलाल राय के अनुसार वायसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने का विचार शिरीषचन्द्र घोष के मस्तिष्क की उपज थी। रासबिहारी बोस ने उस विचार को कार्य रूप में परिणित करने का तुरन्त निर्णय कर लिया। इसी उद्देश्य से उन्होंने कलकत्ता से अमरेन्द्रनाथ चटर्जी से बसन्त कुमार विश्वास को जो श्रमजीवी, समवाय, में काम करता था, माँग लिया और उसे अपने साथ देहरादून ले आए। देहरादून में उन्होंने बसन्त कुमार विश्वास को भावी कार्य के लिए प्रशिक्षण दिया।

तीसरा अध्याय

लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया

बग-भग आदोलन के कारण देश म जो उग्र राष्ट्रीयता का विस्फोट हुआ उससे ब्रिटिश सरकार गम्भीर रूप मे चिंतित हो उठी कूटनीतिज्ञो ने सरकार को परामर्श दिया कि इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) अत्यन्त प्राचीन काल से भारत की राजधानी रही है। महाभारत काल से देश इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) को भारत की राजधानी के रूप मे देखता आ रहा है। मुगल काल मे भी भारत की राजधानी होने का उसे गौरव प्राप्त था इस कारण प्रत्येक भारतीय का दिल्ली मे मनोवज्ञानिक और भावना का सम्बन्ध रहा है। कलकत्ता जिसका निर्माण अ ग्रेजो ने किया उसका भारत के जनमानस से कोई सम्बन्ध नही है। अतएव यदि कलकत्ता के स्थान पर दिल्ली को भारत की राजधानी बनाया जावे तो भारतीय जनता पर इसका अनुकूल मनोवैज्ञानिक प्रभाव पडेगा, वह इसका स्वागत करेगी साथ ही भारतीय क्रातिकारियो के मुख्य प्रभाव क्षेत्र बगाल से भी वह दूर हो जावेगी।

इसके अतिरिक्त अ ग्रेज राजनीतिज्ञो की यह भी धारणा थी कि भारतीय सम्राट मे ईश्वर का अ श मानते हैं अस्तु यदि स्वय सम्राट भारत मे आकर दिल्ली को राजधानी बनाने की घोषणा करें साथ ही बगभग को समाप्त कर दें तो भारतीय जन मानस आज जो क्षुब्ध है, शात हो जावेगा और सम्राट भक्ति का प्रबल स्रोत फूट पडेगा जो ब्रिटिश साम्राज्य की जडो को भारत म दृढ करेगा।

योजना के अनुसार १२ दिसम्बर, १६११ को एक विराट दरबार किया गया स्वय सम्राट पाचवें जाज उसम भाग लेने के लिए भारत आए। भारत सरकार ब्रिटिश साम्राज्य की अजेय शक्ति उसके महान वभाव और अतुलनीय राजनीतिक प्रभाव का भारत के जनमानस पर अमिट छाप डालना चाहती थी। अस्तु दरबार का आयोजन ऐसा भव्य और शान शौकत से किया कि मुगल बादशाहो की इतिहास चर्चित शान शौकत भी उसके समक्ष फीकी पड जाव। उस ऐतिहासिक दरबार मे भारत के सम्रा

देशी नरेश अपने राजसी वैभव तथा सम्राट भक्ति का प्रदर्शन करने आए थे। भारत के प्रत्येक भाग तथा विदेशों से लाखों की संख्या में लोग भारतीय परंपरा के उस अद्भुत आयोजन को देखने आए थे।

सम्राट ने इस दरबार में बंग भंग को समाप्त करने तथा दिल्ली को भारत की राजधानी बनाने की घोषणा की। नई दिल्ली का शिलान्यास भी सम्राट के हाथों से ही कराया गया। इस आयोजन से भारत के जन मानस पर अत्यन्त अनुकूल प्रभाव पड़ा। सम्राट के प्रति भारतीयों ने असीम श्रद्धा प्रदर्शित की इस लिए ब्रिटिश सरकार बहुत संतुष्ट हुई। यही कारण था कि जब नई दिल्ली बन कर तैयार हो गई तो भारत सरकार ने राजधानी के रूप में उसके उद्घाटन के समारोह को भी उसी शान शौकत से करने का निश्चय किया।

योजना इस प्रकार थी। कलकत्ता से जब लार्ड हार्डिंग की स्पेशल ट्रेन नई दिल्ली आवे तो भारत के समस्त देशी नरेश तथा उच्च अधिकारी उनका स्वागत करें। स्टेशन खूब सजाया जाय और वहां से वायसराय वायसरीन के साथ सजे हुए हाथी पर बैठ कर दिल्ली में प्रवेश करें। सभी भारतीय नरेश अपने अंगरक्षकों के साथ सम्पूर्ण राजसी वैभव में जुलूस में साथ चलें। सम्पूर्ण दिल्ली सजाया जावे। उस विशाल जुलूस में भारत सरकार तथा देशी राज्यों की सेनाएं अपने बैंड के साथ कूच करें। जुलूस ऐसा शानदार हो कि भारतीय चकित हो जाय। वे ब्रिटिश साम्राज्य की अजेय शक्ति का दर्शन और अनुभव कर सकें। ब्रिटिश सरकार इस अवसर का राजनीतिक उपयोग करना चाहती थी। अंग्रेज भारतीयों के मानस पटल पर यह अंकित करना चाहते थे कि ब्रिटिश शासन भारत के लिए एक वरदान है।

उधर भारत के महान क्रांतिकारी नेता रासबिहारी बोस भारत की राजधानी दिल्ली में ब्रिटिश सत्ता और शक्ति के प्रतीक भारत के गवर्नर जनरल को सेना और उनके अंगरक्षकों की आंख के सामने मार कर ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती देने की योजना बना रहे थे।

लार्ड हार्डिंग की सजी हुई स्पेशल ट्रेन कलकत्ता से वायसराय को लेकर जब दिल्ली पहुंची तो उनका शाही स्वागत हुआ तोपों की गगनभेदी गड़गड़ाहट में लार्ड हार्डिंग एक बहुत ऊंचे हाथी पर जिस पर चार चोटी की बहुमूल्य झूल और सोने चांदी का भारी ठोस नगा जमुती हौदा रखा था, वायसरीन के साथ सवार हुए और वह भव्य और विशाल जुलूस चला। जुलूस के मार्ग पर जितनी भी इमारतें थी दर्शकों से खचा-खच भरी थी। लार्ड हार्डिंग के पीछे बलरामपुर राज्य का जमादार महावीर सिंह सोने के काम का छत्र लिए बैठा था। लार्ड हार्डिंग के पीछे सभी भारतीय नरेश और भारत सरकार के सर्वोच्च अधिकारी थे। आगे सेनाएं चल रही थी और सैनिक बैंड मोहक ध्वनि बजा रहे थे।

जैसे ही जुलूस चांदनी चौक में घंटा घर के आगे बढ़कर पंजाब नेशनल बैंक भवन के सामने पहुंचा कि गगनभेदी भयानक धड़ाका हुआ और एक बम हौदे के पिछले भाग पर आकर फटा। हौदे का पिछला भाग ध्वस्त हो गया, हौदे का पिछला भाग

गया। छत्रधारी महावीर सिंह मर कर रस्सी में पर उलझ जाने से लटक गया। वायसराय के दाहिने कंधे में चार इंच लम्बा ढेढ़ इंच गहरा घाव हो गया। उनको सात आठ और भी घाव लगे। इस घटना का लार्ड हार्डिंग के शब्दों में इस प्रकार है —

'प्रातःकाल अत्यन्त सुहावना था। हाथियों का यह भव्य जुलूस प्राच्य शान शौकत और गरिमा का वैभव शाली चित्र उपस्थित कर रहा था। हम क्वीन्स गार्डन से गुजरे जहां से जनता को हटा दिया गया था। वहां मुझे बिना किसी प्रकट कारण के आने वाली दुर्घटना का आभास हुआ। मैंने अपनी पत्नी से कहा "मैं अपने को अत्यन्त दुखी अनुभव कर रहा हूं। मुझे विश्वास है कि कोई भयानक दुर्घटना घटने वाली है। उन्होंने उत्तर दिया कि इसका कारण केवल मात्र यह है कि आप थक गए हैं और आप सब समारोहों को ना पसंद करते हैं। फिर भी मैं अपने कथन को दुहराता रहा। कुछ ही क्षणों के उपरांत जुलूस चांदनी चौक में घुसा। उस पर खचाखच जन समूह भरा था। मेरा अभूतपूर्व उत्साह से उस जन समूह ने स्वागत किया। तीन सौ गज से आगे नहीं गया होऊंगा कि भयानक विस्फोट हुआ। मेरा हाथी रुक गया। मृत्यु के समय जैसी निस्तब्धता छा गई। मेरा शिरस्त्राण सड़क पर पड़ा था। मैंने अपनी पत्नी की ओर देखा मैंने देख लिया कि वे सकुशल हैं। फिर मैंने मुड़कर हौदे के पीछे देखा जिस पर कुछ पीला पाउडर था तब मैंने कहा कि वह बम था। मेरी पत्नी ने पूछा कि क्या मेरे चोट लगी है। मैंने उत्तर दिया कि मुझे ऐसा लगा कि किसी ने मेरी पीठ पर भयंकर वेग से आघात किया और मुझ पर खौलता हुआ पानी डाल दिया हो। पुलिस के मुख्य अधिकारी ने अपने भाले की नोक पर मेरे शिरस्त्राण को दिया और आज्ञा चाही। मैंने कहा जुलूस को पूर्ववत आगे बढ़ने दो। परन्तु जब मेरी पत्नी ने पीछे देखा तो उन्हें ज्ञात हुआ कि मैं बुरी तरह जख्मी हो गया हूं और जमादार जो मुझ पर राजछत्र लगाए था मर गया है। उसका मृत शरीर हौदे की रस्सियों में उलझा हुआ है। मैंने तुरन्त हाथी को रुकवा दिया और जब उसका मृत शरीर हटाया जा रहा था तो अधिक रक्त बह जाने के कारण मैं संज्ञा शून्य हो गया। जब मुझे होश आया तो मैंने अपने को सड़क के किनारे फर्श पर पाया और मेरी सुश्रुषा हो रही थी। मैंने आज्ञा दी कि सभा का कार्य पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार किया जावे और मैंने अपना लिखित भाषण समारोह में मेरी परिषद में वरिष्ठ सदस्य द्वारा पढ़ा जाने के लिए दे दिया। उसके उपरांत मैं बेहोशी की अवस्था में मोटर में वायसराय भवन ले जाया गया।'

'बाद को मुझे ध्यान आया कि मेरा निजी भारतीय नौकर जो कि उससे पहले दिन मेरे साथ शिकार में था और जिसने खाकी शिकारी वर्दी के ऊपर गहरे लाल रंग की ऊनी वर्दी अपने को शीत से बचाने के लिए पहन रखी थी। वह भी हाथी पर किनी फेंड (वायसरीन) के पीछे खड़ा था बम विस्फोट के उपरांत मैंने उस हाथी पर से खाकी वर्दी में उतरते देखा। वह जुलूस की लाल वर्दी में नहीं था। मैंने उससे कहा कि वह यहां खाकी वर्दी में क्या कर रहा था? बाद को मुझे पता चला कि विस्फोट के कारण उसकी वर्दी तार-तार होकर उड़ गई और उसके शरीर पर चालीस घाव लगे थे। मैंने

जा रहा उसने नही सुना। क्योंकि उसके दोनों कानों के पर्दे फट गए थे। जैसे कि मेरे कान का भी एक पर्दा फट गया था। मेरा कान ठीक हो गया परन्तु वह बेचारा सदा के लिए बहरा हो गया। मैंने उसको दुगनी पेन्शन दिलवाई।'

एक विचित्र बात यह हुई कि विस्फोट इतना भयानक था कि वह ६ मील की दूरी पर भी सुनाई पडा। परन्तु न तो विनी फ्रेंड (वायसरीन) और न मुझे वह सुनाई दिया। मेरा अनुमान है कि हमारी श्रवण शक्ति नष्ट हो गई थी।

"मेरे जख्म बहुत कष्ट दायक थे। उन्हें ठीक होने में बहुत देर लगी। शरीर से बम के कण निकालने के लिए कई छोटे आपरेशन करने पड़े। बमों के कणों के साथ बारीक कीलें ग्रामोफोन की सुइयां आदि निकली।"

इस घटना का लेडी हार्डिंग ने वर्णन करते हुए लिखा है —

"जब हम चांदनी चौक से निकल रहे थे जहां चारों ओर जय-जयकार और तालियों की ध्वनि सुनाई दे रही थी मुझे एक साथ भयंकर धक्का लगा और मैं आगे की ओर गिर गई। जब मैं उठकर अपनी जगह बैठ गई तो मेरी आंखों के सामने अंधेरा सा प्रतीत हुआ और सर में भयंकर झन झनाहट के साथ भयंकर पीडा हुई।"

जब हम पुनः आगे बढ़े तो मैंने सुना कुछ आवाज आ रही थी। "शाबाश बहादुर"

श्री अम्बले डी आई जी पुलिस यू पी ने अपनी गवाही में कहा था "जैसे ही मैंने चांदनी चौक में ईस्ट इंडिया रेलवे बुकिंग आफिस को पार किया मैंने अपने पीछे एक भयानक धडाके की आवाज सुनी। मैं जान गया कि वह बम है परन्तु उसके साथ ही बाड के छज्जे पर से आवाज आई 'शाबाश मारा' वह सराहना तथा हर्ष पूर्ण आवाज थी। मैं समझ गया कि कोई गम्भीर घटना घटी है। मैंने अपने घोडे को पीछे घुमाया तो देखा कि हिज ऐक्सीलैंसी के हौदे की पीठ से धुआं निकल रहा है मैं हाथी के पास गया तो देखा कि छत्र हौदे के पीछे गिरा हुआ था और जमादार का मृत शरीर हौदे के पीछे लटक रहा था। हौदे की पीठ उड गई थी। हिज ऐक्सीलैंसी बेहोश होकर हौदे में गिर गए थे। मैंने हाथी को रुकवाया उन्हें नीचे उतारा।"

क्रांतिकारियों ने इस कांड की प्रशंसा करते हुए एक विज्ञप्ति लाखों की संख्या में वितरित की। उसमें लिखा था कि गीता, वेद, कुरान सब हमें आदेश देते हैं कि मातृभूमि के शत्रु को फिर वह किसी भी जाति, सम्प्रदाय, रंग और धर्म का क्यों न हो मारना हमारा धर्म है। अन्य बड़े या छोटे क्रांतिकारी कार्यों की हम बात नहीं करते परन्तु गत दिसम्बर मास में देहली में जो दैवी शक्ति प्रगट हुई वह इस बात का निस्संदेह प्रमाण है कि भारत के भाग्य को स्वयं भगवान बदल रहे हैं।

लिबर्टी पत्र का प्रकाशन

रासबिहारी ने देश में क्रांतिकारी विचारधारा को फैलाने के लिए लिबर्टी नामक विज्ञप्ति प्रकाशित करना शुरू किया। उसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध देश में घोर असंतोष तथा क्रांतिकारी विचार धारा का प्रचार करना था। अक्टूबर १९१२ में क्रांतिकारी दल की मीटिंग में जिसकी अध्यक्षता रासबिहारी बोस ने

को थी यह निर्णय किया गया कि लिबर्टी नामक नाम रहित विज्ञप्ति प्रजा म प्रकाशित की जावे। मई, १६१३ म उस निर्णय को काय रूप दने के लिए लिबर्टी विज्ञप्ति प्रकाशित की गई। लिबर्टी का प्रकाशन अप्रेल, १६१३ म एक दूसरी क्रांतिकारी दल की मीटिंग म पारित प्रस्ताव के फल स्वरूप हुआ। जिसम अवध बिहारी, बाल मुकुन्द और दीना नाथ थे। उस विज्ञप्ति के लेखक और सम्पादक अवध बिहारी थ पर उस पर नाम किसी का नहीं दिया जाता था। वह छपती कपूरथला म थी और उत्तर भारत म उसका वितरण लाहोर से होता था। लिबर्टी विज्ञप्ति के विचारों तथा भाषा का नमूना नीचे लिखी टिप्पणी म देखिए —

"क्रांति कभी भी मनुष्यों का काय नही रहा। सदव क्रांति भगवान की स्वय की इच्छा से होती है। भगवान उसको करने के लिए अपने औजार (मनुष्य) चुन लेता है। जिन्हे वह महान परिवतन लाने के लिए चुनता है उन्हे भरपूर दवी शक्ति प्रदान कर देता है। उनमें दैवी शक्ति प्रवेश कर जाती है। भगवान ने खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चाकी, कनाईलाल दत्त, मदन लाल धींगरा तथा अन्य क्रांतिकारी शहीद जिनकी पावन स्मृति हमें प्रेरणा देती है, के द्वारा स्वय वे काय किए थे। अत्याचारी ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि पर देहली म बम फेंकने वाला और कोई नहीं स्वय सव शक्तिमान भगवान की दवी शक्ति ही थी।

शहीदो की महान आत्माओ का ऋण जो हमारे ऊपर है उसको हम तभी चुका सकते है जबकि भारत के युवक बहुत बडी सख्या मे उन स्वगवासी शहीदो के योग्य उत्तराधिकारी बनने के लिए आगे आवें।

आज के समय की एक दुर्दान्त क्रांति सबसे बडी आवश्यकता है भाइयो उठ खड़े हो जाये जाओ। छुट-पुट क्रांतिकारी काड जैसा कि अभी देहली में हुआ (वायस राय पर बम फेंकने) अत्याचारियो के हृदय मे भय उत्पन्न कर सकते है परन्तु वे वांछित फल (स्वतन्त्रता) नहीं ला सकते। इस तरह के काम हमारे कार्य में बहुत सहायक होते है परन्तु हम अपने अन्तिम लक्ष्य को नही भूल जाना चाहिए। और उस उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वास्तविक कार्य को करने के लिए समय नही खोना चाहिए। अस्तु हमे उठ खडे होना चाहिए और उस महान क्रांति जो हमारा लक्ष्य है को शीघ्रातिशीघ्र करना चाहिए।

रासबिहारी इस विज्ञप्ति को पढकर बहुत प्रसन्न हुए। अवध बिहारी ने उनके विचारो का शक्तिशाली शब्दो मे प्रकाशन किया था। रासबिहारी ने दीनानाथ को एक पत्र में बधाई भेजी और लिखा कि अब पजाब म वह बडा और महत्वपूर्ण कार्य करना बडे और महत्वपूण काय से रासबिहारी बोस का अथ पंजाब म सशस्त्र विद्रोह से था। चाहिये। जुलाई १६१३ म लिबर्टी विज्ञप्ति की दूसरी सीरीज प्रकाशित हुई और उसम देशवासियो से क्रांति के लिए तैयार हो जाने का आह्वान किया गया।

बम किसने फेंका •

आज तक यह विवाद का विषय बना हुआ है कि वास्तव म बम किसने फेंका। इस सम्बन्ध म तीन नामो की चर्चा की जाती है। (१) स्वय महाविप्लवी

नायक रासबिहारी बोस, (२) बसन्त विश्वास और (३) जारावर सिंह बारहठ।

वास्तव में बम किसने फेंका यह भारत में केवल एक ही व्यक्ति जानता था। वे थे लाला हनुमन्त सहाय परन्तु उन्होंने क्योंकि शपथ ले रखी थी अस्तु वे नहीं बताना चाहते थे कि बम किसने फेंका। उनकी मृत्यु के तीन वर्ष पूर्व जब लेखक ने उनसे इस सम्बन्ध में पूछा तो उन्होंने मुझे लिखित उत्तर दिया "कि मैं इस विवाद में नहीं पड़ना चाहता।" श्री हनुमन्त सहाय को रासबिहारी बोस ने उन लोगों को 'जो कि बम फेंकने में सम्मिलित थे' उन्हें घटना स्थल से सुरक्षित निकाल ले जाने की व्यवस्था करने के लिए रखा था। वे घटना स्थल पर उपस्थित थे।

इस सम्बन्ध में तीनों क्रांतिकारियों के पक्ष में जो प्रमाण मिलते हैं वे नीचे लिखे अनुसार हैं—

रासबिहारी बोस

स्वयं लार्ड हार्डिंग (वायसराय) ने अपनी पुस्तक 'माई इंडियन इअर्स (भारत-वर्ष में मेरे वर्ष) में लिखा है—

जब मैं देहरादून स्टेशन से कार में अपने बंगले में जा रहा था मुझे एक भारतीय अपने मकान के फाटक के सामने खड़ा मिला। उसके साथ कई अन्य व्यक्ति भी खड़े थे। उन सबों ने मुझे अत्यन्त प्रदर्शनकारी ढंग से अभिवादन किया। मेरे यह पूछने पर कि यह कौन लोग हैं मुझे बतलाया गया कि उनमें से प्रमुख भारतीय ने दो दिन पूर्व एक सार्वजनिक सभा की अध्यक्षता की थी जिसमें आपके ऊपर जो आक्रमण हुआ उसकी भर्त्सना की गई थी और आपके प्रति सहानुभूति का प्रस्ताव रखा गया था। बाद को यह प्रमाणित हो गया कि ठीक उसी व्यक्ति ने मेरे ऊपर बम फेंका था।

बात यह थी कि वायसराय बम काण्ड के बाद देहरादून विश्राम करने के लिए देहली से गए थे। दो दिन पूर्व रासबिहारी ने इस काण्ड की निन्दा के लिए एक सार्वजनिक सभा बुलाई थी और स्वयं उसकी अध्यक्षता की थी। बम काण्ड के तुरन्त बाद वे देहरादून पहुंच गए थे।

भाई परमानन्द रासबिहारी के निकटतम सहयोगी और मित्र थे। उन्होंने अपने कई लेखों में वायसराय पर बम फेंकने का श्रेय रासबिहारी बोस को दिया था। श्री मिवीर से उन्होंने स्वयं कहा था कि बम रासबिहारी बोस ने फेंका था।

भारत के गुप्तचर विभाग के निदेशक श्री क्लीवलैंड ने इस सम्बन्ध में ३१ मार्च १९१३ को अपने लम्बे नोट में जो लिखा वह इस प्रकार है—

"अमृतसर के मीरनकोट का मूलसिंह जो गदर पार्टी का नेता था और अब सरकार का मुखबिर बन गया (मूलसिंह को नेता इस लिए लिखा कि सरकारी मुखबिर का वह महत्व बढ़ाना चाहता था) उसने बतलाया कि एक दिन रासबिहारी का अत्यन्त विश्वास प्राप्त सहयोगी पिंगले उसके पास आया उसके साथ एक बंगाली था। उसका जो मूलसिंह ने हुलिया बतलाया वह ठीक रासबिहारी बोस का हुलिया था। मूलसिंह ने उससे बात करते हुए पूछा कि क्या वह जानता है कि देहली में वायसराय पर बम

फिसल फेंका था। उसने उत्तर दिया कि "मैं" बाद में वसुधान्त रामसरनदास ने भी मुझसे यही कहा कि बम फेंकने वाला वही व्यक्ति था। बाद में स्वयं उसने ही मुझसे स्वीकार किया कि बम मैंने फेंका था।

३० जून, १९४२ को स्वयं रासबिहारी बोस ने इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के अध्यक्ष की हैसियत से जो वक्तव्य प्रसारित किया था उसमें उन्होंने कहा था "लगभग तीस वर्ष हुए जब मैंने वायसराय पर बम फेंका था और मैं देहली, लाहौर तथा बनारस षडयंत्रों का सक्रिय सदस्य था। मुझे विदेशी सहायता प्राप्त करने के लिए देश को छोड़ कर विदेश जाना पड़ा।"

[रासबिहारी बसु रासबिहारी बसु स्मारक समिति कलकत्ता पृष्ठ २२२]

टोकियो में जब श्री टी पहलो राम श्री रास बिहारी बोस से मिले थे तो स्वयं श्री बोस ने पहलो राम से कहा था।

'मैंने ही हार्डिंग पर पजाब नेशनल बैंक की इमारत की छत पर से बम फेंका था" (प्रदीप जालधर २२ फरवरी, १९६८)

महाविप्लवी नायक रासबिहारी की एक मात्र जीवित संतान श्रीमती हिगुजी ने टोकियो में श्री कुशवन्त को बतलाया कि मेरे पिता ने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका था।

[फादर थ्यू ए बाम्ब–हिदुस्तान टाइम्स 'न्यू देहली' १६ मार्च, १९६१]

बसन्त विश्वास

भारत में अधिकांश क्रांतिकारियों और विशेषकर बंगाली क्रांतिकारियों का मानना है कि बसन्त कुमार विश्वास ने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका।

कुख्यात माइकेल ओडायर जो उस समय पंजाब का गवरनर था। उसने अपनी पुस्तक "इण्डिया ऐज आई नो इट" में पृष्ठ १६६ पर इस सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है।

"दो बंगाली जो कलकत्ता से बम लाए थे और उन्होंने लाहौर में लारेंस क्लब के पास बम रखा था" जिससे क्लब का चपरासी मारा गया। उन दोनों को फांसी हुई थी। दूसरे बंगाली ने फांसी लगने के कुछ दिन पहले गुप्तचर विभाग के अधिकारियों को बतलाया कि उसने एक मुसलमान स्त्री के वेश में बुर्के के अन्दर चांदनी चौक में पंजाब नेशनल बैंक के सामने खड़े होकर बम फेंका था जिससे वायसराय का छत्रधारी मारा गया और वायसराय जख्मी हो गए। ओडायर ने उन दोनों बंगालियों का नाम नहीं दिया।

लार्ड हार्डिंग पर २३ दिसम्बर, १९१२ को बम फेंका गया था। उससे दो वर्ष उपरांत इस सम्बन्ध में 'डी पटी' अतिरिक्त पुलिस सुपरिटेंडेंट देहली ने ११ नवम्बर १९१४ को सरकार को अपनी रिपोर्ट दी। उस विस्तृत रिपोर्ट के अन्त में उसने लिखा 'बम कांड का वास्तविक सृजनकर्ता बसन्त कुमार विश्वास था और आयोजक कुटिल और प्रमुख षडयंत्रकारी नेता रासबिहारी बोस था।'

लेखक ने इस सम्बन्ध में यथेष्ट जांच पड़ताल की। उसे एक साक्षी और

10439 / 5589

जो वसन्त कुमार विश्वास को बम फेंकने का श्रेय देता है। राजस्थान में उदयपुर जिले मे गटिशा ग्राम के निवासी श्री ईश्वर दान आशिया, रासबिहारी के क्रान्तिकारी दल के सक्रिय सदस्य थे और मास्टर अमीरचन्द के पास रहकर क्रांतिकारी दल का कार्य करते थे। मास्टर अमीर चन्द, रास बिहारी बोस के अत्यन्त विश्वास पात्र थे। उन्होने लेखक को बतलाया कि बम वसन्त कुमार विश्वास ने फेंका था। मास्टर अमीर चन्द रास बिहारी के दाहिने हाथ थे। बम फेंकने की योजना की व्यवस्था उनका महत्वपूर्ण भाग रहा था। और इसी कारण उनको देहली षडयन्त्र मे उनको फासी हुई थी। "रोल आफ आनर" के प्रसिद्ध लेखक श्री काली चरण घोष का भी मानना है कि फासी से पूर्व वसन्त कुमार विश्वास ने कतिपय लोगो को बतलाया कि मुस्लिम महिला के वेश मे उसने ही लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका था। यही कारण है कि बगाल मे अधिकाश क्रातिकारी वसन्त कुमार विश्वास को ही बम फेंकने का श्रेय देते हैं।

जेम्स कम्पबेल केर ने अपनी पुस्तक "पोलीटिकल ट्रबल इन इडिया" पृष्ठ ३३० पर लिखा है कि वसन्त कुमार विश्वास ने मुस्लिम महिला के वेश (बुर्क) म नही देहली के युवक की वस्त्र धारण करके बम फेंका। रासबिहारी बोस उनके पास ही खडे थे।

जोरावर सिंह बारहठ

राजस्थान के लोग जोरावर सिंह बारहठ को बम फेंकने वाले के रूप म जानते हैं। प्रसिद्ध क्रातिकारी ठाकुर केसरी सिंह बारहठ के पुत्र कुवर प्रतापसिंह बारहठ श्री रासबिहारी बोस के अत्यन्त निकट और विश्वास पात्र थे। जब रास बिहारी बोस ने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना बनाई तो उन्होने प्रताप सिंह और जोरावर सिंह को दिल्ली बुला भेजा। कहा जाता है कि रास बिहारी बोस ने जोरावरसिंह को बम फेंकने के लिए चुना था। इस सम्बन्ध मे लेखक को राजस्थान के वरिष्ठ राजनीतिक नेता तथा पत्रकार श्री रामनारायण चौधरी ने नीचे लिखे आशय का पत्र भेजा था।

"हार्डिंग बम केस मे मेरे सहपाठी छोटेलाल जी भी अभियुक्त थे। केशरीसिंह बारहठ के पुत्र भी उस काड मे शरीक थे। उन दोनो ने मुझे बतलाया था कि बम जोरावर सिंह ने डाला था। बोस बाबू रासबिहारी बोस शरीर से इतने भारी थे कि यह फुर्ती का काम उनके वश का नही हो सकता था। बारहाल मेरे पास तो इन दो साथियो के कथन का ही आधार है और उनके लिए मैं यह मान ही नही सकता कि वे असत्य बात कहे।

ठाकुर केशरी सिंह बारहठ की पौत्री श्रीमती राजलक्ष्मी देवी ने लेखक को बतलाया कि १९३६ मे जबकि वे चौदह वर्ष की थी तब फरार अवस्था म जोरावर सिंह ने उन्हे दिल्ली मे चादनी चौक मे वह इमारत दिखलाई थी और बतलाया था कि वहा से बुर्क पहन कर उन्होने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका था।

जोरावर सिंह पकडे नहा जा सके २६ लम्बे वर्षों तक वे मेवाड दक्षिणी राजस्थान तथा मीनाभऊ के पहाडो व जगलो म फरारी अवस्था म छिपे हुए भटकते रहे।

१९१३ में कोटा में उनका स्वर्गवास हुआ । इस कारण जो भी थोड़े से दो चार व्यक्ति इस रहस्य को जानते थे उन्होंने इसको गुप्त रक्खा प्रगट नहीं किया । जब वे फरार थे तब वे अंतिम दिनों में वे सीतामऊ राज्य में अधिक रहे । उस समय श्री मनोहर सिंह जगावत उनके निकट सम्पर्क में आए थे । श्री जगावत ने लेखक को बतलाया कि जोरावर सिंह ने उन्हें बतलाया था कि "लार्ड हार्डिंग जब हाथी पर बैठकर निकले तो स्वयं उन पर मैंने एक ऊंची इमारत से बम फेंका था ।

राजस्थान में प्रतापगढ़ जिले के सरोई ग्राम के रावजी, जगमालसिंह आडावत जो उस समय उन्नीस वर्ष के युवक थे उन्होंने बतलाया कि जोरावर सिंह अपनी अज्ञात अवस्था में उनके पिता के पास आकर रहते थे । कई वर्ष के उपरान्त जबकि उन पर पूरा विश्वास हो गया तो उनके बहुत पूछने पर उन्हें भी श्री जोरावर सिंह ने बतलाया कि बम उन्होंने फेंका था ।

सच बात तो यह है कि यह आज तक निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि बम किसने फेंका था । यही कारण था कि भारत सरकार ने बम कांड के सम्बन्ध में किसी पर भी अभियोग नहीं चलाया । जहां तक कि बम फेंकने की सम्पूर्ण योजना का प्रश्न था वह रासबिहारी बोस के उर्वर मस्तिष्क की उपज थी । रासबिहारी बोस ने ही बम बनाने के विशेषज्ञ मनीन्द्रनायक द्वारा बने हुए बम मंगवाए थे जिन्हें चटर्जी ने बसन्त विश्वास के द्वारा रासबिहारी बोस के पास भेजा था । कौन बम फेंकेगा ? कहां से बम फेंका जावेगा ? बुर्का पहन कर स्त्रियों में मिलकर किस इमारत की छत पर से चांदनी चौक में जुलूस पहुंचने पर बम फेंका जावेगा ? इस बात के भी प्रमाण मिले हैं कि बम सड़क पर से फेंका गया । जो बम सड़क पर से फेंका गया वह कौन फेंकेगा और कहां खड़े होकर फेंकेगा बम फेंककर किस प्रकार निकला जावेगा और साथी कहां-कहां रहेंगे और क्या करेंगे यह सारी योजना रासबिहारी की थी । वे स्वयं भी वहां घटना स्थल पर उपस्थित थे । वे ही बम कांड के वास्तविक स्रष्टा और सूत्रधार थे । जिन लोगों को भी बम फेंकने के लिए चुना उनको बम फेंकने के प्रशिक्षण की भी उन्होंने व्यवस्था की । कहने का तात्पर्य यह कि है बम फेंकने की योजना का प्रत्यक्ष कार्य उनके निर्देशन में हुआ था । अस्तु यदि बंगलाक सम्मेलन में उन्होंने कहा कि आज से तीन वर्ष पूर्व मैंने वायसराय पर बम फेंका था तो यह दावा गलत नहीं था और वे स्वयं तो घटना स्थल पर जहां बम फेंका गया वहां उपस्थित थे ही ।

परन्तु तब तो वे शरीर में बहुत भारी थे अतएव इस फुर्ती के काम को उन्होंने स्वयं किया हो साथ ही वे क्रान्तिकारियों के सर्वमान्य नेता थे और उस समय भारत व्यापी सशस्त्र विद्रोह का वे आयोजन कर रहे थे । ऐसी दशा में एक सर्वोच्च नेता जो देश व्यापी सशस्त्र विद्रोह की तैयारी कर रहा हो स्वयं बम खतरे में डाले इसमें बहुतों को सन्देह है । परन्तु क्योंकि बम कांड का सम्पूर्ण आयोजन यहां, तक कि विचार भी, श्री रासबिहारी बोस का था बम फेंकने का श्रेय उनको दिया जाना चाहिए ।

बसन्त विश्वास इक्कीस वर्ष का युवक था और रासबिहारी बोस का अत्यन्त विश्वास पात्र था। वे उसे श्रमजीवी समवाय से इसी कार्य के लिए लाए थे। देहरादून में उसे बम फेंकने का प्रशिक्षण भी दिया था जब बसन्त विश्वास बम कांड के उपरांत अपने गाव नदिया गया तो रास्ते में कलकत्ता में अमरेन्द्र नाथ चटर्जी के पास श्रमजीवी समवाय में ठहरा। उसने अमरेन्द्रनाथ चटर्जी को बतलाया कि उसने बम सड़क पर से फेंका था।

अमरेन्द्रनाथ चटर्जी ने अपनी बंगला पुस्तक "भारतेर स्वाधीनतार इतिहास में लिखा है" लोगों की यह धारणा गलत है कि बसन्त कुमार विश्वास ने एक स्त्री के वेश में बम एक मकान की छत पर से फेंका था। बसन्त कुमार ने बम सड़क पर से फेंका था। रासबिहारी ने बम नहीं फेंका था। रास बिहारी ने बसन्त के निकल भागने की व्यवस्था की और उसी रात्रि को देहरादून चले गए।

मोतीलाल राय ने लिखा है कि बसन्त कुमार विश्वास ने एक तरुण स्त्री के रूप में लक्ष्मीबाई नाम से चांदनी चौक में एक मकान की छत से बम फेंकने के विचार के उद्भव से अन्त तक उससे सम्बन्धित थे और रासबिहारी बोस के श्रद्धास्पद आदरणीय मित्र थे। सम्भावना इस बात की है कि पहले रास बिहारी बोस ने बसन्त कुमार विश्वास को स्त्री वेश में ही बम फेंकने के लिए तैयार किया हो और यही बात श्री मोतीलाल राय को चन्दरनगर में मालूम थी वहां उन्होंने लिख दी परन्तु देहली आने पर रास बिहारी का विचार बदल गया हो और उन्होंने बसन्त कुमार विश्वास को सड़क पर से और जोरावर सिंह बारहठ को मकान की छत पर से बम फेंकने को कहा हो।

रासबिहारी बोस ने प्रताप सिंह बारहठ तथा उनके चाचा जोरावर सिंह बारहठ को इस समय दिल्ली बुला भेजा था। प्रताप सिंह भी इक्कीस वर्ष के युवक थे और रासबिहारी के अत्यन्त विश्वासपात्र तथा निकट थे। प्रताप सिंह अपने चाचा जोरावर सिंह के साथ रास बिहारी के आदेश पर इस कांड में सम्मिलित हुए थे। प्रताप सिंह कद में ठिगने थे जोरावरसिंह को आरा षडयन्त्र में प्राण दण्ड हो चुका था परन्तु वे फरार थे। लम्बे और बलिष्ठ थे। उनका हाथ सधा हुआ था। सम्भावना इस बात की है कि रासबिहारी ने अन्त समय में दो व्यक्तियों द्वारा बम फेंके जाने का निश्चय किया जिससे यदि एक का निशाना चूक जावे तो दूसरे का निशाना ठीक बैठे। अस्तु उन्होंने प्रताप सिंह बारहठ को बम फेंकने का दायित्व न सौंपकर जोरावर सिंह को यह दायित्व सौंपा और उन्होंने स्त्री वेश में (बुर्का को पहिनकर) मकान की छत से बम फेंका।

गोपनीयता की दृष्टि से सम्भवत रासबिहारी ने बसन्त कुमार विश्वास और प्रतापसिंह और जोरावर सिंह बारहठ को यह नहीं बतलाया कि बसन्त कुमार विश्वास सड़क पर से और जोरावर सिंह बारहठ छत पर से बम फेंकेंगे। दोनों की पृथक टोलियां थीं। दोनों ने ही बम फेंके थे इस कारण दोनों ही स्वयं को बम फेंकने वाला मानते थे। बम कांड के उपरांत बसन्त कुमार विश्वास कभी प्रताप सिंह बारहठ अथवा जोरावर सिंह बारहठ से नहीं मिले उनको प्राण दण्ड हो गया। क्योंकि जोरावर सिंह फरार थे और २६ लम्बे वर्षों तक (मृत्यु तक) गिरफ्तार नहीं हुए वे इस तथ्य को दो चार अत्यन्त घनिष्ट और विश्वसनीय व्यक्तियों को ही बतला सके और वे इस तथ्य को प्रकाशित

नहीं कर सके।

लेखक की मान्यता है कि बम दोनों बसन्त कुमार विश्वास तथा जोरावर सिंह बाहरठ ने फेंका था। लेखक की इस मान्यता की पुष्टि कतिपय अन्य बातों से भी होती है। घटना के लगभग दो वर्षों बाद देहली के अतिरिक्त पुलिस सुपरिटैंडेंट ने बम कांड के सम्बन्ध में जो रिपोर्ट दी थी उसमें लिखा था।

'Before Delhi Bombs, two machines of very Similar type have already been used in India"

अर्थात् देहली के बमों के पूर्व ठीक उसी प्रकार के दो यन्त्र (बम) भारत में उपयोग में लाए जा चुके थे। अतिरिक्त पुलिस सुपरिटैंडेंट डी पटी ने बम न कहकर बाम्बस (Bombs) शब्द लिया है उससे यह पता चलता है कि उनकी भी यह मान्यता थी कि एक से अधिक बम फेंके गए।

फिर इस बात पर भी सब एक मत नहीं है कि बम कहां से फेंका गया। जहां पुलिस की यह मान्यता थी कि बम पंजाब नेशनल बैंक की छत पर से फेंका गया वहां भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के निदेशक के निजी असिस्टेंट 'जेम्स-कम्पबेल केर ने अपनी पुस्तक "पोलीटिकल ट्रबल' इन इंडिया" "Political Trouble in India' पृष्ठ ३२४ पर लिखा है जब कि बम फेंका गया तो हाथी 'धूलिया कटरा' के सामने था। कम्पबल केर ने यह भी लिखा कि बम किस स्थान से फेंका गया इस सम्बन्ध में जो भी गवाहियां थी उनमें उच्चतम अधिकारी थे व परस्पर विरोधी और भ्रमोत्पादक थी। कुछ का कहना था कि बम किसी ऊंचे मकान पर से नहीं सड़क के फुटपाथ से फेंका गया था।

एक विचारणीय विषय इस सम्बन्ध में यह है कि सिगरेट के एक छोटे से टिन बाक्स में बना हुआ एक बम (जिससे किसी को सन्देह न हो) इतना अधिक विध्वंस कर सकता है कि बड़े ठोस भारी हौदे का पीछे का हिस्सा ध्वस्त होकर चकनाचूर हो जावे। जमादार महावीर सिंह जो वायसराय पर छत्र लगाए था मर कर लटक जावे। वायसराय के आठ घाव लगें वे गम्भीर रूप से घायल हो जावें और लेडी हार्डिंग के पीछे खड़े नौकर के चालीस जख्म लगें और उसकी वर्दी के चिथड़े होकर उड़ जावें।

मैजर जे डब्लू टरनर जो बंगाल के गुप्तचर विभाग के विस्फोटक इन्सपेक्टर (Explosive Inspector) थे उन्होंने आठ जनवरी, १९१४ को ठीक उसी प्रकार के बम की जांच करके अपनी रिपोर्ट दी थी। देहली तथा बाद को लाहौर में जो बम बच गए थे। उनमें से एक बचा हुआ बम ३० दिसम्बर १९१३ को भद्रेश्वर थाने पर फेंका गया था। बचे हुए बिना विस्फोट हुए बमों की जांच करके मैजर जे डब्लू टरनर ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है —

बम डब्लू डी एण्ड एच ओ विल्स (W D & H O wills) के टिन के डिब्बे में बनाया गया था जो ३ इंच चौड़ा और ३½ इंच लम्बा था। उसका वजन एक पौंड ११ औंस था। वह सिलेण्डर की शक्ल का था। उसमें ग्यारह औंस विस्फोटक पदार्थ था। अवश्य ही एक छोटे से बम में इतना अधिक विध्वंस होना आश्चर्य

की बात है।

अतएव यह मानने के आधार है कि सचेत पोतदार एक साथ बसन्त कुमार और जोरावर सिंह बारहठ ने बम फेंके। क्योंकि जोरावर सिंह पर वारंट था और वे २६ वर्षों तक पहाड़ और जंगलो में छिपे रहे अस्तु न तो स्वयं वे और न उनके स्नेही जो इस तथ्य को जानते थे इसको प्रकाश में ला सके। रासबिहारी बोस जापान चले गए। बसन्त विश्वास को फांसी हो गई इस कारण बम काण्ड के सम्बन्ध में उन दोनो के नामों का खूब प्रचार हुआ। परन्तु जोरावर सिंह के सम्बन्ध में कोई चर्चा नहीं हो सकी थी।

सन् १९३९ मे जोरावर सिंह बारहठ की मृत्यु हुई उस समय तक इतना लम्बा समय व्यतीत हो चुका था कि लोग उन्हें भूल गए लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने का विवरण इतिहास बन चुका था और जोरावर सिंह बारहठ को लोग भूल चुके थे।

देहली और लाहौर के बम :

विभिन्न स्रोतों से यह पता चलता है कि देहली का बम चन्दरनगर के क्रान्तिकारियो ने जिनके नेता मोतीलाल राय थे रासबिहारी को दिया था। वह बम एक पिकरिक एसिड बम था जैसा कि डलहाजी स्क्वायर तथा मिदनापुर मे क्रमश २ मार्च, १९११ तथा १३ दिसम्बर, १९१३ को फेंके गए थे। उस बम को मनीन्द्रनाथ नायक ने बनाया था। मनीन्द्रनाथ नायक भी चन्दरनगर क्रांतिकारी दल के सदस्य थे। उस प्रकार के बमो की रिपन कालेज (अब सुरेन्द्रनाथ कालेज) के प्रोफेसर सुरेशचन्द्र ने जाच की थी और उसको प्रभावशाली घोषित किया था। श्री नायक ने सुश्री उमा मुकर्जी को बतलाया था कि जैसा बम देहली भेजा गया ठीक वैसा ही एक प्रयोगात्मक बम ८ नवम्बर, १९१२ को (काली पूजा की रात्रि) रासबिहारी के चन्दरनगर के फाटकगोरा मकान के पीछे बांस की झाड़ी में जाच के लिए प्रयोग किया गया था। रासबिहारी की उपस्थिति मे वह प्रयोग हुआ था। बम की शक्ति से सतुष्ट होकर ही रासबिहारी ने उसके देहली काड में उपयोग की स्वीकृति दी थी। लाहौर का बम भी देहली के बम की ही तरह था और देहली और लाहौर षडयन्त्र के अभियोगों को सुनने वाले जज के अनुसार वे बम रासबिहारी द्वारा दिए गए थे।

देहली और लाहौर के बम ठीक एक प्रकार के थे। यह पंजाब सरकार के रासायनिक परीक्षक (केमिकल ऐक्जामिनर) के पत्र से प्रमाणित होता है। जो उसने लाहौर पुलिस सुपरिटेंडेंट को भेजा था।

"लाहौर बम के सम्बन्ध मे लिखते हुए उसने लिखा था कि मुझे यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह बम ठीक उसी प्रकार का है जिस प्रकार का बम महामहिम वायसराय के जीवन को समाप्त करने के लिए दिसम्बर १९१२ मे डाला गया था। उस बम में ठीक वही विस्फोटक तथा अन्य सामग्री काम मे लाई गई थी जो देहली बम मे काम में लाई गई थी। आगे चलकर उसने लाहौर बम को उन बमों के सदृश बतलाया जो कि मिदनापुर तथा मौलवी बाजार में क्रमश दिसम्बर,

१९१२ और माच, १९१३ म डाले गए थे।

चन्द्रनगर के क्रांतिकारी केन्द्र म उस समय मनीन्द्र नायक बम बनाने का कार्य करते थे उन्होने सुश्री उमा मुकर्जी को बतलाया कि देहली बम चन्दरनगर से कलकत्ता श्री नलिन चन्द्र द्वारा ले जाया गया था। श्री सुरेशचन्द्र दत्त द्वारा उसका परीक्षण हो जाने के उपरात बम चन्दरनगर के श्री ज्योतिश सिन्हा द्वारा देहली अथवा अन्य स्थान पर ले जाया गया।

चौथा अध्याय

उधार ली हुई पत्नी

२३ दिसम्बर, १९१२ को ब्रिटिश साम्राज्य की अजेय शक्ति का प्रदर्शन करने और भारतीय जनमानस पर यह प्रभाव डालने के लिए कि ब्रिटिश शासन और शक्ति को संसार में भी शक्ति चुनौती नहीं दे सकती, ब्रिटिश सम्राट का प्रतिनिधि और भारत में ब्रिटिश सत्ता का प्रतीक वायसराय लार्ड हार्डिग जब इतिहास चर्चित मुगल सम्राटों की शान शौकत की नकल कर भव्य जुलूस में देहली में प्रवेश कर रहा था। उसके हाथी के पीछे समस्त भारतीय नरेश और भारत सरकार के सर्वोच्च सैनिक अधिकारी चल रहे थे। आगे-आगे सेनाएं मार्च कर रही थी और सैनिक बैंड मोहक ध्वनि बजा रहे थे तथा लाखों की संख्या में भारतीय तथा विदेशों से आए हुए पर्यटक उस अत्यन्त भव्य और वैभवशाली जुलूस को देख रहे थे उस समय महान क्रांतिकारी नेता रासबिहारी बोस के नेतृत्व में भारतीय क्रांतिकारियों ने उन पर बम फेंक कर ब्रिटिश सत्ता को को चुनौती दी थी। लार्ड हार्डिग मरे नहीं पर क्रांतिकारियों ने उन्हें रुधिर स्नान करा दिया।

वे संज्ञा शून्य होकर हौदे में गिर पड़े, उनके अनेक गहरे घाव लगे, उनका छत्रधारी महावीर सिंह मर कर लटक गया वायसरीन के पीछे खड़े उनके निजी नौकर के चालीस घाव लगे वह सदा के लिए बहरा हो गया। परन्तु बम फेंकने वाला ऐसा लापता हुआ कि सब कुछ प्रयत्न कर लेने पर भी बम फेंकने वाले का गुप्तचर पता न लगा सके।

ब्रिटिश सरकार बौखला उठी। पुलिस ने बम की ओर ध्यान दिया। उसी प्रकार के दो बम इससे पूर्व फेंके जा चुके थे। एक मार्च, १९११ में कलकत्ता के डलहौजी स्क्वायर में और दूसरा देहली बम काड के पन्द्रह दिन पूर्व मिदनापुर में फटा था। देहली बम कांड के पश्चात भी सिलहट के मौलवी बाजार में २७ ३ १९१३ को तथा लाहौर में २७ ५ १९१३ को लाहौर में जो बम फटे थे वे भी ठीक उसी तरह के थे जो लार्ड हार्डिग पर फेंका गया था।

मौलवी बाजार के बम काड के सम्बन्ध म पुलिस ने कलकत्ता के अपर सरक्यूलर रोड (राजा बाजार) के मकान नम्बर २९६-१ के एक कमरे की तलाशी ली। वह कमरा प्रसिद्ध क्रांतिकारी शशाक मोहन, उपनाम शशाक शेखर हजरा उपनाम अमृतलाल हाजरा का था। वहा जो कुछ पत्र आदि मिले उनसे पुलिस को यह पता चला कि अवधबिहारी का उन क्रांतिकारियो से सम्बन्ध था। पुलिस को यह भी पता चल गया कि अवध बिहारी दिल्ली मे मास्टर अमीर चन्द के यहा रहते हैं। अस्तु मास्टर अमीर चन्द के मकान की तलाशी ली गई। उस तलाशी मे "लिबर्टी" क्रांतिकारी पत्रिका, बम की टोपी और कुछ पत्र मिले। उनम कुछ पत्र एम० एस० हस्ताक्षर के थ। पुलिस खोज बीन के पश्चात यह पता लगा लिया गया कि एम० एस० का वास्तविक नाम दीनानाथ था।

पुलिस ने लाहौर मे चार दीनानाथ नाम के व्यक्तियो को गिरफ्तार कर लिया। जाच पडताल के पश्चात अन्य दीनानाथो को छोड दिया गया और उस दीनानाथ को पकड लिया गया जिसका सम्बन्ध क्रांतिकारी दल से था। वह अत्यन्त भीरु और कायर निकला जब पुलिस ने उसके साथ कठोरता का व्यवहार किया तो वह रोने लगा और उसने बतला दिया कि रासबिहारी बोस लाहौर म हैं। यद्यपि वह यह तो नहीं बताना चाहता था कि वह किसी को फँसा परन्तु रासबिहारी बोस सशस्त्र विद्रोह की योजना बना रहे हैं तथा क्रांतिकारियो के सर्वोच्च नेता हैं। यह उसने बतला दिया। साथ ही उसने रास बिहारी बोस के रहने के स्थान की भी पुलिस को सूचना दे दी

जसे ही रासबिहारी बोस को दीनानाथ की गिरफ्तारी का पता चला उन्होंने तुरन्त अपने निवास स्थान को बदल देने का निश्चय कर लिया। परन्तु एक कठिन समस्या उठ खडी हुई। सरकार ने लाहौर म एक राज आज्ञा इस आशय की लागू कर दी कि यदि कोई अकेला बाहरी व्यक्ति (पुरुष) मकान किराये पर लेना चाहे तो पहले स्थानीय पुलिस से आज्ञा प्राप्त कर ले। सपत्नीक व्यक्ति के लिए यह आदेश लागू नहीं होता था। रासबिहारी बोस का उस समय किसी भी क्रांतिकारी के मकान पर जाना निरापद नहीं था क्योकि सभी क्रांतिकारियो के मकानो पर गुप्तचरो की दृष्टि लगी हुई थी। व रासबिहारी की खोज म थे। अस्तु यह निश्चय किया गया कि लाहौर के भीतरी क्षेत्र म जहा सघन बस्ती हो वहा किराए पर मकान लेकर रहा जावे। पर अकेले रासबिहारी को मकान मिल नहीं सकता था उस समय रासबिहारी बोस के क्रांतिकारी साथी पटियाला के रामशरण दास ने प्रस्ताव किया कि मेरी पत्नी सत्यवती रासबिहारी के साथ उनकी पत्नी के रूप मे रहेगी। अस्तु समस्या हल हो गई और रासबिहारी बोस ने पसा अखबार स्ट्रीट के मकान को छोडकर नगर के भीतरी भाग म बच्छोवाली क्षेत्र म बट्टि-यांवाली गली म मकान ले लिया और सत्यवती के साथ वहा चले गए।

पुलिस जब दीनानाथ के बतलाए स्थान पर पहुची तो रासबिहारी बोस उससे पहले ही वहा से हट चुके थे। बहुत कुछ छान बीन करने पर भी पुलिस को यह पता नहीं चल सका कि रासबिहारी बोस कहा चले गये। पुलिस ने रेलवे स्टेशन तथा सभी सडको पर गुप्तचरो तथा पुलिस का एक जाल फला रखा था अस्तु उसको

यह विश्वास था कि रास बिहारी बोस लाहौर से कहीं निकल कर नहीं जा सकते वे लाहौर में कहीं छिपे हैं। बहुत प्रयत्न तथा दौड धूप करने के उपरात पुलिस को यह संकेत मिला कि कच्छोवाली क्षेत्र में कहीं खोज बीन करनी चाहिए।

दिसम्बर का महीना था मगलवार का दिन था और तीसरे पहर का समय था। उसी दिन कट्टियावाली गली में एक नये किरायेदार दम्पत्ति आकर रह थे। वे दोनो आपस म जोर-जोर से चिल्लाकर लड रहे थे। गली म एक दो व्यक्तियो से उनकी बात हुई थी। पुरुष ने अपना नाम फकीर चन्द और स्त्री ने कुती बतलाया था। पुरुष ने बतलाया कि वह दूकान करता है।

कुती फकीर चन्द से चिल्लाकर कह रही थी कि तुम इस चारपाई की मरम्मत करवाओगे या नही मैं तो तुम से कहते-कहते थक गई तुम सुनते ही नही। लगडा फकीरचन्द जो सर पर एक बडा मलमल का साफा बाधे था, उसकी धोती मली ऊची और केवल घुटना तक थी, मली कमीज पर एक पुरानी ऊनी वास्केट पहने था। उसने अपनी पत्नी की बड-बड के उत्तर मे केवल इतना भर कहा "चुप रहो नही तो।"

उसी समय एक पुलिस इस्पेक्टर एक वृद्ध मुस्लिम कास्टेबिल के साथ वहा आ पहुचा। फकीरचन्द ने इसपेक्टर को देखकर कहा 'इस्पेक्टर साहब राम राम यह खाट है कृपा करके बैठिए।'

इस्पेक्टर ने कहा 'धन्यवाद बैठना नही है यह झगडा और शोर किस लिए है।'

फकीर चन्द ने इस्पेक्टर के कान मे धीरे से का 'इस्पेक्टर साहब इसका सिर फिरा है।'

कुती ने भी जो इस्पेक्टर से फकीरचन्द ने कहा सुन लिया और गुस्से मे जोर से चिल्लाकर बोली "अच्छा तो मेरा सिर फिरा है मैं पागल हू गली के पडोसियो इस लगडे की बातें सुन लो। यह निकम्मा जो अपनी दाढी को भी साफ नही करता मुझे पागल कहता है।"

फकीर चन्द ने भी क्रोधित होकर कहा 'अच्छा तू भौंके जा' कुती ने भी क्रोध मे भर कहा 'अच्छा क्या मे कुत्ती हू जो भौंकती हू।'

इस्पेक्टर ने फकीरचन्द से पूछा कि आखिर झगडा किस बात का है।

फकीरचन्द ने उत्तर दिया 'इसने मुझे खाट की मरम्मत कराने को कहा था, आज सभी दूकानें बन्द हैं क्योकि आज मगवार है। मैंने केवल इतना भर कहा था जिस पर इसन आसपास सिर पर उठा लिया है और झगडा खडा कर रक्खा है।'

इस्पेक्टर ने पूछा "तुम यहा कब से रह रहे हो।"

फकीरचन्द न उत्तर दिया 'यह मकान आपका ही है।' यह कहते हुए फकीरचन्द ने खाट पर दरी बिछा दी। इस्पेक्टर खाट के बीच में बैठ गया और कास्टेबिल इस्पेक्टर की पीठ के पीछे बठ गया।

इस्पेक्टर ने पूछा "अच्छा तो तुम एक बात बतलाओ। क्या पिछले दिनो म

कोई बगाली यहा रहने ग्राया ।

फकीर चन्द ने आश्चय से उत्तर दिया 'बगाली हुजूर नही, जहां तक मुझे मालूम है यहा कोई बगाली रहने नही ग्राया। ग्राप बच्छोवाली म पता लगाइए। ग्रापको इस गली के बारे म किसने बतलाया ? क्या वह कट्टियावाली गली मे ग्राया है ।

इस्पेक्टर ने कहा कट्टियावाली गली मे नही वरन बच्छोवाली मे ग्राया है ।

फकीरचन्द ने इस्पेक्टर से पूछा कि क्या ग्राप गरम दूध पीना पसन्द करेंगे ।

इस्पेक्टर ने कहा धन्यवाद नही । फकीरचन्द ने फिर पूछा कि बगाली कब से यहा रह रहा है, उसका नाम क्या है ग्रौर वह किसके पास ठहरा है ।

इस्पेक्टर ने कहा उसके कई नाम है । उसका एक नाम छछूदरनाथ भी है ।

फकीरचन्द बोला—छछूदर नाथ यह तो ग्रजीब और मजेदार नाम है ।

इस्पेक्टर झुझला कर बोला वह बदमाश बहुत चलाक है उसने मुझे बेहद परेशान कर रक्खा है ।

फकीर चन्द ने इस्पेक्टर से पूछा 'कसे परेशान कर रक्खा है ।'

इस्पेक्टर ने ग्रत्यन्त निराश भरे स्वर म कहा 'हम उसका पता जो नही लगा पाते हैं ।"

फकीरचन्द ने सहानुभूति के स्वर मे कहा 'क्षमा करें क्या मैं ग्रापका हाथ देख सकता हू ।'

इस्पेक्टर ने कहा 'इससे मेरा क्या भला होगा' फिर जिज्ञासा के भाव से बोला क्या तुम हाथ देखना जानते हो ?

फकीरचन्द ग्रत्यन्त विनम्रता से बोला 'राम राम मैं ग्रपढ आदमी हू मुझे यह विद्या महात्माग्रो के ग्राशीर्वाद से मिली है जिनकी मैंने सेवा की थी ।

'ग्रच्छा तो देखो' कहकर इस्पक्टर ने अपना बाया हाथ उसके सामने कर दिया फकीर चन्द ने कहा बाया नही सीधा हाथ दिखलाइए ।

ग्रच्छा यह लो सीधा हाथ इस्पेक्टर ने ग्रपना सीधा हाथ फला दिया ।

फकीरचन्द ने ध्यान से हस्तरेखाग्रा को देखा ग्रौर कहा ग्रापकी हस्तरेखाए बहुत स्पष्ट हैं । आपका शुभनाम क्या है ?

इस्पेक्टर ने ग्रपना नाम श्रद्धाराम बतलाया ।

फकीर चन्द बोला ठीक है । क्या ग्रापकी कोई वस्तु खो गई है ।

श्रद्धाराम ने आश्चय से पूछा 'वस्तु'

फकीरचन्द न ग्रपने कथन का सशोधन करते हुए कहा 'वस्तु के अन्दर मनुष्य भी आ जाता है ।

श्रद्धाराम इस्पेक्टर बोला 'हा मेरी एक चीज खो गई है ।'

फकीरचन्द जिज्ञासा के स्वर मे बोला 'वही जिसकी तुम तलाश म हो ।'

'हां' पर यह बतलाग्रो कि क्या मैं उसको पकड पाऊगा । श्रद्धाराम ने बिन्ता व्यक्त की ।

फकीरचन्द बोला 'हां तुम उसे पा जावोगे क्योंकि परसों तक तुम्हें कोई हानि होने का योग नहीं है।

श्रद्धाराम ने पूछा 'परसो के बाद।'

उसी समय फकीर चन्द ने कहा 'ओह मैंने इसकी ओर तो ध्यान ही नहीं दिया था। मेरे विचार में वह तुम्हें ब्रह्म मूहुर्त में मिलेगा। प्रात काल पौने चार से पौने पांच के बीच में उसके मिलने का योग है।

श्रद्धाराम ने फकीर चन्द से पूछा "अच्छा तो वह किस दिन मिलेगा।"

फकीर चन्द ने गम्भीर होकर उत्तर दिया आज कल तो मिलने का कोई प्रश्न ही नहीं परसों अर्थात् बृहस्पतिवार को मिलने का योग है।

श्रद्धाराम ने अत्यन्त विनम्रता से पूछा "क्या तुम कोई ऐसा उपाय बतला सकते हो कि जिससे मैं उसे जल्दी पाजाऊ।

फकीर चन्द ने गम्भीर मुद्रा म कहा "शनि मगल के मार्ग का रोके हुए है। जब शनि मगल के मार्ग से हट जावेगा तभी मगल अपना प्रभाव दिखला सकेगा।

श्रद्धाराम ने पूछा कि क्या शनि को मगल के मार्ग से हटाने का कोई उपाय नहीं है।

फकीर चन्द ने उन्हे सान्तवना देते हुए कहा कि उपाय तो है पर कभी-कभी उसका परिणाम विपरीत हो जाता हैं इस लिए शनि को अपने मार्ग पर चलने देना ही ठीक होगा। परसों वह स्वय मार्ग से हट जावेगा।

श्रद्धाराम ने कहा "अच्छा तो वह मुझे परसों अर्थात् बृहस्पतिवार को प्रात काल पौने चार बजे से पौने पान बजे के मध्य मिलेगा।"

फकीर चन्द बोला "शास्त्र यही कहता है इससे अधिक तो भगवान ही जानता है।"

श्रद्धाराम खाट पर से उठते हुए बोला 'अच्छा तो अब हमे चलना चाहिए।' यह कहकर इंसपेक्टर श्रद्धाराम उठ खड़ा हुआ और वृद्ध कान्स्टेबिल भी उसके पीछे पीछे चला गया।

जब वे दोनों चले गए तो फकीरचन्द कमरे में गया। कुन्ती को अपने पास बुलाकर उससे कुछ गुप्त परामर्श किया और थोड़ी ही देर बाद वे दोनों उस मकान के बाहर निकले। फकीर चन्द के पास एक छोटा लकड़ी का सदूक था और कुन्ती के पास कपड़ा की छोटी-सी गठरी थी। खाट पड़ोसी की थी उसे दे दी और मकान के बाहरी दरवाजे में ताला लगाकर चलते बने।

बुधवार को साय काल आठ बजे पचास पुलिस कान्स्टेबिलों ने कटियावाली गली को चारों ओर से घेर लिया पुलिस सुपरिटेंडेंट गुलाम नबी उस गली में घुसे। उनके आगे दो और पीछे दो कान्स्टेबिल सतर्क होकर चल रहे थे। उनके हाथों म बड़ी-बड़ी टार्चें थी। एकाएक पुलिस दल के आक्रमण से गली के लोग खिडकियो से झांकते थे। परन्तु बाहर कोई भी नही निकला।

सुपरिटेंडट गुलाम नबी ने एक मकान के दरवाजे को थपथपाया। अन्दर से

आवाज आई कौन है ? गुलाब नबी ने कहा 'दरवाजा खोलो।' मकान के अन्दर से आवाज आई किसी ने पूछा कहो क्या काम है। गुलाम नबी ने झुंझला कर कहा 'नाथू भगवन्ता' का मकान कौन सा है।

मकान का दरवाजा खुला और शाल ओढ़े हुए एक प्रौढ़ व्यक्ति ने बाहर निकल कर पूछा "नाथू भगवन्ता का या नाथू सिरपटा का मकान चाहिए।" फिर उसने कहा थोड़ा आगे चले जाइए सातवा मकान नाथू भगवन्ता का है।

गुलाम नबी आगे बढ़ा और सातवें मकान पर पहुंचा यह देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि बाहर से उसके दरवाजे में ताला लगा था। यह देखकर गुलाम नबी ने कहा 'शैतान फिर चकमा देकर निकल गया।"

गुलाम नबी और साथ के चारों कान्स्टेबिल छठे मकान पर गए और उसके वृद्ध मालिक ने बतलाया कि सातवां मकान अधिकतर खाली रहता है। लोगों की मान्यता है कि उसमें भूत रहते हैं। परसों एक प्रेतात्मा पुरुष और एक स्त्री उसमें रहने के लिए आए और दिन भर आपस में लड़ते रहे। रात्रि को जब हम लोग बिस्तरों पर लेट गए थे तो कुछ लोग उनसे मिलने के लिए आए थे शायद वे भी प्रेतात्माएं ही होंगी।

गुलाम नबी ने पूछा कि क्या वे बंगाली थे। वृद्ध पुरुष ने पूछा क्या भूत बंगाली होते हैं। यदि कोई उनसे बात करता तो पता चलता कि वे कौन थे। पर पुरुष का साफा तो पंजाबियों की तरह था। उसकी पत्नी भी पंजाबिन लगती थी क्योंकि वह सलवार और कुर्त्ता पहने थी और वह अपने पति की ठेठ पंजाबी में जोर-जोर से गाली दे रही थी।

गुलाम नबी ने पूछा अच्छा वे गए कहां। वृद्ध बोला 'मैं नहीं जानता" मैंने तो उन्हें केवल गाली देते भर सुना। मेरी पत्नी ने मकान से बाहर निकलने का साहस ही नहीं किया और न बच्चों को बाहर निकलने दिया।

गुलाम नबी ने फिर पूछा—इस मकान का मालिक कौन है ? वृद्ध बोला। यह मकान नाथू भगवन्ता का है जो गली बनवटान में रिसया और बान बेचता है।

गुलाम नबी ने वृद्ध पुरुष से कहा अच्छा अब तुम जा सकते हो वृद्ध पुरुष के चले जाने पर गुलाम नबी ने कान्स्टेबिलों को मकान का ताला तोड़ देने की आज्ञा दी। जब कान्स्टेबिलों ने देखा तो ताला बन्द नहीं था। वह तो केवल लटका भर दिया गया था। दरवाजा खोल कर, दो कान्स्टेबिलों और टार्च लेकर गुलाम नबी मकान में घुसे परन्तु वहां कुछ भी नहीं था मकान खाली था। एक कोने में कुछ कागज़ के टुकड़े थे जिन्हें गुलाम नबी ने सावधानी से अपने बैग में रख लिया।

बाद को पुलिस को ज्ञात हुआ कि प्रसिद्ध महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस फकीरचन्द के नाम से नाथू भगवन्ता के मकान में रहे थे और सरकारी आदेश को व्यर्थ करने के लिए उन्होंने रामशरणदास की पत्नी सत्यवती को अपनी पत्नी (कुत्ती) के रूप में रखा था। श्रद्धाराम इन्सपेक्टर के हाथ को देखकर उन्होंने उसे मूर्ख बनाया था।

पुलिस उनकी खोज निकालने में आकाश पाताल एक कर रही थी। अस्तु रासबिहारी बोस ने लाहौर से निकल जाना ही उचित समझा।

एक सायंकाल को उन्होंने एक अंग्रेज का वेश धारण किया गुप्तचर विभाग का वरिष्ठ सुपरिंटेंडेंट २५ गुप्तचरों के साथ स्टेशन पर उनको खोज रहा था। वे एक प्रथम श्रेणी के कम्पार्टमेंट में बैठे थे। पुलिस सुपरिंटेंडेंट ने उनको देखा परन्तु उनकी वेशभूषा तथा मुखाकृति ऐसी सामान्य थी कि वह यह कल्पना भी न कर सका कि वे ही प्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता रासबिहारी बोस हैं।

बाद को जब यह ज्ञात हुआ कि वे ही श्री रासबिहारी बोस थे तो सुपरिंटेंडेंट लज्जा के कारण एक सप्ताह तक अपने बंगले से बाहर नहीं निकला। परन्तु क्योंकि वह अंग्रेज था सरकार ने उसे कोई दंड नहीं दिया। परन्तु इंस्पेक्टर क्योंकि भारतीय था उसको इंस्पेक्टर के पद से अवनत कर सब इंस्पेक्टर कर दिया गया।

इस प्रकार रासबिहारी बोस लाहौर से निकल गए और पुलिस के उनको पकड़ने के सारे प्रयत्न व्यर्थ हो गए।

10439
5-5-89

पाचवा अध्याय

रासबिहारी बोस की चतुरता

वायसराय लार्ड हार्डिग पर बम फेंके जाने से भारत और ब्रिटेन में मानो भूचाल आ गया। इम्पीरियल लजिस्लेटिव काऊंसिल के एक सदस्य श्री एम ए ग्रीघ तो मानो बौखला उठे उन्होने कहा 'हम इन बिन्दुओ पर तुरन्त विचार करना चाहिए। (१) क्या कुछ उच्च अधिकारी यथेष्ठ और कठोर सतर्कता न लेने के दोषी हैं। (२) क्या कुछ कनिष्ठ अधिकारी तुरंत उस मकान की घेराबन्दी करने मे देरी करने के दोषी है। (३) क्या अन्य कोई व्यक्ति अनियमितताओ जो हुई उनके लिए दोषी है। उन्होने अपने भाषण में कहा कि १९११ में जब सम्राट देहली आए थे तब उनके जुलूस के मार्ग पर प्रत्येक घर मे पुलिस तथा गुप्तचर तैनात किए गए थे। यह बहुत आवश्यक सतर्कता है जो बम्ब अथवा बन्दूक के द्वारा आक्रमण किए जाने के विरुद्ध कारगर हो सकती है। *ऐसा करने से सम्भावित हत्यारो को सुविधा के स्थान पर पहुचने से रोक* सकती है। बहुत समय से हम लोगो को गुप्तचरो (सी आई डी) द्वारा यह रिपोर्ट मिलती रही है कि परिस, जेनेवा और पाडिचेरी तथा अन्य स्थानो में भारतीय क्रांतिकारी षडयन्त्र कर रहे हैं। लार्ड हार्डिग पर बम फेंके जाने की घटना से लगभग एक सप्ताह पूर्व बगाल में बम फेंके जाने की घटना हो चुकी थी। भारत में अराजकता उग्र रूप से विद्यमान है। मैं नही समझता कि स्थानीय अधिकारी दोष रहित है। यदि कोई ऐसी दुर्घटना हो जावे तो क्या करना चाहिए इस सम्बन्ध मे कोई निश्चित आदेश न होने के कारण भी शिथिलता रही। पुलिस जो तुरत कार्यवाही न कर सकी उसमे इस प्रकार की परिस्थिति मे क्या करना चाहिए इस सम्बन्ध में निश्चित आदेशो का न होना भी एक कारण था।

पुलिस सुपरिटडट डी एस हैडी ने अदालत मे शपथ पूर्वक कहा कि यदि बम महामहिम वायसराय के हाथी को चूक जाता तो सम्भवत वह महामहिम वायसराय को मार देता।

फरवरी, १६१३ मे जब पुलिस ने अवध बिहारी के मकान की तलाशी ली तो उसे रासबिहारी का एक बक्स मिला जिसमे रासबिहारी का कुछ सामान था जो वह अवध बिहारी के यहा छोड गए थे। इससे पूर्व अमीरचन्द के मकान की तलाशी मे पुलिस को लिबर्टी परिपत्र एक बम की टोपी तथा कुछ पत्र मिल गए। अवध बिहारी के मकान की तलाशी के बाद पुलिस को पहली बार रासबिहारी का क्रातिकारी कार्यों मे सम्मिलित होने का पता चला। अभी तक वे रासबिहारी पर कोई सदेह नही करते थे। क्रान्तिकारी कार्यों मे सम्मिलित होने का भी उन पर कोई सन्देह नही करता था।

जब रासबिहारी को पता चल गया कि पुलिस को उनके क्रातिकारी दल मे होने का पता चल गया है तो वे बहुत सतर्क और सावधान हो गए। गुप्त रूप से वे चन्दरनगर चले गए। जिससे कि वे पुलिस के हाथो मे पडने से बच सके चन्दरनगर मे रासबिहारी बाबा के परम मित्र तथा क्रातिकारी साथी शिरीशचन्द्र ने उनकी चौकसी का प्रबन्ध किया। ८ मार्च १६१४ को कलकत्ता पुलिस के डेनहम तथा टगार्ट रासबिहारी को गिरफ्तार करने के लिए चन्दरनगर पहुचे परन्तु शिरीशचन्द्र की सावधानी और सतर्कता से रासबिहारी बच गए। पुलिस उनको गिरफ्तार नही कर सकी। यद्यपि जिस स्थान पर पुलिस उनकी खोज रही थी वे उससे दूर नही थे। जब पुलिस उनके निवास स्थान को घेरे हुए उनकी खोज कर रही थी तो रासबिहारी समीप ही दूसरे मकान से पुलिस की गतिविधियो का निरीक्षण कर रहे थे।

एक बार रासबिहारी देहरादून मे श्री ए सी घोष के मकान मे ठहरे। जब रासबिहारी की पुलिस को खोज हुई तो देहरादून के पुलिस सुपरिटेंडेंट ने रासबिहारी का देहली का पता पूछा श्री ए सी घोष ने बताया कि रासबिहारी ने उनके सब पत्रो को बाबू मुन्नालाल, हवेली जुगल किशोर चादनी चौक देहली के पते पर भेजने के लिए उनसे कहा था। पुलिस सुपरिटेंडेंट बटन ने उनको एक पत्र मुन्नालाल को लिखने को कहा। ए सी घोष ने मुन्नालाल को पत्र लिखा परन्तु रासबिहारी का पता नही चला। रास–बिहारी पुलिस से अधिक चतुर थे। वे अपने निवास स्थान को बदलते रहते थे। देहरादून षडयत्र अभियोग मे एक अभियुक्त ने भी पुलिस को बतलाया था कि रासबिहारी का सारा सामान वहा रहता था जिसकी तलाशी ली गई पर रासबिहारी का कही कोई पता नही चला। बटन राम बिहारी के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करना चाहते थे पर-न्तु वे अपने प्रयत्न मे असफल रहे। रासबिहारी बटन से अधिक चतुर थे।

एक बार रासबिहारी १६१४ के प्रारम्भ मे हिमाचल प्रदेश मे गए और एक सन्यासी के भेष मे एक डाकिये के पास केलाग (लाहौल) मे रहे। इस प्रकार वे पुलिस को मूर्ख बनाते रहे पुलिस उनके पीछे थी परन्तु वह उनका पता नही लगा सकी।

जब देहली षडयत्र अभियोग चलाया गया तो पुलिस को रासबिहारी बोस को गिरफ्तार करने की तीव्र इच्छा उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था। परन्तु फारेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट से वे अवकाश पर अपने घर चन्दरनगर गए हुए थे। वे निरन्तर एक स्थान से दूसरे स्थान को प्रस्थान करके पुलिस को मूर्ख बनाते थे। ब्रिटिश सरकार ने चन्दर–

नगर की फ्रासीसी सरकार पर इस बात के लिए दबाव डाला कि वह रास बिहारी बोस को चन्दरनगर से निकल जाने का आदेश दे। चन्दरनगर की फ्रासीसी सरकार ने रासबिहारी बोस को फ्रेंच सीमा से बाहर निकल जाने का आदेश दे दिया। अब रासबिहारी बोस को बगाल मे रह सकना बहुत कठिन हो गया।

समाचार पत्रो मे जब यह समाचार प्रकाशित हुआ और अरविंद ने पढा तो उन्होने पाडीचेरी से श्री मोतीलाल को नीचे लिखा पत्र लिखा।

प्रिय मोतीलाल,

अभी थोडा समय हुआ समाचार पत्रो म यह प्रकाशित हुआ है कि चन्दरनगर प्रशासन ने रासबिहारी बोस के विरुद्ध निवासन के आदेश (वारट) निकाले हैं। यह एक राजनीतिक मामला है। साधारणतया हम राजनीतिक मामलो म नही पडते परतु यह मामला मेरे तथा मेरे मित्रो स सम्बन्ध रखता है। यह हमारी परिस्थिति की सुरक्षा पर आक्रमण है। यदि इसको यो ही बिना कानूनी चुनौती दिए छोड दिया गया तो किसी भी समय हममे से किसी को भी ब्रिटिश पुलिस कोई झूठा दोषारोपण करके निर्वासित करवा सकती है। अतएव मैं तुमसे इस मामले म हस्तक्षेप करने के लिए कह रहा हू यद्यपि यह तुम्हारे योग अभ्यास म बाधा डालेगा। मामला या अभियोग स्पष्टतया राजनतिक है। देहली षडयत्र अभियोग म मुख्य दोषारोपण निम्नलिखित प्रतीत होते हैं – (१) राज्य सरकार के विरुद्ध षडयत्र करना यह राजनीतिक अपराध है। (२) धारा ३०२ के अन्तगत हत्या करने का दोषारोपण जो कि राजनीतिक उद्देश्य से करने का प्रयत्न था। (३) विस्फोटक पदार्थों सम्बन्धी कानून के अन्तगत अपराध वह भी राजनीतिक परिस्थितियो से सम्बन्धित हैं। यह सभी अभियोग एक साथ चलाए गए हैं तथा एक ही अभियोग के अन्तगत हैं। यह एक राजनीतिक षडयन्त्र है जो वतमान सरकार को बदलने अथवा उखाड फेंकना है। फ्रास और इङ्गलैंड की सरकारो के बीच जो निवासन सम्बन्धी सन्धि है यदि किसी बाद की सन्धि से जिसस मैं अवगत नही हू उसके अन्तगत नीचे लिखी अवस्थाओ मे निर्वासन हो सकता है। (१) राजनीतिक अपराध (२) ऐसा अपराध अथवा प्रवृत्ति जिसका स्वरूप राजनीतिक हो। (३) ऐसा दोषारोपण जो साधारण दोषो के लिए लगाया जाता है पर वास्तव म वह राजनीतिक व्यक्तियो को पकडने के लिए उपयोग मे लाया जाता है। कहा जाता है कि रासबिहारी बोस या तो चन्दरनगर मे अथवा पजाब मे कही छिपे है। अस्तु यदि उनकी ओर से कोई हमको कानूनी चुनौती दे तो वह या तो उनका कोई सम्बन्धी हो या मित्र हो। सम्बन्धी हो तो अधिक अच्छा है। तुम्हे जो करना है वह यह है कि एस व्यक्ति का पता लगावो जो रासबिहारी बोस की ओर से अभियोग चलाने का अधिकारी हो, फ्रास और इङ्गलैंड के मध्य हुई आधुनिकतम सन्धि को पढो और जसा कि मैंने ऊपर लिखा है यदि वह वैसी ही हो तो अभियोग को किसी फ्रासीसी वकील के सुपुर्द कर दो जो फ्रेंच अदालत मे अभियोग चलावे। मेरे विचार से उसे फ्रास की सरकार को फ्रास मे आवेदन देना पडेगा। यदि यह सम्भव न हो तो पेरिस म उच्चतम न्यायालय म उसे जाना होगा। जो यत्न व्ययसाध्य होगा। यदि आवश्यक हो तो पहले पाडीचेरी म उच्चतम कानूनी अभिकर्ता को अपील की जावे। उसके उपरात उच्च न्यायालय जाया जावे

इन बिन्दुओं पर बोस के प्रतिनिधि को किसी फ्रेंच वकील से परामर्श करना होगा। यदि फ्रेंच सरकार उसे ब्रिटिश सरकार को देती है तो सावरकर के सम्बन्ध में हेग की अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय का फैसला हमारे मार्ग में बाधक होगा और स्थिति को निराशाजनक बना देगा। फ्रांस की सरकार फिर भी इस आधार पर कि बोस फ्रांस की प्रजा है, न्यायालय में अभियोग चला सकती है।

परन्तु यह शक्तिशाली कूटनीतिक दबाव का उपयोग करके ही अपने इस प्रयत्न में सफल हो सकती है जो कि फ्रांस की वर्तमान सरकार पसन्द नहीं करेगी। जो भी हो फ्रांस के उच्चतम न्यायालय से इस सम्बन्ध में डिगरी ले लेना उचित होगा जिससे इस प्रकार के मामलों में क्या नीति अपनाई जावे इस सम्बन्ध में सिद्धांत निश्चित हो जावें। परन्तु इन राजनीतिक मामलों में सदैव यह जोखिम तो रहती ही है क्योंकि उनमें न्याय तथा कानून की अधिकतर अवहेलना की जाती है कि हमारे विरुद्ध फैसला हो और उससे जो स्थिति आज है उससे भी बुरी स्थिति हो जावे। यह उचित होगा कि यह मालूम कर लिया जावे कि चारुचन्द्रराय के मामले में किस आधार पर क्या किया गया था और क्या इस मामले में उन्हें आधार बनाया जा सकता है यदि तुम वारंट में दोषारोपण के तथ्य क्या हैं यदि उनको लिख भेजो तो मैं फ्रांस को एक पत्र लिखवा दूं जिससे 'जारेस' या अन्य कोई इस मामले को चला सके। 'काली'

जब रासबिहारी बोस चन्दरनगर देहरादून लौटे तो उन्हें ज्ञात हुआ कि जितेन्द्र मोहन चटर्जी इङ्गलैंड से वापस लौट आए हैं। रासबिहारी बोस अत्यन्त दुस्साहसी थे वे ऐसी भयंकर और विपरीत परिस्थिति में जबकि पुलिस उनकी खोज में आकाश पाताल एक कर रही थी चटर्जी से मिलने सहारनपुर पहुंचे। और एक सप्ताह तक उनके पास ठहरे। क्योंकि रासबिहारी बोस दूर चले जाना चाहते थे। उनके मित्र चटर्जी ने कुछ रुपया उनके लिए एकत्रित किया। चटर्जी ने रासबिहारी बोस को बतलाया कि उनका चित्र जिसमें वे अपनी साइकिल पर एक हाथ रख कर खड़े हैं स्टेशन पर लगा है। उनका यह चित्र स्टेशन पर इस लिए लगाया गया है कि यदि कोई उनको देखे तो पहचान ले और पुलिस को सूचना दे दे जिसके लिए भारी पारितोषिक की घोषणा की गई थी। रासबिहारी को यह दैवी गुण प्राप्त था कि चाहे कितनी ही भयंकर विपत्ति का सामना करना पड़े वे कभी घबराते नहीं थे और न मानसिक सतुलन ही खोते थे। शांति या युद्ध दोनों में उनका मस्तिष्क समान रूप से बिना प्रभावित हुए सामान्य रूप से काम करता था। यह भी सही है कि वे अनेक भेष धारण करते थे और जिस प्रकार का भेष धारण करते थे उसके अनुरूप ही भाषा बोलते थे। यही कारण था कि कई बार वे पुलिस अधिकारियों को मूर्ख बनाकर निकल गए। यह सुनकर कि उनका चित्र स्टेशन पर लगाया गया है उन्होंने इच्छा प्रगट की कि वे देखेंगे कि उस चित्र में वे कैसे लगते हैं। यह बहुत बड़े जोखिम का काम था परन्तु रासबिहारी बोस ने एक काबुली पठान का वेष धारण किया और चटर्जी को साथ लेकर रेलवे स्टेशन अपने उस चित्र को देखने गए।

एक सप्ताह के उपरांत एक सायंकाल रासबिहारी बोस सहारनपुर से चुपके से निकल गए। उसके कुछ दिनों बाद एक गुप्तचर सी० आई० डी० इन्स्पेक्टर चटर्जी के

पास यह जाने के लिए आया कि क्या रासबिहारी यहां सहारनपुर आए थे। यह सुन कर चटर्जी ने इस जोर से अट्टहास किया कि सी आई डी इन्सपेक्टर के मुख की क्रांति धूमिल हो गई। वह लज्जित होकर चला गया।

एक बार जब वे बनारस (वाराणसी) में थे, वे कुछ बमों का परीक्षण कर रहे थे। शचीन सान्याल भी उनके साथ थे वे दोनों उन बमों का परीक्षण दशाश्वमेध घाट पर डाक्टर प्रसन्न सान्याल के मकान में कर रहे थे। अनायास ही एक बम हिलने के कारण विस्फोट हो गया। बम के विस्फोट होने से रासबिहारी बोस बुरी तरह से टांग में घायल हो गये शचीन सान्याल के भी थोड़ी चोट आई। पर बम के विस्फोट की जो भयंकर आवाज हुई वह दूर तक सुनाई दी। रासबिहारी ने तुरन्त निर्णय किया कि अब वहां रहना निरापद नहीं है क्योंकि वहां रहने वाले इसकी चर्चा आपस में करेंगे और पुलिस तक यह सूचना पहुंच जावेगी अस्तु उन्होंने वहां से हट जाने का तुरन्त निर्णय कर लिया। रासबिहारी ने अपने साथियों से कहा कि उन्हें अर्थी बनाकर शव की भांति चार आदमियों के कंधों पर ले जाया जाय। उनके आदेश के अनुसार उनको शव की भांति अर्थी पर चार व्यक्तियों के कंधों पर रामनाम सत्य है का उच्चारण करते हुए हरिश्चन्द्र घाट पर ले जाया गया। डाक्टर काली प्रसन्न सान्याल ने उनके भोजन आदि की व्यवस्था की और उनकी पुत्री उपागिनी देवी ने रासबिहारी बोस की सुश्रूषा की।

एक बार सितम्बर १९१३ में जब रासबिहारी बोस कलकत्ता में अनुशीलन समिति के मेस में जहां नलनी किशोर गुहा तथा अन्य मित्रों के साथ रहते थे प्रतुल चन्द गंगोली के साथ रासबिहारी ढाका से लाए गए रिवाल्वरों का परीक्षण कर रहे थे जिन्हें वीरेन चटर्जी लाए थे। अकस्मात एक रिवाल्वर को असावधानी से पकड़ने के कारण उसका घोड़ा दब गया और रिवाल्वर की गोली रासबिहारी के बायें हाथ की तीसरी अंगुली को घायल करके निकल गई। उन्होंने तुरन्त वहां से हट जाने का निर्णय लिया। अंगुली से रुधिर बह रहा था। उसकी परवाह न कर अंगुली को एक चादर में लपेट कर और अत्यन्त कुशलतापूर्वक एक वृद्ध दूकानदार का भेष धारण कर वे वहां से निकले। उनको उस भेष में कोई पहचान नहीं सकता था। वे वेश भूषा धारण करने में सिद्धहस्त थे। वे वहां से प्रतुलचन्द्र गंगोली के साथ राजाबाजार गए और वहां डाक्टर से पट्टी कराकर अपर सरक्यूलर रोड के एक मकान में चले गए। रात्रि को वे उस मकान में भी नहीं रहे और रात्रि को चन्दरनगर को वहां से प्रस्थान कर गए। जब उनके यह घाव ठीक हो गए तो रासबिहारी पैरों में मोजे तथा हाथों में दस्ताने पहिनने लग गए थे। जब सरकार ने उनके पकड़ाने वाले को बहुत बड़े पारितोषिक देने की घोषणा की और तत्सम्बन्धी विज्ञापन निकाला तो इन जख्मों के निशानों का उसमें उल्लेख था। यह रहस्य ही बना रहा कि पुलिस को उन घावों के निशानों का पता कैसे चला। यहां यह बता देना आवश्यक है कि यह रिवाल्वर हैड कान्स्टेबिल हरिपद देव को मारने के लिए लाए गए थे। बाद को २९ सितम्बर १९१३ को हरिपद देव को प्रतुल चन्द्र गंगोली ने कालेज स्क्वायर में रवीन्द्रनाथ सेन तथा निर्मल कुमार राय की सहायता से मार दिया।

एक बार चन्दरनगर में पुलिस को सन्देह हो गया कि रास बिहारी बोस एक मकान में हैं। उन्होंने उस मकान की कड़ी घेराबन्दी कर ली रासबिहारी उस मकान से बे उनका उस मकान से निकल जाना असम्भव था। पर उन्होंने अपने मस्तिष्क का सन्तुलन नहीं खोया। उन्होंने पुलिस की घेराबन्दी से निकल जाने की युक्ति सोच निकाली। उन्होंने एक मेहतर (टट्टी साफ करने वाले) का भेष धारण किया। एक मैले कपड़े से नाक और मुंह पर ढाटा बांध लिया मैले और फटे कपड़े पहिनकर मल को एक ढोल में भर लिया और उस मल से भर ढोल को सर पर रखकर मकान से बाहर निकले। पुलिस को कल्पना भी नहीं थी कि रास बिहारी मल को सर पर रखकर जा रहे हैं। इस प्रकार वे पुलिस को मूर्ख बनाकर साफ निकल गए। जब पुलिस ने मकान की तलाशी ली तो रासबिहारी वहां नहीं थे।

जब रासबिहारी बोस पी एन ठाकुर के नाम से भारत से जापान को जाने के लिए प्रयत्नशील थे उन्हें आज्ञा पत्र लेने के लिए अनेक राजकीय कार्यालयों में जाना पड़ा। पर वे वेश भूषा धारण करने में सिद्ध हस्त थे। इस कारण कोई सन्देह भी नहीं कर सका कि पी एन ठाकुर के वेश में महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस है।

यह हम पहले ही देख चुके हैं कि लाहौर में जब रासबिहारी ने लगड़े दुकानदार फकीर चन्द का वेश धारण कर और अपने क्रांतिकारी सहयोगी रामसरनदास की पत्नी सत्यवती को कुन्ती के नाम से अपनी पत्नी के रूप में रखकर पुलिस इन्सपेक्टर श्रद्धाराम को किस प्रकार मूर्ख बनाया और लौहार से निकलने के लिए किस प्रकार अंग्रेजी वेश भूषा धारण कर पहले दर्जे में सफर कर किस प्रकार अंग्रेजी वरिष्ठ पुलिस सुपरिटेन्डेन्ट को धोखा दिया।

रासबिहारी बोस केवल भेष बदलने में ही सिद्धहस्त नहीं थे वे कई भाषाएं तथा बोलियां बोल सकते थे और एक सतर्कता वे अवश्य बरतते थे कि वे प्रत्येक दिन अपने सोने के स्थान को बदल लेते थे तथा किसी भी मकान में दो चार दिनों से अधिक नहीं रहते थे। यही कारण था कि वे पुलिस के हाथ नहीं आए। वे सदैव पुलिस को छकाते रहे।

एक बार जब राम बिहारी बोस चन्दरनगर में थे और अपने मित्र के मकान में रह रहे थे तो पुलिस को सन्देह हो गया कि वे अमुक मकान में हैं पुलिस ने उस मकान को चारों ओर से घेर लिया। परन्तु रासबिहारी विचलित नहीं हुए। मकान में पाखाना साफ करने के लिए मेहतर आया हुआ था। उन्होंने उस मेहतर के कपड़े ले लिए उन्हें पहिनकर वे मल की भरी उसकी बाल्टी लेकर बेधड़क पुलिस को मूर्ख बनाकर मकान से निकल गए। कई बार वे पुलिस को मूर्ख बना चुके थे। वे जिस तरह के कपड़े पहिनते थे उसी प्रकार की भाषा बोलते थे। उनकी मुखाकृति भी उसी प्रकार की रहती थी इस कारण कोई सदेह नहीं करता था। उनमें किसी भी मनुष्य के पहिनावे तथा बोल चाल की नकल कर लेने की आश्चर्यजनक क्षमता थी। इस कारण वे पुलिस को कई बार मूर्ख बना चुके थे। और उसके सामने से बचकर निकल जाने में सफल हुए थे। वे जिस प्रकार के मनुष्य का वेश धारण करते थे उसी के अनुरूप मुखाकृति बना लेते थे।

करने तथा उसी के समान भाषा बोलने में दक्ष थे। यही कारण था कि कई बार वे पुलिस को मूर्ख बनाने में सफल हुए थे।

रासबिहारी बोस का गिरफ्तार होने से चमत्कारी ढंग से बचना

रासबिहारी बोस के क्रांतिकारी राजनैतिक जीवन की एक विशेषता है कि ब्रिटिश सरकार ने सारे प्रयत्न कर लिए परन्तु उनको गिरफ्तार नहीं कर सकी। अंग्रेज सरकार जितना रासबिहारी बोस के पीछे पड़ी थी उतना किसी भारतीय क्रांतिकारी राजनीतिज्ञ के पीछे नहीं पड़ी परन्तु वह सदैव असफल रही। अनेक अवसर आए जबकि रासबिहारी बोस पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए जा सकते थे परन्तु प्रभु कृपा और अपनी चमत्कारी चतुराई से वे बाल-बाल बच गए और पुलिस को निराश होना पड़ा ब्रिटिश सरकार के निष्ठुर साधन व्यर्थ हो गए। उनका गिरफ्तार होने से बचना साधारण व्यक्ति के लिए अद्भुत पहेली लगती है। यहां कुछ ऐसी घटनाओं का वर्णन करेंगे।

रासबिहारी बोस स्थिति का ऐसा सही अध्ययन कर लेते थे कि मानो वे भविष्य में क्या होने जा रहा है उसे देख रहे हों। यही नहीं वे मनुष्य के विलक्षण पारखी थे वे किसी मनुष्य के द्वारा कभी भी गलत कदम उठाने के लिए तैयार नहीं किए जा सकते थे। आध्यात्मिक दृष्टि से वे गीता के निष्काम कर्म में अटूट विश्वास करते थे। उन्होंने मातृभूमि को अंग्रेजों से स्वतंत्र करने के लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया था। वह यह मानते थे कि वे अंग्रेजों को भारत से निकालने का जो कार्य कर रहे हैं वह ईश्वरीय कार्य है। वे अनेक बार गम्भीर अत्यन्त जटिल और भयंकर विपत्तियों से बाल बाल बच गए उसको देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उन पर दैवी कृपा थी।

फरवरी १९१४ में जबकि पुलिस देहली में क्रांतिकारियों की अत्यन्त परिश्रम के साथ तलाशी ले रही थी जिसके परिणाम स्वरूप मास्टर अमीर चन्द तथा अवध बिहारी गिरफ्तार हो गए थे तथा रासबिहारी बोस का कुछ सामान भी उन्हें मिला था उस समय रासबिहारी बोस लाहौर में निश्चित होकर रह रहे थे। देहली में क्रांतिकारियों की धर पकड़ के सम्बन्ध में उन्हें कुछ भी ज्ञात नहीं था। परन्तु जब उन्हें डी ए वी कालेज के छात्र से जो बोर्डिंग में रहता था सायंकाल को ज्ञात हुआ कि दीनानाथ को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया तो दूरदर्शी रासबिहारी बोस ने देख लिया कि भविष्य में क्या होने वाला है और उन्होंने उसी रात्रि को वह स्थान छोड़ दिया। दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही लाहौर की पुलिस ने उनके निवास स्थान को घेर लिया परन्तु पक्षी पहले ही स्थान को छोड़ चुका था।

रासबिहारी लाहौर से देहली सुरक्षा पाने की दृष्टि से आए परन्तु जब वे अमीर चन्द के मकान की ओर जा रहे थे तो उनका नौकर उन्हें मिला और उसने उन्हें बतलाया कि उसके स्वामी गिरफ्तार कर लिए गए तो उन्होंने तुरन्त चन्दर-नगर जाने का निश्चय कर लिया और देहली छोड़ दिया। पुलिस को पुनः निराश होना पड़ा।

बंगाल की पुलिस को यह समाचार मिला कि रासबिहारी चन्दरनगर में अपने मकान में छिपे हुए हैं। उन्होंने अपने शिकार को पकड़ने के लिए उनके मकान को

घर लिया। यह घटना ८ मार्च, १९१४ की थी परन्तु रासबिहारी ने मकान में छिप रह कर भी फिर पुलिस को मूर्ख बनाया और पुलिस के हाथ नहीं आए। पुलिस की इस असफलता से पुलिस तथा शासन के उच्च अधिकारियों ने यह अनुमान लगाया कि वे चन्दरनगर में नहीं हैं और वे चन्दरनगर से पंजाब की ओर चले गए हैं। अस्तु पंजाब पुलिस ने ९ मार्च, १९१४ को पांच हजार रुपये के पारितोषिक की घोषणा की कि जो व्यक्ति उनका सही पता बतलाएगा जिससे वे गिरफ्तार किए जा सकें उसे पांच हजार रुपये का पारितोषिक दिया जावेगा। उसके साथ रासबिहारी बोस का हुलिया भी दिया गया था। जो इस प्रकार है:—

रास बिहारी बोस लम्बे और डील डौल के भारी हैं, उनकी आंखें बड़ी हैं, अभी हाल में उन्होंने अपनी मूंछ मुंडा ली है उनके एक हाथ की तीसरी अंगुली सख्त है और उस पर चोट का चिन्ह है जो तीस वर्ष की आयु पर दुर्घटना के कारण चोट लगी थी वह कभी पंजाबी की भांति और कभी बंगाली की भांति वेश भूषा धारण करते हैं। वे सम्भवतः एक संन्यासी के वेश में फिर रहे हैं। वे बहुधा रावलपिंडी, मुल्तान, अम्बाला, शिमला, अमृतसर, गुरदासपुर, फिरोजपुर, झेलम और लाहौर जाते रहते हैं। वे बंगाली वाली बस्तियां, बंगाली उपनिवेशों और हिंदू शिवालयों में भी जाते हैं। उन्हें रेलवे स्टेशनों और सरायों में अच्छी तरह और सावधानी के साथ ढूंढना चाहिए। भारत की सभी स्टीमर कम्पनियों को भी भारत सरकार ने सूचना दे दी थी कि इस हुलिया के आदमी को गिरफ्तार कराने में सरकार की सहायता करें उनके फोटो सभी रेलवे स्टेशनों पर लगा दिए गए थे जिससे पुलिस को उनको पकड़ने में सुविधा हो। इतनी चौकसी रखने पर भी रासबिहारी अप्रैल १९१४ में बनारस सही सलामत पहुंच गए और वहां वे अपने क्रांतिकारी कार्य को करते रहे। बनारस षडयन्त्र के न्यायधीशों को यह आश्चर्यजनक लगा कि रासबिहारी १९१४ में लगभग पूरे वर्ष बनारस में रहे और पुलिस को पता नहीं चला।

रासबिहारी किसी भी व्यक्ति के स्वाभाविक तथा प्राकृतिक परिवेश की नकल ऐसे अच्छे ढंग से कर सकते थे कि किसी भी व्यक्ति को संदेह नहीं होता था। वे नकली नाम से नकली वेश भूषा में कभी भी और कहीं भी जा सकते थे। इस कार्य में वे इतने अधिक सिद्ध हस्त थे कि उन पर कभी भी किसी का सन्देह नहीं हुआ। लाहौर षडयन्त्र में जो क्रांतिकारी कार्य हुआ उसमें रासबिहारी लम्बे समय तक लाहौर रहे। वे वहां क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं में विभिन्न नामों से जाने जाते थे। उन्हें कोई तो मोटे बंगाली नाम से जानता था तो कोई सतीन्द्र चन्द्र चुकन्दर नाथ दत्त कोई उन्हें सतीशचन्द्र के नाम से जानता था। उन्होंने लाहौर के क्रांतिकारियों को कभी अपना सही नाम नहीं बतलाया। रासबिहारी हिन्दी, उर्दू, पंजाबी और अंग्रेजी भाषाओं को अच्छी तरह जानते थे। जब लाहौर षडयन्त्र असफल हो गया (१९ फरवरी, १९१५) रासबिहारी कुछ दिनों तक लाहौर में ही रहे।

उस समय लाहौर में प्रांत के सभी सैनिक तथा प्रशासन के उच्च अधिकारी मौजूद थे लाहौर में रहना बहुत खतरनाक था परन्तु रास बिहारी बोस को उनके शत्रु नहीं पकड़ सके उन्हें यह भी पता नहीं लग सका कि रासबिहारी लाहौर में हैं, लाहौर में

उन्होने तय किया कि वे काबुल मुस्लिम वेश मे जावें इस लिए उन्होने मौलवियों से कलमा पढ़ना भी सीखना शुरू कर दिया। परन्तु एकाएक उन्हे आने वाले खतरे का भान हो गया और वे तुरन्त एक पंजाबी जो कि भारी साफा सर पर बांध था के वेष में बनारस चल दिए। दूसरे दिन जब कि वे बनारस चल दिए उनके घर को पुलिस ने घेर लिया और तलाशी ली।

बनारस में रासबिहारी ने अपने शत्रुओं से बचाने की एक नई युक्ति निकाली, वे स्त्री का वेष धारण करने लगे। श्री विश्वेश्वर गोस्वामी ने जो रास बिहारी के बनारस मे घनिष्ट और निकट सहयोगी थे उन्होने डाक्टर उमा मुखर्जी को बतलाया कि दो अवसरों पर एक तो विभूती भूषण हल्दार और दूसरी बार विश्वेसर गोस्वामी के मकान में जब पुलिस ने उन मकानों का घेर लिया था तो रासबिहारी एक स्त्री का वेश धारण कर सरलता से पुलिस की घराव दो से निकल गए।

एक बार रासबिहारी चन्दरनगर में थे और एक पुलिस गुप्तचर जो उनकी खोज में थे, उनको रासबिहारी ने एक ज्योतिषी ब्राह्मण बनकर ऐसा मूर्ख बनाया कि उन्होने बडी श्रद्धा से उन्हें प्रणाम किया और वे रासबिहारी को गिरफ्तार करने में सफल होंगे यह जानने के लिए अपना हाथ उनके सामने कर दिया और उनको साष्टांग प्रणाम किया उस गुप्तचर को यह नही मालूम हो सका कि वे ही रासबिहारी बोस है।

जब रासबिहारी बोस जापान जाने के लिए तयारी कर रहे थे तो उन्होंने पी एन टगोर नाम रक्खा और उसी प्रकार की वेश भूषा बनाई तथा वे कलकत्ता के पुलिस कमिश्नर के पास परिचय पत्र प्राप्त करने के लिए गए। पहले उनके लिए सकिंड क्लास (दूसरे दर्जे) का टिकिट खरीदा गया था। परन्तु अन्त समय पर रासबिहारी ने दूसरे दर्जे में जाने का विचार बदल दिया क्योंकि दूसरे दर्जे के यात्रियों की तलाशी और पूछताछ बहुत होती थी और पहले दर्जे का टिकट लिया। हांगकांग से जो कोई भारतीय जाना चाहता था। उसे वहां के पुलिस सुपरिटैंडेंट से आज्ञा पत्र (परमिट) लेना पडता था। वह भी रासबिहारी बोस ने प्रेम नाथ टगोर के नाम से प्राप्त कर लिया।

कहने का तात्पर्य यह है कि रासबिहारी बोस अनेक बार पुलिस के निकट सम्पर्क मे आए यहां तक कि पुलिस ने उन्हे घेर तक लिया परन्तु वे पुलिस की पकड मे नही आए। वे इसे अपनी चतुराई मानने का अहंकार नही करते थे वरन् दवी कृपा मानते थे। वे कहा करते थे कि वे भारत को अंग्रेजों की दासता से स्वतन्त्र करने का दवी कार्य कर रहे हैं अस्तु यह दवी कृपा है कि वे पुलिस के चंगुल से बच जाते है।

अध्याय छठा

बम का सन्देह

वायसराय पर बम फेंके जाने के बाद रासबिहारी दिल्ली से निकल गए और देहरादून को चल दिए। देहरादून मे उन्होंने "फारेस्टरिसर्च इस्टीटयूट" (वन शोध सस्थान) के कर्मचारियो की एक सभा बुलाई और उसमे अपने भाषण म वायसराय पर बम फेंके जाने की कड़ी निंदा की। उन्होंने देहरादून नगर म भी सभायें की और उनम भी उन्होंने बम काड की जोरदार शब्दो म निन्दा की। यह सब उन्होंने पुलिस तथा गुप्तचरो को मूर्ख बनाने के लिए किया था और वे अपने इस प्रयत्न म अत्यन्त सफल हुए।

इस सम्बन्ध म स्वय लार्ड हार्डिंग ने अपनी पुस्तक "माई इडियन इअर्स १९१० १९१६" (भारत म मेरे वर्ष १९१० १६) मे जो कुछ लिखा वह रासबिहारी के इस पक्ष पर अच्छा प्रकाश डालता है। लार्ड हार्डिंग ने लिखा ।

"देहरादून म स्टेशन से कार म अपने ठहरने के स्थान को जाते समय मुझे एक भारतीय जो अपने मकान के सामने फाटक पर कई अन्य व्यक्तियो के साथ खड़ा हुआ था मिला। मैं उसके सामने से निकला। उन सभी ने अत्यन्त प्रदर्शनकारी ढंग से मुझे झुककर नमस्कार किया। मेरे पूछने पर मुझे बतलाया गया कि दो दिन पूर्व उसी से प्रधान भारतीय ने देहरादून म एक सार्वजनिक सभा की अध्यक्षता की थी। उस सभा मे मेरे जीवन को समाप्त करने के लिए मुझ पर आक्रमण करने के प्रयत्न के विरोध म तथा मेरे प्रति शोक का प्रस्ताव रक्खा और उसे पारित कराया था। बाद मे यह प्रमाणित हो गया कि उसी भारतीय ने मुझ पर बम फेंका था। पृष्ठ [illegible]

रासबिहारी द्वारा सरकार के पक्ष म खुलकर भाषण देने तथा सरकार के [illegible] का समर्थन करने से उन्हें उत्तर प्रदेश (उस समय सयुक्त प्रांत [illegible]) [illegible] पजाब म पुलिस अधिकारियो का विश्वास प्राप्त हो गया था। [illegible] श्री सुशील चन्द्र घोष ने उनसे घनिष्ठ मित्रता स्थापित कर ली थी [illegible]

कारियों विशेषकर श्रीपच द्र घोष के सम्ब ध म उनसे जानकारी प्राप्त करना चाहते थे जो कि एक राजनीतिक सदेहास्पद व्यक्ति थे तथा रासबिहारी के सम्बन्धी और चन्दर नगर के निवासी थ। परन्तु रासबिहारी उनसे अधिक चतुर थे। वे उनके घनिष्ठ परिचय का लाभ अपने क्रातिकारी कार्यों के लिए उठना चाहत थ। उन्होंने यह नाटक ऐसी सफलता से खेला कि देहरादून के बगाली पुलिस गुप्तचर अधिकारी ने उनके सम्बन्ध म यह रिपोर्ट दी —

"कि बगाली समुदाय म देहरादून म यह सामान्य धारणा है कि रासबिहारी बोस पुलिस के गुप्तचर है जो गुप्तचर अधिकारियों (सी आई डी अफसरों) को समाचार देत है।"

इस जीवट तथा जोखिम के खेल मे रासबिहारी न पुलिस और गुप्तचर विभाग को बुरी तरह परास्त कर दिया।

देहली और लाहौर षडयत्र के अभियोग को सुनने वाले न्यायाधीशों ने भी रासबिहारी द्वारा पुलिस और गुप्तचर विभाग को मूर्ख बनाए जाने की पुष्टि की है। उन्होंने लिखा "रासबिहारी जसी आम धारणा है उसस कही अधिक चतुर थ। तथा उन्होंने पुलिस से अपने सम्पर्क और सम्ब ध का उपयोग षडयन्त्रों को सफल बनाने मे किया।"

उस समय रासबिहारी ने पुलिस तथा गुप्तचर अधिकारियों पर अपने सम्बन्ध मे ऐसी अनुकूल छाप डाल दी थी कि जब बम काड के उपरात लार्ड हार्डिंग देहरादून मे विश्राम करने तथा स्वास्थ्य सुधार के लिए सर्किट हाऊस म ठहरे थे तो देहरादून के प्रमुख नागरिकों तथा कतिपय पुलिस अधिकारियों को भी वायसराय के शिविर म जाने का प्रवेश पत्र नही दिया गया परन्तु रासबिहारी को वहा जाने का पुलिस ने प्रवेश पत्र दिया था।

रासबिहारी की ही प्रेरणा से दूसरा बम काड १७ मई, १९१३ का लाहौर म हुआ। उस बम काड का लक्ष्य सिलहट के एस डी ओ गार्डन को मारना था। गार्डन ने ही १९१२ मे स्वामी दयानन्द (आर्य समाज के सस्थापक नही) के जगतसी आश्रम पर आक्रमण किए जाने की आज्ञा दी थी। उस आक्रमण मे महेन्द्र नाथ दे हबीब गज नेशनल स्कूल के भूतपूर्व मुख्य अध्यापक मारे गये थे।

सरकार ने इस भय से कि क्रातिकारी एस डी ओ गार्डन के विरुद्ध प्रतिशोध की कार्यवाही करेंगे उसका स्थानान्तर सुदूर पूर्व असम स भारत क पश्चिमी प्रान्त पजाब म कर दिया था। उस समय वह लाहौर म नियुक्त था। बात यह थी कि गार्डन पर २७ मार्च, १९१३ को मौलवी बाजार सिलहट म आक्रमण हो चुका था। उस काड मे भी ठीक देहली बम जसे ही बम का प्रयोग हुआ था। गार्डन पर जो मौलवी बाजार म आक्रमण हुआ था उसम जोगेन्द्र चक्रवर्ती की बम विस्फोट स मृत्यु हो गई। उस दल म अमिता सरकार, लाल मोहन दे, तारा प्रसन्न बाल और जोगेन चक्रवर्ती सम्मिलित थ। अमिता सरकार तथा तारा प्रसन्न बाल बम विस्फोट से घायल हो गए थे।

लाहौर में रासबिहारी की प्रेरणा से जो बम कांड हुआ और जिसका लक्ष्य गाडन को मारना था उस षडयन्त्र की योजना बनाने वाले अवध बिहारी थे और बम फेंकने का काम बसन्त विश्वास ने किया था। दोनो ही रासबिहारी के विश्वसनीय कार्य कर्त्ता थे। घटना के दो तीन दिन पूर्व अवधबिहारी को रासबिहारी द्वारा एक पत्र मिला जो कि दीनानाथ का लिखा गया था। उस पत्र में गाडन को मार देने के सम्बन्ध में विस्तृत निर्देश थे। अवध बिहारी ने योजना तैयार कर ली। जब कि लारेंस गाडन में गाडन जो उस समय असिस्टेंट कमिश्नर पंजाब था अन्य योरोपियनों के साथ वार में बैठा था तब अवध बिहारी और बसन्त विश्वास वहां गुप्त रूप से बम लेकर पहुंचे। परन्तु अन्तिम क्षण में बसन्त विश्वास का गार्डन पर बम फेंकने का साहस नहीं हुआ। उसने गाडन पर बम फेंकने के बजाय उसे लाइब्रेरी रोड पर रख दिया। क्लब का चपरासी जो कि अपने घर जा रहा था। उसकी उस बम से मृत्यु हो गई।

देहली बम कांड के सम्बन्ध में पुलिस को कोई भी गवाही नहीं मिल सकी। परन्तु कलकत्ता के राजाबाजार में उस प्रेस की तलाशी लेने पर जहां लिबर्टी छपा था पुलिस को अवध बिहारी के नाम का पता चला। पुलिस ने यह भी पता लगा लिया कि अवध बिहारी मास्टर अमीर चन्द के यहां रहते हैं। पुलिस ने मास्टर अमीरचन्द के मकान की तलाशी ली। उस तलाशी में लिबर्टी क्रांतिकारी परिपत्र एक बम की टोपी और कुछ पत्र मिले। उन पत्रों में कुछ एम एस के हस्ताक्षरयुक्त पत्र थे। पुलिस ने कई दिन खोज करने के उपरांत यह पता लगा लिया कि एम एस का वास्तविक नाम दीना नाथ है। अस्तु अमीर चन्द, उनके दत्तक पुत्र सुलतान चन्द्र तथा दीनानाथ गिरफ्तार कर लिए गए। दीनानाथ तथा सुलतान चन्द मुखबिर हो गए। परन्तु वे भी वायसराय पर बम फेंके जाने के सम्बन्ध में कुछ न बतला सके।

सरकार ने १३ व्यक्तियों पर अभियोग चलाया अभियोग अवध बिहारी, अमीर चन्द, भाई बालमुकुन्द, बलराज, हनुवन्त सहाय, मन्नालाल, चरनदास, रघुबर शर्मा खुशी राम और रामलाल उपनाम छोटेलाल के विरुद्ध चला। रास बिहारी फरार हो गए थे। दीनानाथ और सुलतान चन्द सरकारी गवाह बन गये अतएव उन्हें क्षमा प्रदान कर दी गई। पुलिस ने लाला हरदयाल, अर्जुन लाल सेठी और हरीराम सेठी को भी षडयन्त्र में सम्मिलित घोषित किया था। लाला हरदयाल, उस समय अमेरिका में थे अर्जुनलाल सेठी तथा हरीराम सेठी को इस लिए गिरफ्तार नहीं किया गया क्योंकि उन दोनों के विरुद्ध यथेष्ट साक्षी नहीं थी।

सेशन जज की अदालत में सात महीने तक अभियोग चला। ५ अक्टूबर, १९१४ को जज ने अवध बिहारी, मास्टर अमीरचन्द्र तथा भाई बालमुकुन्द को फांसी का दण्ड दिया। बलराज, लाला हनुवन्त सहाय और बसन्त कुमार विश्वास को आजन्म कालापानी और शेष को मुक्त कर दिया। लाहौर चीफ कोर्ट में अपील में अवध बिहारी, मास्टर अमीर चन्द, भाई बालमुकुन्द और बसन्त विश्वास को फांसी चरनदास को आजन्म कालापानी तथा बलराज और हनुवन्त सहाय को सात-सात साल के कारा

वास का दण्ड दिया।

वायसराय पर बम फेंकने की कोई साक्षी नही मिली परन्तु फिर भी चार को फांसी का दण्ड दे दिया गया।

अमेरिका मे लाला हरदयाल का भाषण

ससार ने यह समाचार अत्य त आश्चय और कौतूहल से सुना कि देहली में वायसराय पर बम फेंका गया। अभी तक ससार मे ब्रिटिश प्रचार के फलस्वरूप यह धारण बन गई थी कि भारतीय ब्रिटिश शासन अत्यन्त सतुष्ट और सुखी हैं वे उसे दवी वरदान मानते हैं और ब्रिटिश शासन की छत्र छाया म ही रहना पसन्द करते हैं। वायसराय पर बम फेंके जाने से विश्व मे यह भ्रम दूर हो गया और ब्रिटिश प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगा।

जब यह खबर अमेरिका पहुची तो सान फ्रासिसको म भारतीय विद्यार्थियो की एक सभा हुई उसमे लाला हरदयाल का अत्यन्त ओजस्वी भाषण हुआ। भारतीय विद्यार्थियो की इस सभा मे चीन के वरिष्ठ क्रांतिकारी नेता सनयात सेन के पुत्र भी सम्मिलित हुए थे। उसी सभा म उ होने वे ऐतिहासिक शब्द कहे थे "पगडी सभालियेगा मीर और बस्ती नही यह देहली है।"

लाला हरदयाल ने सान फ्रासिसको म ही वह प्रसिद्ध क्रांतिकारी परिपत्र लिखा जो "युगान्तर परिपत्र' (युगातर सरक्यूलर) के नाम से प्रसिद्ध है। वह जनवरी १९१३ के प्रथम सप्ताह मे पेरिस म छपा और वही से भारत भेजा गया। भारत सरकार ने उस परिपत्र को भारत मे प्रतिषेध कर दिया।

लाला हरदयाल ने उसमे लिखा था २३ दिसम्बर का बम नवीन युग का निर्माण करने वाला और उसकी गजना दूर तक सुनाई देने वाली है। भारत म विस्फोट होने वाले बमो म यह सबसे अधिक प्रिय और मधुर है। सव प्रथम खुदीराम बोस ने बम का विस्फोट करके भारत के इतिहास म नए युग का श्रीगणेश किया था। विश्व के स्वाधीनता के इतिहास ने यह अत्य त उपयोगी तथा सफल बम है। देहली ने अपने प्राचीन नाम के यश का पुनरुद्धार किया है। वह बोली है विश्व ने उसकी वाणी सुनी है और अत्याचारियो न भी उसको सुना है। हम जो स्वतन्त्रता के सैनिक देश म हैं उन्होने उसके सदेश को सुना है। आशा और साहस के पोषक ऐ बम तुम्हारा स्वागत है। सुप्त आत्माओ को जाग्रत करने वाले प्रिय बम तुम ठीक समय पर आए एक क्षण भी पहले नहीं आए। वास्तव म तुम्हे आने म देरी हो गई।

"हम उस ध्वस्त हौदे तथा उस अत्याचारी के धराशायी होने पर क्यो हष मना रहे हैं। हमारी आत्मा म हष के अश्रुकण क्या छलकते है और हमारे हृदय म नवीन उत्तेजना तथा नवीन विचार क्यो उभरते है। क्योकि यह बम क्रांतिकारी आन्दोलन की निश्चित रूप से पुनरावृत्ति है। सरकार ने जो पिछले चार वर्षों म दमन नीति अपनाई उसके कारण हमारे सर्वोत्तम साथी हमसे बिछुड गए। परन्तु वे हमारे लिए विरासत मे कभी पराजित न होने वाली भावना तथा अपने भविष्य म असीम और अगाध विश्वास छोड गए। सरकार न घबराहट म दमन का सहारा पकडा।

हमारे पत्र तथा पत्रिकाओं को बन्द किया गया उन्हें दबाया गया। हमारे वीर कार्यकर्त्ताओं को कैद में डालकर उन्हें जीवित समाधि दे दी गई। मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने वाले स्वतन्त्रता के सैनिकों का दमन किया गया, उन्हें देश निकाला दे दिया गया, समस्त भारत को जैसे निस्तब्ध और चुप कर दिया गया। ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे कि क्रांतिकारी भावना देश में मर गई हो अत्याचारी प्रसन्न था उसके अनुचर कलकत्ता में अपने घरों पर अपने को सुरक्षित समझते थे।"

हरदयाल ने रासबिहारी बोस की नीचे लिखे शब्दों में प्रशंसा की —

"हम नहीं जानते कि यह मुक्तिदाता कहां से आया। वह भारतीयों की सतत कामनाओं तथा उच्छ्वासों के उत्तर में आशीर्वाद के रूप में आया। उसने हमें गहन निद्रा से जगा दिया। उसने हमारी उनींदी आंखों के सामने चकाचौंध कर देने वाला तेज प्रकाश फेंका। वह इस समय का प्रिय वीर है। वह आज बुद्धि और गौरव का प्रतीक है तथा शक्ति का स्वामी है। दासता तथा लज्जा के इस देश भारत में उसने मानवीयता की प्रतिष्ठा को प्रतिष्ठित कर दिया। निराशा तथा दुख के मध्य उसने देश में एक किनारे से दूसरे किनारे तक आशा और उल्लास बिखेर दिया। जबकि समस्त भारत भय के कारण निशब्द होकर गूंगा बन गया था वह भीम और अर्जुन की वाणी में बोला है। जबकि भारतीय स्वतन्त्रता के सैनिक विदेशों में चिन्तायुक्त भावना से भविष्य को देख रहे थे और एक अच्छे और प्रसन्नता के समय की आशा लगाए थे उसने अपने भय संचार करने वाले अधरों से साहस और आराम का संदेश भेजा है। दास और कायरों के मध्य उस अकेले ने यह दिखला दिया कि भारत में पुरुषत्व मर नहीं गया है। अपनी वज्रवाणी से भारत की भूमि पर उसने स्वतन्त्रता का विजय घोष किया है। उसने कहा है "ए भारतवासियो जहां अत्याचारी है वहां मैं भी हूं और बम मेरी अग्नि जिह्वा है जो मेरे शब्दों का उच्चारण करती है।

"दिसम्बर १६१२ का यह बम भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास में एक नया युग आरम्भ करता है। यह हमारा पुनर्जीवन है। इसके आगे क्रांतिकारी आंदोलन अपने अस्त्र-शस्त्रों से नए सिर से सज्जित होकर विजय यात्रा करेगा। निरस्त्रता समाप्त हो गई, अब पुल लूकार का स्वागत करो। वे वीर स्त्री-पुरुष जो क्रांतिकारी आंदोलन के कंटकाकीर्ण मार्ग को छोड़कर सामाजिक सुधार तथा वैधानिक आंदोलन के सुरक्षित क्षेत्र की ओर चले गए थे वे अब वापस क्रांतिकारी आन्दोलन में वापस लौट आवेंगे और दुगने उत्साह से युद्ध करेंगे। सम्पूर्ण भारत आश्चर्य चकित है, हर्षोन्मत्त है, हर्षविभोर होकर वीरता तथा विजय के लिये त्याग और बलिदान करने के लिए तैयार है। बम दरबार की उपयुक्त और सही समाप्ति के रूप में आया है। अच्छा हो कि दरबार तथा बम साथ-साथ हुआ करें। यह क्रम तभी बन्द हो जब इस धरा पर दरबार न लगा करें।

आगे हरदयाल ने प्रश्न किया "बम की नैतिक शक्ति की और व्याख्या कर सकता है। वह सर्वेन्द्रित नैतिक अविस्फोट (डायनेमाइट) है। जबकि अपरिचित और चालाक लोग अपनी शक्ति के अहंकार में अपने अत्याचारों के शिकार निस्सहायों के सामने अपने वैभव और सत्ता का प्रदर्शन करते हैं जबकि धनी और वैभवशाली और

धसडी ऊंचे सिंहासन पर बैठाकर अपने दासों को उनके सामने गिर कर उनकी अभ्यर्थना और पूजा करने को कहते हैं, जबकि पृथ्वी पर दुष्ट लोग आकाश तक ऊंचे चढ़ जाते हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि कोई भी उनकी शक्ति का मुकाबला नहीं कर सकता, तब उस अन्धकार के समय मानवता की प्रतिष्ठा के लिए बम आता है। वह अत्याचारी को मिट्टी में मिला देता है। यह उन दासों से कहता है कि जो भगवान की तरह सिंहासना-रूढ़ है वह तुम्हारी तरह ही साधारण मनुष्य है। तब उस लज्जा के क्षण में यह बम "सभी मानव बराबर हैं, यह शाश्वत सत्य का उपदेश देता है और उन उच्च लोगों और वायसरायों को उनके महलों और हौदों से अस्पताल या कब्र में भेज देता है।" तब उस आतंक के क्षण में जबकि मानवीय स्वभाव स्वयं अपने से लज्जित होता है तब बम सत्ता तथा शान शौकत की निरर्थकता की घोषणा करता है और हम हमारी नीचता से उबार लेता है। जब हममें से कोई वीरता का काम करता है तो हम अपने को कितना महान अनुभव करते हैं। हम उसकी नैतिक शक्ति में भागीदार बनते हैं। हम मानवीय समानता तथा प्रतिष्ठा के आग्रह में उल्लसित होते हैं।

"वह लक्ष्य पर लगता है या चूक जाता है यह गौण है। बम ऐसे सभी अवसरों पर एक शुभ आशीर्वाद के समान होता है। जब अत्याचार अपनी घोषणा करता है तो स्वतन्त्रता को भी वैसा ही करना चाहिए। सम्राटों के या शाही जुलूसों पर कोई भी बम अनुपयुक्त नहीं होता वह उनके जादू को नष्ट कर देता है वह शक्ति और सत्ता के जादू को समाप्त करने वाला है जो जनता को पंगु और लाचार बना देता है। वह करोड़ों की आवाज है। जिसे सब लोग समझ सकते हैं वह उस भाषा में बोलता है वह क्रांति का प्रचारक है।

धन, सुविधा और सत्ता के काले बादल सम्पूर्ण पृथ्वी पर जब छा जाते हैं और सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी पर नहीं जाने देते तब बम बादलों में विद्युत के समान किंकर्त्तव्य विमूढ़ और भौचक्की मानवता को स्वतन्त्रता के लक्ष्य को प्राप्त करने का मार्ग निर्देश करता है।

जब हमें ऐसा महान आशीर्वाद मिले तो हमें उन सभी वीर पुरुषों और वीरांगनाओं का स्मरण करना चाहिए जो उससे पहले जा चुके हैं। हमें उन वीरों का नाम प्रेम और श्रद्धा से लेना चाहिए जो स्वतन्त्रता के युद्ध के इतिहास में प्रकाश पुंज की भांति हैं और अपने उन प्रिय साथियों को याद करना चाहिए कि जो उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जीवित रहे और मरे जो हमारा लक्ष्य है।

भारत में क्रांति के साथियो उठो और सक्रिय हो। नए सिरे से देश में तथा विदेशों में अपने प्रचार को संगठित, करो सेवा और त्याग बलिदान की नए सिरे से शपथ लो। देखो बम बोला है। हिन्दुस्तान के तरुण स्त्री-पुरुषों को उसका उत्तर देना है।

वन्देमातरम्

लार्ड हार्डिंग पर बम फेंके जाने का एक बड़ा राजनीतिक परिणाम यह हुआ कि पृथ्वी के अन्य देश जो अभी तक इंग्लैंड के इस प्रचार से प्रभावित थे कि भारतवासी भारत पर ब्रिटेन के शासन से बहुत अधिक संतुष्ट हैं वे ब्रिटिश सरकार को मां बाप सर

कार मानते हैं और उसके शासन को दैवी वरदान मानते हैं यह प्रभाव समाप्त हो गया और वे समझ गए कि भारतीय ब्रिटिश शासन को उखाड़ कर फेंक देना चाहते हैं। दूसरा बड़ा लाभ यह हुआ कि भारतीयों में जो देश की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में गहरी निराशा और विवशता की भावना उत्पन्न हो गई थी वह दूर हो गई। भारतीय यह सोचकर प्रसन्न थे कि देश राजनीतिक दृष्टि से मृतप्राय नहीं हो गया है। उसमें जीवन है और वह ब्रिटिश शासन को चुनौती दे सकता है। देश के लिए यह मनोवैज्ञानिक लाभ बम की बहुत बड़ी देन थी। बम काण्ड के फलस्वरूप सर्व साधारण का मनोबल बहुत बढ़ गया और देश के राजनीतिक जीवन में गतिशीलता उत्पन्न हो गई।

रासबिहारी बोस ने अपने क्रांतिकारी कार्यक्रम तथा नेतृत्व से राजनीतिक दृष्टि से मृत प्राय देश में आशा, उत्साह, नव चैतन्य और स्वतन्त्रता की अमिट चाह उत्पन्न कर दी। यह उस महान क्रांतिकारी देशभक्त के ही प्रयत्नों का फल था कि तब से देश निरंतर स्वतन्त्रता के लिए स्वतन्त्र होने तक संघर्ष करता रहा। खेद है कि देश अपने उस महान क्रान्तिकारी नेता को भूल गया। स्वतन्त्र भारत में किसी ने भारत में स्वतन्त्रता की अमिट भावना को जागृति करने वाले क्रांति के अग्रदूत रासबिहारी बोस की स्मृति को जीवित रखने की आवश्यकता नहीं समझी। होना तो यह चाहिए था कि देहली में उस महान क्रान्तिकारी का भव्य स्मारक बनाया जाता परन्तु वहां उनका कोई चिह्न भी नहीं है। जो आजन्म देश को स्वतन्त्र बनाने के लिए जूझता रहा उसको इस प्रकार भुला देना हमारी कृतघ्नता की पराकाष्ठा ही कही जावेगी।

अध्याय सातवा

रासबिहारी का जापान जाना

वायसराय लार्ड हार्डिंग पर देहली में बम फेंके जाने के बाद जब रासबिहारी बोस को पकड़ने के लिए वारंट निकल गया और ब्रिटिश शासन उनको गिरफ्तार करने के लिए आकाश पाताल एक कर रहा था। उनका हुलिया और चित्र सब सार्वजनिक स्थानों पर लगा दिया गया। उनको गिरफ्तार कराने के लिए पारितोषिक की बहुत बड़ी धनराशि घोषित कर दी गई थी तब उनके मित्रों सहयोगियों और अनुयायियों को उनके पकड़े जाने की आशंका हो गई थी। उन्होंने बहुत चाहा कि रासबिहारी भारत छोड़कर विदेश चले जावें उनके घनिष्ठ मित्र शिरीशचन्द्र घोष तथा चन्दरनगर के अन्य मित्रों ने उन पर बहुत दबाव डाला कि गिरफ्तारी से बचने के लिए वे भारत को छोड़ विदेश चल जावें। यहां तक कि उनके लिए टिकट भी खरीद लिया गया। परन्तु उस महान क्रांतिकारी को अपनी सुरक्षा का ध्यान नहीं था वह मातृभूमि को ब्रिटिश दासता से मुक्त करना चाहता था उसने अपने मित्रों से कहा कि उसका कार्य भारतवर्ष में है, उसे भारत में ही रहना है अस्तु उसने गिरफ्तारी से बचने के लिए विदेश जाना अस्वीकार कर दिया और टिकट को फाड़कर फेंक दिया।

परन्तु सशस्त्र विप्लव के असफल हो जाने के बाद उनके विचारों में थोड़ा परिवर्तन हुआ जैसा कि उन्होंने अपनी 'आत्म कथा' में स्वयं लिखा है। 'भारत की क्रांतिकारी पार्टियों के सम्बन्ध में महान सत्य यह है कि उनको जन शक्ति अथवा अनुशासित संगठन की कमी नहीं है परन्तु उनके पास शस्त्रों गोली बारूद की बहुत कमी है। जिसके कारण उन्हें ब्रिटिश सरकार की भारतीय सेना से सम्पर्क जैसा अत्यन्त जोखिम भरा काम करना पड़ता है। यदि भारतीय क्रांतिकारियों के पास यथेष्ट अस्त्र-शस्त्र होते तो सशस्त्र विद्रोह केवल असैनिक नागरिकों द्वारा किया जा सकता था।" अतएव उन्होंने यह निश्चय किया कि सशस्त्र विप्लव के दूसरे प्रयत्न से पहले अस्त्र शस्त्र की दृष्टि से देश को स्वावलम्बी बनाना होगा।

दूसरी कठिनाई जो रासबिहारी बोस क्रातिकारी पार्टियों के सामने भारत में थे वह धनाभाव की थी। क्रातिकारी दल सार्वजनिक रूप से चन्दा तो नहीं कर सकते थ न पूजीपति या धनाढय उन्हे आर्थिक सहायता ही देते अस्तु उन्हे डकैतियाँ डालनी पडती थी। वे अस्त्र शस्त्र तथा धन के लिए डकैतिया डालते थे। उन डकैतियों में क्रातिकारियो की शक्ति समय और सगठन की शक्ति लगानी पडती थी। अस्तु रास बिहारी बोस का मानस अब यह बन गया कि विदेशो से अस्त्र-शस्त्र तथा धन लाया जाय और दूसरी बार जब भारत मे सशस्त्र विप्लव हो तो इन दानो साधनो का अभाव न रहे अस्तु उन्होने विदेश जाना निश्चय किया।

उसी समय २३ मार्च, १९१५ को मेरठ म पिगले और लगभग उसी समय शिरीशचन्द्र घोष की हावडा म गिरफ्तारी हुई। जिसने रासबिहारी बोस को बहुत प्रभावित किया वे दोनो उनके अत्यन्त निकट के और विश्वस्त क्रातिकारी थे। वे चन्दरनगर नलनी मोहन मुखर्जी के साथ चल दिए। वे उस समय बनारस म त्रिपुरा भैरवी ब्रह्मपुरी म रहते थे। मोगरा स्टेशन पर उन्हे ज्योति सिंहा (उपनाम पशुपति) लेने आए और चन्दरनगर ले गए। चन्दरनगर म कुछ दिन व अत्यन्त गोपनीय रहे और मोतीलाल राय स विचार-विमर्श करके निश्चय कर लिया कि वे जापान को जावे। साथ ही यह भी निश्चय किया कि वे पी एन टगोर के नाम से अपने को गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टगोर का सम्बन्धी घोषित करें। गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टगोर निकट भविष्य मे जापान जाने वाले थ। जिससे एसा प्रतीत हो कि वे गुरुदेव रवी द्रनाथ टगोर की जापान यात्रा का प्रबन्ध करने पहले स जापान जा रहे हैं। इस समय रासबिहारी बोस एक 'मारछज ब्राह्मण' के वेष म गोपनीय ढग से रहे। वे बहुत लम्बा जनेऊ धारण करते थे और मस्तक पर लम्बा टीका लगाते थ। जब यह निश्चय हो गया कि वे पी एन टगोर के नाम से जापान जावेंगे तो वे चन्दरनगर से नवद्वीप चले आए। उनके साथ एक मराठा युवक था। नवद्वीप से उन्होने अनुकूल चक्रवर्ती उपनाम ठाकुर को ढाका रुपया लाने के लिए भेजा। अनुकूल चक्रवर्ती जब ढाका से रुपया लेकर लौट आए उसके कुछ दिनो बाद ही गिरजा बाबू नवद्वीप रासबिहारी के पास आ गए। शचीन्द्र सान्याल और पशुपति पहले से ही वहा मौजूद थे। उन सबो से विचार-विमर्श करने के बाद रासबिहारी बोस ने कलकत्ता चन्दरनगर होकर जाना तय किया। जबकि 'समुकी मारु' जहाज कलकत्ता बन्दरगाह से चलाने वाला था उसके कुछ दिनो पहले रासबिहारी कलकत्ता आए और उनके लिए जापान का टिकट खरीद लिया गया। वे कलकत्ता म अपने कतिपय प्रमुख अनुयायियो से मिले जिनम शचीन्द्रनाथ सान्याल, दामोदर स्वरूप सेठ विभूति, पशुपति आदि मुख्य थे। वे अपने अनुयायियो से धरमतल्ला डाकखाने के ऊपर की मजिल के एक कमरे मे मिले। उन्होने अपने अनुयायियो से कहा कि उनकी अनुपस्थिति म वे क्रातिकारी सगठन के काय को उत्साह और तेजी के साथ शचीन्द्रनाथ सान्याल और गिरजा बाबू के परामर्श से करते रहे। १२ मई, १९१५ को उस महान क्रातिकारी ने देश से प्रस्थान किया। अपनी मातृभूमि के पुन वे दर्शन नही कर सके। उनको जापान जाने की आज्ञा लेने के लिए पुलिस कमिश्नर तथा अन्य उच्च राजकीय अधिकारियो से भारत म मिलना पड़ा परन्तु अपनी चतुराई के कारण वे यह पता

नहीं लगा सके कि पी एन टगार और कोई नहीं महान क्रांतिकारी रासबिहारी बास हैं। जिनको गिरफ्तार करने के लिए भारत सरकार आकाश पाताल एक कर रही है। वे अपना जापान जाने का पासपोर्ट लेने स्वय पुलिस कार्यालय गए पर कोई भी उन्हें पहचान न सका कि वे ही रासबिहारी बोस हैं। १२ मई, १६१५ को वे 'एम एस सानुकी मारू जहाज' से जापान को चल दिए। उन्होंने सबको बतलाया कि वे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के सेक्रेटरी हैं और उन्हें गुरुदेव की जापान यात्रा की व्यवस्था तथा जापान में उनकी सुविधा की व्यवस्था करनी है। उनके मित्रों ने जहाज पर उनको हार्दिक विदाई दी और जापान सकुशल पहुचने की शुभकामना की।

रासबिहारी ने अपने निकट मित्रों से निम्नलिखित अन्तिम शब्द कहे। "समय आ गया है कि हम भारत के प्रत्येक युवक और युवती को सशस्त्र कर दें और तब देखेंगे कि अंग्रेज भारत पर किस प्रकार शासन करते हैं। मैं अपनी मातृभूमि को त्याग कर जाने से बहुत दुःखी हूँ पर मैं तुम लोगों से यह चाहूँगा कि तुम क्रांतिकारी दल का पुनर्सगठन करके शीघ्र मेरे पास आना, मैं जापान भारत के युवाजन के लिए यथेष्ट अस्त्र-शस्त्र की व्यवस्था करने जा रहा हूँ।"

चलते समय रासबिहारी ने शचीन को यह कह कर दो रिवाल्वर दिए कि "यह आवश्यकता पड़ने पर काम आवेंगे। शचीन और गिरजा बाबू के कपोलों पर अपने नेता और मित्र के विदा होते समय अश्रुधारा बह रही थी परन्तु रासबिहारी बोस तनिक भी निराश और विचलित नहीं थे।

रासबिहारी बोस के पास दूसरे दर्जे का टिकट था परन्तु अन्तिम क्षण में उन्होंने उसे प्रथम श्रेणी में परिवर्तित करवा लिया। इस प्रकार जब जहाज कलकत्ता से चला तो उन्होंने पुलिस को धोखा दे दिया क्योंकि प्रथम श्रेणी के यात्रियों की भिन्न स्थानों पर तलाशी नहीं ली जाती जबकि द्वितीय श्रेणी के यात्रियों की ली जाती थी। उनको आने वाले जोखिम का पूर्वाभास हो जाता था और यही कारण है कि वे जीवन में आने वाले खतरों से बचते रहे। इसके अतिरिक्त उन्हें भगवान में दृढ़ और अटूट विश्वास था। वे यह विश्वास करते थे कि मैं अपनी मातृभूमि को दासता से मुक्त करने के लिए निस्वार्थ कार्य कर रहा हूँ मेरी सुरक्षा स्वयं भगवान देखते हैं।

रासबिहारी २२ मई १६१५ को सिंगापुर पहुच गए और वहां फरवरी मास में भारतीय सैनिकों ने जो डुडी खां के नेतृत्व में विद्रोह किया था उसकी विस्तृत जानकारी प्राप्त की। २६ मई, १६१५ को वे हांगकांग पहुचे। "सीक्रेटम ऐक्ट" के अन्तर्गत ऐसा नियम था कि कोई भी भारतीय यात्री जो हांगकांग से आगे जाना चाहता है उसे हांगकांग पुलिस से एक नया पास लेना पड़ता था। क्योंकि वह रविवार का दिन था इस कारण पुलिस उच्च अधिकारी का कार्यालय बन्द था। केवल एक अंग्रेज अधिकारी और उसका एक भारतीय सहायक साधारण कार्य के लिए उपस्थित थे। रासबिहारी हांगकांग में रुकना नहीं चाहते थे उन्होंने भारतीय सहायक से कहा कि उनके पास द्रव्य की इतनी कमी है कि वे वहां रुक नहीं सकते। उन्होंने भारतीय सहायक से इस ढंग से अपनी आर्थिक कठिनाई की बात कही कि वह अंग्रेज अधिकारी के पास गया और उससे उनके लिए नया विशेष यात्रा का पास बनवा लाया।

जब रासबिहारी शघाई पहुचे ता उ होने भारतीय क्रातिकारी दल को अस्त्र-शस्त्र भेजने का प्रयत्न किया परन्तु क्योकि चीनी स्वय अपने स्वतत्रता युद्ध म व्यस्त थे व अपने मुक्ति युद्ध को लड रहे थे अस्तु वे बडी मात्रा मे भारत के लिए अस्त्र-शस्त्र नही भेज सकते थे। चीन मे भी अग्रेजो के गुप्तचर सक्रिय थे उ होने रासबिहारी बोस को कठिनाइया मे फसा दिया जिनसे रासबिहारी एक चीनी देशभक्त के प्रयत्नो से ही मुक्त हो सके।

जमनी ने भारतीय क्रातिकारियो को बहुत बडी सख्या मे (हजारो की सख्या म) अस्त्र-शस्त्र भेजने का पूव प्रयत्न किया था। उन्होन "मवरिक तथा हैनरी" दो जहाजा म भारतीय क्रातिकारियो को अस्त्र-शस्त्र भेजे। हैनरी जहाज को शघाई मे अग्रेज और फ्रेंच अधिकारियो ने पकड लिया और 'मवरिक' जहाज भी भारत मे अस्त्र शस्त्र न पहुचा सका। कारण यह था कि अग्रेजो की अरब सागर तथा इडियन ओशन मे इतनी कडी चौकसी थी कि उनसे बचकर किसी जहाज का निकलना कठिन था। अतएव जरमन दूतावास यह मानते थे कि भारत को बडी मात्रा मे अस्त्र-शस्त्र पहुचाना खतरे का काम है यह भी कारण था कि रासबिहारी शघाई से भारत अस्त्र शस्त्र नही भेज सके।

इन सब बाधाओ को पार करते हुए रासबिहारी ५ जून, १६१५ को जापान सकुशल पहुच गए।

रासबिहारी जापान क्यो गए यह प्रश्न पाठको के मन मे उठ सकता है। जापान उस समय एशिया वासियो के लिए एक महान आकषण का देश था। रासबिहारी के लिए वह शौयवीरता और राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत देश था। जापानियो ने जार के रूस को युद्ध मे पराजित किया था। अभी तक किसी एशियाई देश ने योरोपीय देशो को पराजित नही किया था। जापानियो का देश प्रेम और देश के लिए अपना सवस्व बलिदान करने की तैयारी जगत प्रसिद्ध थी। उस समय सभी मातृभूमि के पुजारी जापान को अपना आदश मानते थे।

रासबिहारी ने अपनी मातृभूमि की सेवा करने का व्रत लिया था। वे अपनी मातृभूमि को अग्रेजो की दासता से मुक्त कराना चाहते थे। उनके हृदय म उत्कट देश-प्रेम, मातृभूमि के लिए आत्म बलिदान की भावना हिलोरे मार रही थी इस कारण उनके लिए जापान जाना स्वाभाविक था। उनकी दृष्टि म जापान ही एक ऐसा देश था जो योरोपीय साम्राज्यवाद से लोहा ले सकता था। जापानियो म वे गुण थे जो कि एक साम्राज्यवादी देश के दासता के जुए को उतार कर फेंक देने मे पराधीन राष्ट्र को सक्षम बना सकते थे। यही कारण था कि उस महान क्रातिकारी ने जापान जाना निश्चय किया।

अध्याय आठवां

रास बिहारी के जापान मे प्रारम्भिक वर्ष

रासबिहारी (पी एन टगोर के वेश मे) ५ जून, १६१५ को 'कोबे' पहुचे वे वहा से 'क्योटो होते हुए 'टोकियो' पहुचे। वे टोकियो मे 'शिम्बाशी' के समीप एक सस्ते होटल म ठहर गए। परन्तु उनका मुख्य ध्यय अपने साथी क्रातिकारियों को अस्त्र–शस्त्र भेजना था इस कारण वे जरमन काऊसलेट (जरमन वाणिज्य दूतावास) से मिलने शघाई गए। जरमन सरकार ने पहले ही यह तय कर लिया था कि सयुक्त राज्य अमेरिका के वाशिगटन के राजदूत के आधीन शघाई का जरमन काउन्सलेट भारतीय क्रातिकारियो को अस्त्र–शस्त्र पहुचायेगा।

बर्लिन कमेटी का षडयत्र

जरमन काउसलेट ने बगाल के समुद्र तट पर 'हटिया' द्वीप मे जो चिटागाव तट पर एक छोटा–सा द्वीप था 'रायमगल' जो सुन्दर बन मे है और जो बगाल के चौबीस परगने म है तथा 'बालासोर जो उडीसा म है इन तीन स्थाना से भारतीय क्रातिकारियो को अस्त्र–शस्त्र देना निश्चय किया था। जो भी अस्त्र शस्त्र देने थे वे 'जुगातर क्रातिकारी सगठन' को देते थे। अन्त मे 'बालासोर' चुना गया। बालासोर मे जतीन मुखर्जी स्वय अस्त्र–शस्त्रो को लेने के लिए उस क्षेत्र मे गए। उन्होने मयूरभज राज्य मे शरण ली। यह निश्चय किया गया कि जब अस्त्र–शस्त्र पहुच जावेगे तो बालासोर के यूनीवर्सल एम्पोरियम पर गुप्त समाचार भेज दिया जावेगा कि अस्त्र–शस्त्र पहुच गए हैं। क्योकि जरमन अधिकारियो की बर्लिन कमेटी' से यह निश्चयात्मक बात हुई थी कि यह आवश्यक समझा गया कि बर्लिन कमेटी तथा जुगातर क्रातिकारी दल के सदस्य दोनो वहा हो जहा अस्त्र–शस्त्र दिए जावें। जतीन मुखर्जी वहा पहले ही पहुच गए। तारकनाथ दास, हरम्बालाल गुप्त तथा बर्लिन कमेटी के अन्य सदस्य सयुक्त राज्य अमेरिका से वहा गए। हेरम्बालाल गुप्त मार्ग जापान भी ठहर और रासबिहारी बोस स मिले।

यह तय किया गया कि 'मवरिक' तथा 'हैनरी' जहाज अस्तु ले जावेंगे। 'मैवरिक' जहाज एक तेल वाहक (आयल टैंकर) था वह स्टैंडड आयल कम्पनी का जहाज था उसको एक जरमन फम 'एफ जानसन कम्पनी' ने खरीद लिया। उस जहाज का उपयोग अस्त्र-शस्त्र भारत पहुचने मे लिया जाना था। जहाज पर अधिकारियो और नाविको के अतिरिक्त जो जरमन थे, पाच व्यक्ति थे, जिन्होने अपने को ईरानी घोषित किया था परन्तु वे वास्तव मे भारतीय क्रातिकारी थे। जहाज कैलीफोर्निया से जावा को चला। हजारो की सख्या मे राइफिलें रिक्त आयल टैंक मे भर दी गई और फिर उसमे तेल भर दिया गया। यह भी तय किया गया कि 'मैवरिक' जहाज समुद्र मे जरमन स्कूनर 'ऐनी लारसन' से सम्पक करेगा और 'ऐनी लारसन' बहुत बडी राशि मे अस्त्र मैवरिक को देगा। परन्तु मित्र राष्ट्रो की प्रशान्त महासागर म इतनी कडी चौकसी थी कि ऐनी लारैंस मैवरिक मे सम्पक नही कर पाया और जून के अन्त मे सयुक्त राज्य अमेरिका लौट आया। ऐनी लारैंस पर जो अस्त्र-शस्त्र थे वे सयुक्त राज्य सरकार ने जब्त कर लिए। इससे पूव मैवरिक प्रशात महासागर मे एक छोटे से द्वीप मे ऐनी लारैंस की प्रतीक्षा मे एक महीने से अधिक समय तक ठहरा रहा परन्तु ऐनी लारैंस के आने पर वह बटालिया चला गया। तब तक ब्रिटेन को यह जानकारी मिल गई कि जरमनी भारत के क्रातिकारियो को अस्त्र-शस्त्र भेज रहा है। बात यह हुई कि जकोस्लावाकिया के क्रातिकारियो ने जो सयुक्त राज्य अमेरिका मे सक्रिय थे उन्होंने यह सूचना अमेरिका को फेंच दूतावास को दे दी थी कि जरमनी भारत को अस्त्र भेज रहा है। अगस्त १६१५ मे भारत सरकार को हटिया, रायमगल और बालासोर मे हैनरी द्वारा अस्त्र शस्त्र उतारने के सम्बध मे सावधान कर दिया गया। मैवरिक जहाज को जावा म डच सरकार ने पकड लिया पर बटाविया के जरमन राजदूत ने जहाज को छुडा लिया और अमेरिका भेज दिया। दूसरा जहाज 'हैनरी' जिस पर अस्त्र-शस्त्र तथा गोली बारुद यथेष्ट मात्रा म था उसको मनिल से शघाई जाने की स्वीकृत मिल गई। उन दिनो शघाई पर ब्रिटेन और फ्रास का पूरा नियत्रण था अस्तु उनके लिए उसको पकड लेना सरल था। हैनरी पर जो भी अस्त्र-शस्त्र तथा गोली बारूद थी वह उतार ली गई और खाली जहाज को आगे सलीबीज की ओर जाने दिया गया इसी प्रकार भारत जरमन षडयत्र असफल हो गया और इस दुघटना से जरमन के शघाई के वाणिज्य दूतावास तथा वाशिंगटन के जरमन राजदूत का यह विश्वास बन गया कि बडी मात्रा म अस्त्र-शस्त्र भारत भेज सकना अत्यन्त जोखिम का काम है।

परन्तु जो क्रातिकारी विदेशो मे थे वे मैवरिक और हैनरी जहाजो की योजना के असफल होने से हताश और निराश नही हुए। उस समय बनारस के श्री शिव प्रसाद गुप्त तथा कलकत्ता के प्रोविन्शीय सरकार कलकत्ता के सुदूर पूव मे थे वह भी षडयत्र मे सहायक थे। शघाई के जरमन कौंसिल ने दो जहाजो के द्वारा अस्त्र-शस्त्र बगाल की खाडी म ले जाने की योजना बनाई। एक जहाज को उन्होने रायमगल और दूसरे को बालासोर भेजना तय किया। एक जहाज पर बीस हजार राइफिलें, अस्सी लाख गोली, दो हजार पिस्तौल और कुछ बम भेजने की योजना थी। इसके अतिरिक्त दो लाख रुपये भी भेजने की योजना थी। दूसरे जहाज पर दस हजार राइफिलें, दस लाख गोलियां

तथा अन्य आवश्यक सामग्री भेजी जाने वाली थी और एक तीसरी जहाज़ भी जरमन भेजा जाने वाला था परन्तु समस्त योजना असफल हो गई क्योंकि एक चीनी जिसे बटाविया जरमन राजदूतावास में राजदूत के पास भेजा गया था उसने उस षड्यंत्र की पूर्व सूचना दे दी और एक बंगाली सुकुमार चटर्जी ने श्याम में इस षड्यंत्र का भंडाफोड़ कर दिया। इन दुर्घटनाओं के कारण जरमन राजदूत बड़ी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र भारत भेज सकने के सम्बन्ध में निराश हो गए थे पर थोड़ी मात्रा में भेजने के प्रयत्न वे बाद को भी करते रहे।

रासबिहारी का प्रयत्न

इस कारण जब वे शंघाई जाकर जरमन कौंसल से मिले तो उसने उनकी सहायता करना अस्वीकार कर दिया। वे असफल और निराश होकर जापान को लौट आए। जुलाई की सायंकाल को 'कोबे' के एक सिंधी व्यापारी ने युवक पी० एन० टगोर को जिन्होंने अपने को मेडीकल का छात्र बतलाया था और कहा था कि वे संयुक्त राज्य अमेरिका मेडीकल कालेज में पढ़ने जा रहे हैं और 'जयमल' जो अपने को रेशम का व्यापारी बतलाया था, भोज के लिए बुलाया। उस व्यापारी ने अन्य भारतीयों को भी भोज के लिए बुलाया। उस व्यापारी ने अन्य भारतीयों को भी भोज के लिए आमंत्रित किया था, जब भोज समाप्त हो गया तो अतिथियों ने आपस में बात करने के लिए कई समूह बना लिए वे कई समूहों में बट गए। पी० एन० टगोर जयमल के समूह में सम्मिलित हो गए। जयमल लम्बे समय से भारत के बाहर था इस कारण वह भारत के ताजे समाचार जानने के लिए उत्सुक था। वह यह देखकर आश्चर्य कर रहा था कि ग्रीष्मऋतु में हाथों में दस्ताने और पैरों में मोजे वह पहने था।

पी० एन० टगोर खुल कर बात कर रहे थे इस कारण जयमल उनकी ओर आकर्षित हुआ। जब वे चलने लगे तो टगोर ने जयमल से पूछा कि वह कौन है। जयमल ने अपना नाम बतलाया और कहा कि मैं रेशम का व्यापारी हूं। इस पर पी० एन० टगोर ने कहा कि हमारे सब व्यापारी आप जैसे जानकार और देश भक्त हों तो भारत अधिक दिनों ब्रिटेन का दास नहीं रहता। इतना कहकर टगोर जयमल को दूसरे दिन सायंकाल को उसके साथ भोजन के लिए आमंत्रित किया।

भोजन के पूर्व जब टगोर जयमल के लिए प्याले में चाय उडेल रहे थे तब उन्होंने बायें हाथ के पीछे उनके हाथ पर घाव का चिह्न देखा। जयमल ने उस चोट के निशान से यह कल्पना तो कर ली कि उस चिह्न को छिपाने के लिए उन्होंने दस्ताने पहने थे। परन्तु उनको छिपाने की क्या आवश्यकता थी। सहसा उन्हें ध्यान आया कि जब १६१२ में वे हांगकांग में थे तब लाहौर से निकलने वाले उर्दू के दैनिक समाचार पत्र 'जमींदार' में यह समाचार पढ़ा था कि पुलिस को यह सन्देह था कि रासबिहारी बोस नामक एक बंगाली युवक जिसके हाथ और पैर पर घाव के चिह्न हैं उसने वायसराय पर बम फेंका था। जयमल ने कल्पना कर ली कि उनका आतिथ्य करने वाले स्वयं रासबिहारी बोस हैं फिर भी उन्होंने रासबिहारी बोस से अपनी मान्यता को व्यक्त नहीं किया। परन्तु जब वे दोनों खाने की मेज पर गये। जयमल ने देखा कि उनके आतिथ्य करने वाले के बायें पैर भी घाव का चिह्न है। अब जयमल का शक भी

सदह नही रहा कि ये ही रासबिहारी बोस है।

भोजन कर चुकने के उपरांत जयमल ने पूछा कि क्या कभी आप पंजाब गए हैं और आप करतारसिंह मिले और रासबिहारी बोस को जानते हैं टैगोर यह सुनकर बहुत चौकन्ने हो गए। उन्होंने जयमल से कहा कि भारतीयो म एकता नही है, देश म विश्वास घात व्याप्त है राष्ट्रीय भावना कुछ ही लोगो म मिलती है फिर भी क्रातिकारी आदोलन फल रहा है।

अब टगोर ने जयमल से कहा "मैं जानता हू कि तुम रेशम के व्यापारी नहो हो परन्तु तुम कौन हो यह मैं जानना चाहता हू। जयमल ने उत्तर दिया "तुम भी मडासीन" के छात्र नहीं हो। यदि तुम अपना वास्तविक नाम वतला दोगे तो मैं भी अपना नाम वतला दू गा। टैगोर न कहा कि तुम पहले अपना नाम बतलाओ। जयमल ने अपना वास्तविक नाम बतला दिया। इस पर टैगोर ने कहा कि क्या तुम वही भगवान सिह हो जिन्ह कनाडा से निष्कासित कर दिया गया था। भगवान सिह की स्वीकारोक्ति के साथ ही दोना ने एक दूसरे को अपनी बाहो म भर लिया। रासबिहारी ने भगवान सिह को अपनी बाहो म लिए ही सिर स पैर तक देखा और कहा 'मैंने तो अपने मन म ६ फीट लम्बे और लम्बे बाल तथा मूछो के पजाबी की तुम्हारी तस्वीर बना रखी थी।

यह सुनकर दोना खूब हसे। उसके उपरान्त रासबिहारी न भी यह स्वीकार कर लिया कि ये ही रासबिहारी बोस हैं। दोना ने फिर बैठकर क्रातिकारी आदोलन की चर्चा की और योजना बनाई। उन्होंने एक दूसरे को पत्र लिखना निश्चय किया यद्यपि जापान म भी ब्रिटिश गुप्तचर भगवान सिह पर कडी नजर रखते थे। यह होते हुए भी रासबिहारी ने भगवान सिह को पत्र लिखना तय किया।

एक दिन रासबिहारी अपने मकान मे अपना जूता उतार रहे थे उन्होंने देखा कि दो जापानी उनको खिडकी म से ध्यान से देख रहे थे उन्होंने उनके बायें हाथ पर घाव का निशान ध्यान से देखा। दूसरे दिन प्रात काल जब रासबिहारी अपने मकान से बाहर निकलते उन दोनो जापानियो ने उनका पीछा किया उन्होंने रासबिहारी बोस का उत्तर दिया कि हम विदेशियो की खोज खबर रख रहे है। वे यह जानने के लिए कि पुलिस कितना जानती है वे पुलिस के उच्च अधिकारियो स मिले परन्तु वहा भी उन्हे यही उत्तर मिला कि विदेशियो की निगरानी की जा रही है। रासबिहारी को सदेह हो गया कि ब्रिटिश सरकार उन्ह जान गई है और वे कभी भी उनके दबाव से पकडे जा सकते हैं अस्तु वे चीनी नेता डाक्टर सनयात सेन के पास गए और उन्हे सब हाल बतला दिया। उन्हे रासबिहारी ने यह भी बतला दिया कि सम्भवत जापानी सरकार को उनके विषय मे ज्ञात हो गया है। डाक्टर सनयात सेन ने एक मित्र से परामर्श किया वह उन्ह 'तोयामा' के पास ले गया।

एक बार रासबिहारी बोस और भगवान सिह दोनो टोकियो से साठ मील दूर एक होटल म डाक्टर सनयात सेन स मिलने गए। वहा उन्हें एक जापानी कर्मचारी ने बतलाया कि एक भारतीय देशभक्त लाला लाजपतराय भी उसी होटल मे ठहरे हुए है लाला लाजपतराय का नाम सुनते ही दोना उनके

कमरे की ओर झपटे। इस प्रकार जापान में रासबिहारी और लाला लाजपतराय का सम्पर्क हुआ।

यह तो हम पहले ही लिख चुके हैं कि मैवरिक और हैनरी की दुघटना के उपरांत शघाई का जरमन कौसल बडी मात्रा मे अस्त्र-शस्त्र भारत भेजने के पक्ष म नही था। परन्तु श्याम और बरमा के माग से थोडे अस्त्र-शस्त्र भारत भेजने के पक्ष म था। रासबिहारी का जापान म शघाई के जरमन कौसल से बराबर सम्पर्क बनाए रखना एक महत्वपूण काय था। वह कुछ जरमन एजेन्टो के माध्यम से भारत को थोडी मात्रा म अस्त्र-शस्त्र भेजने के पक्ष म था। इस काय मे नेलसन नामक व्यक्ति बहुत सक्रिय था। वह अस्त्र-शस्त्र तथा विस्फोटक बनाने के लिए रसायनिक पदार्थ खरीदता था। उसके पास शघाई म चार मकान थे, जहा वह समान रखता जाता था। पहला मकान १८ चौनुग माग पर था, दूसरा २ यागटिसीपू माग पर था, तीसरा सिक्रावी माग पर और चौथा आनुग माग पर था। जब अत म इन मकानो की तलाशी हुई तो उनमे अस्त्र-शस्त्र तथा रसायनिक पदाथ मिले।

जापान म रासबिहारी का एक महत्वपूण काय भारत को अस्त्र-शस्त्र भेजना था। जब वे शघाई गए तो नलसन के यागटिसीपू माग के मकान म ठहरे। और नेलसन के सहयोग से उन्होंने दो चीनियो को अस्त्र-शस्त्र तथा रसायनिक पदाथ बगाल ले जाने तथा उसे अमरेन्द्रनाथ चटर्जी को देने के लिए नौकर रखा पश्चिमी बगाल के गुप्तचर विभाग के रेकाड का देखने से पता चलता है कि १६ अक्टूबर, १९१५ को शघाई की पुलिस ने दो चीनी सदेहास्पद व्यक्तियों को गिरफ्तार किया। उनके पास १२९ पिस्तौल और बारह हजार राऊन्ड कारतूस थे। उन दानो चीनियो ने बतलाया कि व उन्ह एक एक स्थानीय जरमन फम ने पक करके कलकत्ता भेजने के लिए दिए थे। उसी रेकार्ड से यह भी पता चलता है कि व पिस्तौल और कारतूस कलकत्ता मे अमरेन्द्रनाथ चटर्जी (श्रमजीवी समवाय) तथा मनमोहन भट्टाचाय जो-हिन्दुस्तान सहकारी बैंक मे थे देने थे।

इस घटना के विषय मे सडीशन कमेटी रिपोट न पृष्ठ ८५ पर लिखा है कि दो चीनियो के पास १२९ आटोमटिक पिस्तौल थे और २०,८३० राऊन्ड कारतूस थे जो लकडी के तख्तो मे छिपा रखे थे। वे दोनो चीनी शघाई म अक्टूबर १९१५ मे पकडे गए इसके अतिरिक्त रासबिहारी ने अबनी नाथ मुखर्जी को भारत अपने अत्यन्त गोपनीय समाचार अपने मित्रो और सहयोगियो को बतलाने के लिए तय किया था। अबनीनाथ मुखर्जी जो बहुत दिनो से जापान मे रह रहा था, उसे भारत अत्यन्त गोपनीय सदेश ले जाने के लिए भगवान सिंह ने चुना था और उन्होने उसे रासबिहारी के पास शघाई भेजा था। रासबिहारी ने अबनी नाथ मुखर्जी को खूब अच्छी तरह समझा दिया था कि भारत म उसे क्या करना है। उसे रासबिहारी ने नामो की एक सूची भी दे दी थी जो उसने अपनी डायरी म लिख ली थी। परन्तु भारत जाते समय वह सितम्बर १९१८ म सिंगापुर म गिरफ्तार हो गया। इसके अतिरिक्त शघाई के जरमन कौसल को बतलाया गया था कि रासबिहारी भारत के क्रांतिकारियो के प्रमुख नेता

हैं अस्तु उनके पहुँचने से जरमन बौखला । अस्त्र-शस्त्रों से भर दो जहाज भी भारत भेजे परन्तु वे दोनों जहाज भारत पहुँचने से पूर्व ही पकड़ गए ।

शंघाई से लौटने के उपरांत उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण काय यह किया कि २७ नवम्बर, १६१५ को उपर्नो पाक ने टोकियो होटल में एक सभा की । इस सभा का आयोजन उन्होंने हेरम्बालाल गुप्त, लाला लाजपत राय तथा डाक्टर सौगुई ओकावा के सहयोग से किया था । उस सभा में बहुत बड़ी संख्या में जापानी गण्य मान्य जन भी आए थे । उस अवसर पर जापान का राष्ट्रीय झंडा फहराया गया और जापान के राष्ट्रीय गीत को गाया गया । उस सभा में भारत में ब्रिटिश शासन की काफी कटु आलोचना की गई विशेषकर लाला लाजपत राय ने अपने भाषण में ब्रिटिश शासन की जसी तीव्र निंदा की कि जापान में ब्रिटिश राजदूत बौखला उठा । उसने जापानी सरकार पर ब्रिटिश सरकार का इतना अधिक दबाव डलवाया कि जापान सरकार को रासबिहारी बोस को जापान से निष्कासित करने का वारंट निकालना पड़ा ।

भारत में ब्रिटिश शासन विरोधी उस सभा में जापान के सर्वोच्च समुराई राजनीतिक नेता तोयामा भी उपस्थित थे । रासबिहारी बोस का जापान से निष्कासित करने के लिए ब्रिटेन के दबाव से वारंट निकाला गया सा वे तोयामा के पास गए । जापान सरकार ने रासबिहारी बोस को जापान छोड़ देने के लिए केवल पाँच दिन का समय दिया था । उन पाँच दिनों में केवल दो जहाज ही जापान से जा रहे थे एक जहाज 'ब्लाडीवास्टक' रूस को जा रहा था और दूसरा जहाज शंघाई को जा रहा था । यह निष्कासन की आज्ञा ब्रिटेन के दबाव से ही निकाली गई थी और सुनियोजित थी । यदि रासबिहारी बोस ब्लाडीवास्टक जाते तो जार की रूसी सरकार जो ब्रिटेन का मित्र राष्ट्र था उनको गिरफ्तार करके ब्रिटेन के सुपुर्द कर देता और यदि वे शंघाई जाते तो वहाँ तो ब्रिटिश सरकार उन्हें गिरफ्तार कर ही लेती । क्योंकि वहाँ ब्रिटेन की पुलिस थी ।

रासबिहारी जापानी नेता तोयामा के सहयोग से निष्कासन की आज्ञा निकलते ही छिप गए । तोयामा ने उन्हें एक सोमा के यहाँ गुप्त रूप से रहने की व्यवस्था करवादी । बाद को सोमा की लड़की से उन्होंने शादी कर ली । यह शादी भी राजनीतिक उद्देश्य से की गई थी जिससे रासबिहारी को जापानी नागरिकता मिलने में सरलता हो ।

यद्यपि सरकार ने चार महीने के उपरांत निष्कासन की आज्ञा को वापस ले लिया (अप्रेल १६१६) परन्तु रासबिहारी खतरे से घिरे थे । जापान में ब्रिटिश दूतावास उन्हें या तो मरवा देना चाहता था या उन्हें बल पूर्वक अपहरण करवा लेना चाहता था, रासबिहारी बोस का ब्रिटिश राजदूतावास के एजेन्टों से बहुत खतरा था । इस कारण वे आठ वर्ष तक जापान में गोपनीय ढंग से रहे, १६१६ से १६२३ तक आठ वर्ष में उन्होंने सत्रह बार अपना निवास स्थान बदला । ऐसे सतर्क और सावधान रहकर ही वे अंग्रेजों के हाथों में पड़ने से बच सके । उनकी पत्नी सोमा उनकी बहुत बड़ी सहायक थी ।

रासबिहारी के सम्बन्ध में डी पेटी की रिपोर्ट अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है जिसके अंश हम यहाँ देते हैं । डी पेटी को भारत सरकार ने सुदूर पूर्व में भारतीय क्रान्तिकारियों

के कार्यों पर रिपोर्ट देने के लिए १९१६ म भेजा था। वे सुदूर म भारत सरकार क मुख्य गुप्तचर अधिकारी थ। उन्होंने रासबिहारी के सम्बन्ध मे १९१७ म नीचे लिखी रिपोर्ट दी। जापान मे यदि कोई वास्तविक महत्वपूर्ण क्रांतिकारी दृष्टिगोचर होना है तो वह रासबिहारी बोस उपनाम पी एन ठाकुर है जो जापान सरकार के शासन म रहता है। और क्योंकि वह अपने निवास के सम्बन्ध मे कठिन गोपनीयता रखता है और इसके कारण उसे जो अपने आने जाने की स्वतन्त्रता पर कठोर अंकुश रखना पडता है वह सक्रिय क्रांतिकारियो की सूची मे नही रक्खा जा सकता। परन्तु इसके यह अर्थ कदापि भी नही है कि बोस निष्क्रिय हैं। परन्तु उनके गोपनीय रहने के स्वय के तरीके से उन्ह जो अपने ऊपर जो सावधानी की शर्तें आरोपित करनी पडी उससे वे अपने क्रांतिकारी दल के लिए अधिक उपयोगी नही रहे।

जुलाई के अन्त मे बोस टोकियो से पूर्ण रूप से अन्तरध्यान हो गए। क्योंकि टोकियो मे उनका निवास स्थान ब्रिटिश अधिकारियो को ज्ञात हो गया था। दिसम्बर, १९१७ के अन्त म हिज-मैजस्टी के वायस कौसल डविडजन बहुत खोज के उपरात पता लगा सके कि वे 'ओक्टिमू' मे है जो पूर्वीय समुद्र तट पर कटसुरा नामक कस्बे के समीप एक छोटा-सा गाव था। जसे ही उनके निवास स्थान का पता लगा वे तुरत टोकियो चल गए। जहा ऐसा विश्वास किया जाता है कि व जापान के सम्राट लार्ड हाई चैम्बरलन के मकान के बहुत बडे कोट याड मे छिपे रहे। यह सम्भव है कि उनका कोई कर्मचारी बोस को छिपाये हो और उनको यह न ज्ञात हो। वहा रासबिहारी ने अपना नाम 'हयाशी इचरो रख लिया था।'

जापान मे रासबिहारी की गुप्त कार्यवाहियो के सम्बन्ध मे पैटी ने अपनी रिपोर्ट म लिखा है।

जो रासबिहारी के नाम आए पत्र गुप्तचरो ने पकडे उनसे स्पष्ट पता चलता है कि बोस का अमेरिका के षडयन्त्रकारियो के नेता जसे नरेन्द्र भट्टाचार्य और रामचन्द्र से निकट का सम्बन्ध था और वे अब भी क्रांतिकारी कार्य करते हैं। उनकी कठिनाइया जितना उन्हे करने की अनुमति देती हैं। रासबिहारी बोस श्री तारकनाथ दास से भी सम्पर्क म रहे जब तारकनाथ दास चार महीने अमेरिका म १९१७ म रहे और वह बोस को जापान से श्रेष्ठ और बडा मानते थ। दोनो ने एक योजना जहाजो को डुबाने की बनाई थी। जहाजो को डुबाने के लिए उन पर बम रखने का प्रस्ताव था परन्तु उन जहाजो पर विमर्श हुआ किन्तु वह कार्य रूप म परिणित नही हो सकी। जब पुलिस ने तारकनाथ दास के ४४ पोरटोला स्ट्रीट न्यूयार्क के मकान की सान फ्रांसिस्को के प्रसिद्ध अभियोग के सम्बन्ध म तलाशी ली तो रासबिहारी बोस का एक पत्र मिला जिससे यह सिद्ध होता है कि उनका भारतीय क्रांतिकारियो म बहुत निकटता थी। भारत और जरमन षडयन्त्र के एक नेता चन्द्र कान्त चक्रवर्ती ने भी बतलाया कि उन्हे भी इस बात म जब वे अमेरिका म थे तो रासबिहारी बोस के पत्र मिलते थे।

यह बात स्मरण की बात है कि सन १९२३ म रासबिहारी बोस को जापान की नागरिकता प्राप्त हो गई तो भी उनके दिन रात की आवश्यकता हुई। कई बार अपनी गुप्तचरी। उनका षडयन्त्र आचरण करने की चेष्टा की। पर जापान

की नागरिकता मिल जाने पर रासबिहारी बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने जापान की नागरिकता मिलने पर अपनी हार्दिक प्रसन्नता सुरेशचन्द्र घोष को एक पत्र में इस प्रकार व्यक्त की 'तुम सम्भवतः यह जानकर प्रसन्न होगे कि मुझे यहां की नागरिकता प्राप्त हो गई है। इसके परिणाम स्वरूप मैं अब संसार के देशों का भ्रमण कर सकूंगा। केवल ब्रिटेन के शासन में जो देश हैं वहां मैं नहीं जा सकूंगा।' जापान की नागरिकता मिल जाने पर वे जापान के सार्वजनिक जीवन में खुलकर भाग लेने लगे। उन्होंने जापान में राजनैतिक, सामाजिक और शैक्षणिक जीवन में बहुत कार्य किया और टोकियो में वे अपनी मातृभूमि भारत को ब्रिटेन की दासता से मुक्त करने के लिए संगठन करने लगे।

उन्होंने जापान के कई विश्वविद्यालयों से सम्बन्ध स्थापित कर लिया अनेक साहित्यिक संस्थाओं से उनका निकट सम्बन्ध स्थापित हो गया। उन्होंने भारत तथा एशिया की राजनैतिक स्थिति के सम्बन्ध में अनेक पुस्तकें लिखीं। वे जापानी भाषा में धारा प्रवाह भाषण देते थे। वे जापान में एक कुशल और प्रतिष्ठित वक्ता माने जाते थे। वे भारत के सम्बन्ध में जापान में साहित्य प्रकाशित करते थे। उन्होंने जापान के राजनैतिक, शैक्षणिक, सामाजिक तथा संस्कृति से ऐसी गहन एकात्मकता उत्पन्न कर ली थी कि जापान के प्रसिद्ध विद्वान साहित्यिक समाजिक कार्यकर्त्ता राजनीतिज्ञ उनका आदर करते थे। श्री विनोद बिहारी मुखर्जी (शान्ति निकेतन के प्रसिद्ध चित्रकार) जब १९३७ में जापान गए तो जापान के प्रसिद्ध चित्र संग्रह करने वाले कबाता ने उन्हें परामर्श दिया कि यदि वे जापानी शिष्टाचार सीखना चाहते हैं तो उन्हें रासबिहारी बोस के पास जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस सम्बन्ध में बहुत कम जापानी उनकी समता कर सकते हैं। रासबिहारी का बाह्य स्वरूप एक जापानी का परन्तु अन्तर में वे भारत माता के एक सच्चे सपूत थे जिसकी स्वतन्त्रता के लिए उन्होंने अपना जीवन अर्पण कर दिया था।

टोकियो में अपने मकान के देवदार के वृक्षों के झुरमुट में उन्होंने एक शिला-लेख लगवाया था। जिस पर उनके मित्रों और साथियों के नाम अंकित थे जिन्होंने भारतमाता को स्वतन्त्र करने के लिए अपने को बलिदान कर दिया था। रासबिहारी उस शिलालेख के पास बैठकर ध्यान करते थे। शान्तिनिकेतन के बेसिक टीचर्स ट्रेनिंग कालेज के श्री सोमेन्द्रनाथ राय जापान में तीन वर्ष (१९३४-३७) तक "एशिया लाज' नामक छात्रावास में रहे थे जिसे रासबिहारी बोस ने बनाया था। उसमें एशियाई देशों के छात्र जो जापान में अध्ययन करने जाते थे, रहते थे। श्री सोमेन्द्रनाथ राय जापान में तीन वर्ष तक एक विशेष प्रकार की फोटोग्राफी की शिक्षा प्राप्त करने गए थे। उनके पास रासबिहारी के कई चित्र उस शिलालेख के पास ध्यानावस्था में बैठे-ध्यान करती हुई अवस्था के थे।

अध्याय नवां

बोस का तोशिको से विवाह

श्रीमती कोक्कोह सोमा ने रासबिहारी बोस के साथ उनकी पुत्री तोशिको के विवाह का रोचक तथा विस्तृत वर्णन निम्नलिखित शब्दो मे लिखा है। *

२८ नवम्बर, १६१५ का दिन था। मुझे ज्ञात हुआ कि एक निस्सहाय तरुण भारतीय क्रांतिकारी को पुलिस जापान से निष्कासित कर रही है। उसे पाच दिन के अन्दर जापान को छोडकर चले जाने की आज्ञा हुई है। (उस समय जापान सरकार के अध्यक्ष मार्किस ओकुमा थे।) उस तरुण क्रान्तिकारी कि निष्कासित करने और उसको ब्रिटिश सरकार के सुपुर्द कर देने का अर्थ था उसकी मृत्यु। (उन पाच दिनो मे जापान से केवल दो जहाज जाने वाले थे एक समुद्री जहाज व्लाडिवास्टक को और दूसरा शघाई को जाने वाला था। वह एक सुनियोजित जाल था। यदि वह व्लाडिवास्टक जाता तो जार सरकार उसको गिरफ्तार करके ब्रिटिश सरकार को सुपुर्द कर देती और यदि वह शघाई जाता तो ब्रिटिश पुलिस उसे गिरफ्तार कर लेती।

उन दिनो म मैं अपने पति के साथ मदव अपनी दुकान (स्टोर) मे काम करती थी। मेरे पति उस समय एक भारतीय के सम्बन्ध मे यह समाचार सुनकर अत्यन्त खिन्न हो गए। वे उस भारतीय के भविष्य के बारे म बहुत चिंतित हो गए। प्रात काल उन्होंने निरोकू समाचार पत्र के सम्पादक श्री नकामुरा को जा पकडा और उस निष्कासित भारतीय के भविष्य के बारे म उनसे पूछा —

"क्या यह खेद और लज्जा की बात नही है कि वह भारतीय युवक को जापान से जाना पडेगा।'

श्री नकामुरा ने उत्तर दिया "वास्तव मे यह अत्यन्त खेदजनक है। हमारे विदेश मत्री की ब्रिटिश राजदूत के प्रति दास मनोवृत्ति हमारे राष्ट्र के लिए महान

* विप्लवी महानायक रासबिहारी बसु स्मारक समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तक रासबिहारी–बसु पृष्ठ २७

अपयश की बात है। परन्तु अब इसमे कुछ नही किया जा सकता यद्यपि श्री तोयामा की यह हार्दिक इच्छा है कि उसको किसी प्रकार बचाया जावे।

मेरे पति श्री नकामुरा से अत्यन्त गम्भीरता पूर्वक इस सम्बन्ध मे बात कर रहे थे। मैं ग्राहको से बात करने म लगी हुई थी इस कारण मैं यह नही जान सकी कि मेरे पति ने क्या प्रस्ताव किया। उसके उपरात मेरे पति किसी काय से बाहर चले गए।

परन्तु कुछ ही घन्टो के बाद श्री नकामुरा बहुत शीघ्रता मे आए और मेरे पति से उन्होने मिलना चाहा। तब मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे पति ने श्री नकामुरा से क्या प्रस्ताव किया था। परन्तु मुझे अथवा दूकान के किसी भी आदमी को यह नही मालूम था कि वे कहां हैं। जहां भी उनके होने की सम्भावना थी हमने सभी जगह फोन किए परन्तु वे कही नही मिले।

एकाएक फोन की घटी बज उठी। मेरे पति फोन पर थे। मैंने उनसे कहा आप कहां हैं। हम आपको इतनी देर से खोज रहे हैं। आप तुरत यहा आइए। आपने श्री नकामुरा से कल प्रात काल एक अत्यन्त गम्भीर प्रस्ताव किया था। वे आपसे उस सम्बन्ध म मिलना चाहते हैं।

उन्होंने जवाब दिया "मैं आ रहा हू" और यह कह कर फोन रख दिया।

टोकियो के समाचार पत्रो ने रासबिहारी बोस और उनके मित्र हेरम्बालाल गुप्त के गायब हो जाने का समाचार छाप दिया था। हम लोग केवल मात्र इस समाचार के पढने वाल ही नही थे बल्कि हम इस गम्भीर और बडे अन्तर्राष्ट्रीय मामले म पूरी तरह से लिप्त थे।

मैं यह नही समझ सकी कि क्या और कैसे मेरे पति जो कि एक साधारण दुकानदार थे के प्रस्ताव को श्री तोयामा जैसे महान नेता ने स्वीकार कर लिया। (जब रासबिहारी बोस तथा हेरम्बालाल गुप्त के निष्कासन की आज्ञा निकली तो लाला लाजपतराय ने चीनी नेता डाक्टर सनयात से परामश किया। डाक्टर सनयात सेन ने दोनो को जापानी नेता श्री तोयामा के सरक्षण मे दे दिया।

उस समय श्री तोयामा का मकान जिसम बहुत बडा बाग था टोकियो नगर के मध्य मे स्थित था। श्री तोयामा का मकान प्रो तेरायो की बगल म था। रासबिहारी बोस तथा हरम्बालाल गुप्त, प्रो तेरायो के मकान मे उद्यान मे से होकर आए थे वे उस समय छद्म वेष मे थे। बोस ने तोयामा का हैट (टोप) तथा किमोनो (जापानी चोगा) पहन रक्खा था और गुप्त श्री तुकुदा का भारी ओवर कोट धारण किए हुए थे। उनके साथ जापान के राष्ट्रीय क्रातिकारी नेता तुकुदा और मियागावा थे। उन सबो ने प्राफेसर तेरायो के मकान के पीछे के उद्यान को पार किया और श्री तोयामा के मकान के पीछे के दरवाजे से (जिसका उपयोग लगभग नही होता था) निकल गए। वहा जो मोटरगाडी उनकी प्रतीक्षा कर रही थी उसमें बैठ गए। मेरे पति श्री तोयामा के मकान के पोच और सामने के फाटक से निकले और सामने से निकलकर पीछे के फाटक की ओर गए और उनके साथ कार मे घर वापस आ गए।

श्री तोयामा के मकान के सामने दो मोटर गाडिया खडी थी। एक कार तो

पुलिस के प्रिफेक्ट की थी और दूसरी कार वह थी जिसमें बोस और गुप्ता तोयामा के मकान तक आए थे। अनेक वर्दीधारी पुलिस मैन तथा सादे वस्त्रों में गुप्तचर सायंकाल तक बोस और गुप्ता की प्रतीक्षा में खड़े रहे पर वे नहीं निकले।

जब अंधकार छा गया और तोयामा के मकान के सब दरवाजे तथा खिड़कियां बंद हो गईं तो पुलिस ने और प्रतीक्षा नहीं की वे पोर्च में आए और उन्होंने दोनों भारतीय निष्कासितों के बारे में पूछा। एक नौकर ने उत्तर दिया कि वे दोनों कुछ घंटे पूर्व ही चले गए। पुलिस यह सुनकर अत्यन्त भयभीत हो गई। पुलिस ने अपने सिपाहियों को इकट्ठा किया और श्री तोयामा का बहुत बड़ा मकान तथा विस्तृत उद्यान घेर लिया परन्तु वे एक ऐसे व्यक्ति के मकान में घुस कर तलाशी लेने का साहस नहीं कर सके जो सम्पूर्ण देश में श्रद्धा और आदर का पात्र था। यद्यपि दोनों निष्कासितों के दो जोड़े जूते पोर्च में तब भी पड़े थे।

श्री तोयामा उस समय अपने अध्ययन कक्ष में थे। बाहर शोर शराबा सुनकर उन्होंने कहा "यह बहुत खराब हुआ। यदि इस कारण उनको बरखास्त किया गया तो मुझे उनके लिए कुछ करना होगा।"

उन्होंने उस कार का किराया चुका दिया जो श्री बोस तथा गुप्ता के लिए थी।

जिस गाड़ी में रासबिहारी बोस तथा उनके मित्र श्री तोयामा के मकान से चले थे वह डाक्टर सुगियामा की मोटर थी। उस समय जापान भर में कोई उससे तेज चलने वाली मोटर नहीं थी जो उसकी गति को पा सकती।

सायंकाल के नौ बजे थे। हमारी दूकान के दरवाजे बन्द किए जा रहे थे पर जैसा कि बहुधा होता था अभी तक कई ग्राहक मौजूद थे जिनको चीजें देनी थीं। उसी समय चारों बोस, गुप्ता, तुकुदा और मियागावा दूकान पर आए और अन्दर आ गए। कुछ मिनटों के उपरांत ही चार व्यक्ति बाहर निकले और कार में बैठ कर चल गए। अब तक अन्धकार गहन हो गया था। किंतु इस कार जाने वालों में तीन हमारे क्लर्क थे और चौथे व्यक्ति श्री तुकुदा थे।

उस कार के स्वामी डाक्टर सुगियामा, श्री रासबिहारी बोस तथा हेरम्बालाल गुप्ता के सम्बन्ध में चिंतित थे। जब ड्राइवर कार लेकर घर वापस लौटा तो उन्होंने उससे बोस और गुप्ता के बारे में पूछा उसने उत्तर दिया "मैं श्री तुकुदा और उनके तीन मित्रों को स्यूजिकी स्टेशन के निकट नकामुराया के यहां ले गया था वहां उन्होंने कुछ खरीददारी की और पुनः योतुया वापस आए और वहां श्री तुकुदा को छोड़कर शेष तीन यह कह कर चले गए कि हम टहलना पसन्द करेंगे। मैं, श्री तुकुदा को उनके मकान ले गया।

दूसरे दिन प्रातः मेरे पति ने अपने सभी नौकरों को अपने पास बुलाया। वे हमारे यहां कुछ वर्षों से काम करते थे और उनसे कहा "मित्रो मैं एक बड़े खतरे का काम करने जा रहा हूं। सम्भवतः यह अत्यन्त भयंकर खतरा मेरे जीवन का सबसे बड़ा खतरा हो। मैं उन दो निस्सहाय भारतीयों को जिन्हें जापान सरकार ने निष्का-

सिन कर दिया है छिपाने जा रहा हूँ। उन दोनों भारतीय क्रांतिकारियों को मैं अपने पुराने तहखाने में छिपाने जा रहा हूँ। यह एक राजनीतिक और मानवीय मामला है। हम जापानी अपनी आँखों के सामने मरते नहीं देख सकते।

किसी ने भी कोई आपत्ति नहीं उठाई। नौकर सभी इस निर्णय से बहुत प्रसन्न थे। एक स्वर से उन्होंने कहा मालिक बहुत अच्छा। हम आपकी इसमें सहायता करेंगे और उनकी चाहे जो भी खतरा क्या न हो रक्षा करेंगे। फिर चाहे हमारे प्राणों पर ही संकट क्या न हो। यदि हम पर आक्रमण किया गया तो हम मृत्यु पर्यन्त बलपूर्वक उनकी रक्षा करेंगे। जब हम लड़ रहे हों उस समय आप उन्हें सुरक्षित जगह ले जावें और उनकी रक्षा करें। हम आपको वचन देते हैं और आश्वस्त करते हैं कि हम आपकी इस कार्य में सहायता करेंगे। वे सभी भावना प्रधान और उत्साहित थे।

मैंने अपनी दो नौकरानियों में से एक को बोस का काम करने के लिए नियुक्त कर दिया।

सौभाग्यवश हमारे परिवार में बहुत सदस्य और नौकर थे और हमारे स्टोर तथा घर में सर्वदा कतिपय मित्र तथा ग्राहक बने रहते थे। हमारे यहाँ बहुधा विदेशी भी आया करते थे इस कारण यदि हम विदेशियों के लिए खाद्य सामग्री अथवा भोजन खरीदते थे तो कोई संदेह नहीं करता था।

एकाकी रहने के कारण बोस को जीवन कष्टकर प्रतीत होता था वे जापानियों में अजनबी थे और जापानी भाषा न जानने के कारण उनसे बातचीत भी नहीं कर सकते थे। मैं बहुत कम अंग्रेजी जानती थी। परन्तु मैं बोस के पास अधिक और लम्बे समय के लिए नहीं रह सकती थी क्योंकि मुझे दिन भर स्टोर में काम करना पड़ता था। मैं जब भी दिन में बोस के पास जाती तो मेरे ग्राहक पूछते श्रीमती कोकोह सोमा कहाँ हैं? आजकल वे दिखलाई नहीं पड़तीं अथवा श्रीमती सोमा कुछ देर स्टोर में रहकर गायब हो जाती हैं। इस कारण मुझे स्टोर में ही रहना पड़ता और अंग्रेजी में स्लिप लिखकर भेजती। उनको मौसम बदलने पर सलाह देने के लिए अथवा यह पूछने के लिए कि वे भोजन क्या खायेंगे? मुझे उन्हें अंग्रेजी में स्लिप लिखनी पड़ती थी। मैं इस प्रकार के स्लिप सावधानी और गुप्त रूप से भेजती थी। मैं उनके लिए भोजन उसी तहखाने में अपने नौकर से बनवाती थी।

(यद्यपि श्री रासबिहारी तहखाने में एकांत जीवन व्यतीत करते थे परन्तु वे अपने भारतीय सहयोगियों श्रीपचन्द्र मोतीलाल राय और शचीन से पत्र व्यवहार द्वारा सम्पर्क बनाए हुए थे।)

पुलिस अधिक कड़ाई के साथ दोनों भारतीयों के गायब हो जाने के मामले की जाँच कर रही थी। कई महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के लोगों की पुलिस आफिस में जाँच हो रही थी अथवा उनको हिरासत में ले लिया गया था। ब्रिटिश राजदूतावास जापान के विदेशी मंत्रालय को भारतीय क्रांतिकारियों के गायब हो जाने के लिए दोषी ठहराता था और उस पर प्रहार करता था। इस सम्बन्ध में तरह-तरह की अफवाह मनुपेन्सित क्षेत्र में फैली हुई थी। समस्त वायुमंडल अफवाहों से भरा हुआ था।

एक दिन वसेदा विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर हमारे स्टोर में आए और मेरे पति से बोले 'मैं जानता हूं कि श्री बोस और उनके मित्र कहां है।' मेरे पति उनके इस कथन से भौंचक्के हो गए। उन्होंने पूछा कि वे कहां हैं। तो उन प्रोफेसर ने कहा कि वे यूनीवर्सिटी के प्रेसीडेंट के मकान में हैं। यह सुनकर मेरे पति आश्वस्त हुए। बात यह थी कि "काऊंट ग्रोकूमाट विश्वविद्यालय के अध्यक्ष भारत जापान समिति के भी अध्यक्ष थे। इस कारण लोग उन पर संदेह करते थे। बहुत से महत्वपूर्ण व्यक्तियों पर उस समय संदेह किया जा रहा था।

विदेशमंत्री ने श्री निसिक्टो पुलिस प्रिफेक्ट पर बहुत दबाव डाला तो पुलिस अधिकारियों ने टोकियो नगर में मांस की दूकानों के ग्राहकों की जांच पड़ताल करने के लिए गुप्तचरों का एक दल लगा दिया। पर उस समय जापान में यह तथ्य किसी को ज्ञात नहीं था कि भारतीय मांस नहीं खाते।

किंतु जब ब्रिटिश लड़ाकू जहाज ने हांगकांग को जाने वाले स्टीमर पर ६ निर्दोष और निस्सहाय यात्रियों को उठाने के लिए गैर कानूनी और निर्दयतापूर्ण आक्रमण किया तो समस्त जापान में ब्रिटेन के विरुद्ध हो गई इस कारण जापान के विदेश मंत्रालय को भी अपनी नीति में परिवर्तन करना पड़ा। अस्तु साढ़े चार महीनों के उपरांत रासबिहारी बोस तथा हेरम्बलाल गुप्ता पर से निष्कासन के आदेश वापस ले लिए गए। अब बोस स्वतंत्र थे व जापान में रह सकते थे। उस समय मैं अपने नवजात पुत्र की मृत्यु के शोक तथा बोस को छिपाकर रखने की मानसिक चिंता तथा थकान से मैं रोग ग्रस्त थी।

जब रासबिहारी बोस हमारे यहां आए उसके दो सप्ताह के उपरांत मेरे बच्चे की मृत्यु हो गई। घोर मानसिक तनाव तथा स्नायु दौर्बल्य के कारण मेरा दूध सूख गया मैं उस नव जात शिशु को यथेष्ट दूध नहीं पिला सकी। उसकी मृत्यु के उपरांत मेरे मन पर यह चिंता बोझ बनी रही कि मुझ पर पुलिस को संदेह है मुझ पर सब गुप्तचरों की दृष्टि रहती है। इस मानसिक चिंता और भार के अतिरिक्त बच्चे की मृत्यु से मां को जो स्वाभाविक शोक और पीड़ा होती है उसने मुझे रोगी बना दिया था। फिर भी मुझे स्टोर में खड़े होकर काम करना पड़ता था क्योंकि मुझे भारत से आए हुए महत्वपूर्ण अतिथि की सुरक्षा करनी थी। अस्तु जब निष्कासन की आज्ञा वापस ली गई तो मैं रोग शय्या पर पड़ी थी।

अप्रैल १९१६ के उस प्रात काल जब कि श्री बोस हमारे घर से जा रहे थे तो वे मेरे सोने के कमरे में विदा लेने आए क्योंकि मैं नीचे नहीं जा सकती थी।

वे जापानी किमोनो और समुराई में जो विशेष उत्सव के समय पहनी जाती है और जो हमने इस दिन के लिए उनके लिए बनवाई थी कितने भव्य और सुंदर लग रहे थे। वे वास्तव में भव्य थे।

उन्होंने नीचे लिखे शब्दों में विदा ली।

'प्रिय मां मैं नहीं जानता कि किन शब्दों में मैं आपको धन्यवाद दूं मेरी रक्षा करने के लिए आपने अपने प्रिय बालक को खो दिया। मां अपनी गहन कृतज्ञता को व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।"

उन्होंने मुझे मा वहा मैं बोल नही सकी । हम दोना एक दूसरे के हाथ पकड कर रोते रहे । मैं उनको विदा करने के लिए नीचे उतर कर नही जा सकी । परन्तु मैं खिडकी से उनकी कार को आंसू भरी आंखो से देखती रही।

मैंने अपना बच्चा खो दिया परन्तु मैंने महान भारत माता की आत्मा से निकट का सम्बन्ध स्थापित कर लिया ।

निष्कासन की आज्ञा वापस लिए जाने पर भी ब्रिटिश दूतावास से बोस का बच सकना असम्भव था। * हमारे मकान से चले जाने के बाद भी जब तक कोई व्यक्ति उनके साथ रात दिन न रहे उनकी ब्रिटिश दूतावास के चुगल से रक्षा नही हो सकती थी । वे अब भी अजनबी थे और उनके लिए न पहचाना जाना कठिन था । मेरे पति उनके साथ रहते थे पर वे ऐसा सर्वदा तो कर नही सकते थे । हमारे लिए एक कठिन समस्या थी कि उन्हे ब्रिटिश दूतावास के चुगल से कैसे बचाया जाय ।

एक दिन श्री तोयामा ने हमारे सामने यह प्रस्ताव रखा कि हम अपनी बडी लडकी की शादी श्री बोस से कर दें । इस अप्रत्याशित प्रस्ताव से हम पहले तो अस्थिर हो गए । कई दिनो तक हम इस पर विचार करते रहे । हम बोस को अपने पुत्र की तरह ही प्यार करते थे । वह हम माता पिता कहते थे । हमारा बोस के प्रति प्रेम असाधारण था । परन्तु हमने कभी उनसे अपनी ज्येष्ठ लडकी तोशिको से विवाह करने की कल्पना भी नही की थी ।

तोशिको अभी छोटी थी । वह स्कूल में पढ रही थी । हम इतने गम्भीर प्रश्न पर अपना निर्णय देने के लिए किस तरह कह सकते थे ।

परन्तु हमने अनुभव कर लिया कि बोस को बचाने का और कोई रास्ता नही है क्योकि ब्रिटिश दूतावास के किराये के गुप्तचर उनका बडी सतर्कता से पीछा कर रहे थे । बोस बहुत खतरे मे थे ।

हमने भगवान से प्रार्थना की कि तोशिको इस खतरनाक मिशन को, इस खतरे को चालीस करोड भारतीयों के लिए उठाना स्वीकार कर ले ।

अन्त मे मैंने श्री तोयामा के प्रस्ताव के बारे मे तोशिको से बात की ।

तोशिको ने उत्तर दिया मा मुझे इस पर सोचने का समय दीजिए ।

एक महीने के बाद वह दिन आ गया जबकि मुझे श्री तोयामा को जवाब देना था । मैंने तोशिको को अपने कमरे मे बुलाया और उसके निर्णय के बारे में पूछा । मैंने उससे अपनी स्वतन्त्र इच्छा से जो कुछ उसको निर्णय करना हो निर्णय करने के लिए कहा । उसने मुझसे दृढ शब्दो में कहा 'मा मुझे बोस के पास जाने दीजिए उनके शरीर की रक्षा के लिए उनकी ढाल बनने दीजिए । मैंने निश्चय कर लिया है ।

उसके उपरात हमने बोस से पूछा कि क्या वे तोशिको से विवाह करेंगे और क्या वे अविवाहित हैं । क्योकि हमने सुना था कि भारत मे बहुत जल्दी विवाह हो जाते हैं ।

---

* ब्रिटिश दूतावास ने निजी गुप्तचरो के एक दल को श्री रासबिहारी बोस को पकडने के लिए रखा था और उनकी गिरफ्तारी के लिए एक बडे पारितोषिक की घोषणा की थी परन्तु श्री तोयामा ब्रिटिश दूतावास के एजेन्टो को परास्त करते रहे।

नही मै विवाहित नही हू । प द्रह वप की आयु म मैंने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत को स्वतन्त्र करने के लिए अर्पण करने का निश्चय कर लिया था। तब से मैंने कभी विवाह के बारे म सोचा ही नही क्योंकि मेरी पत्नी और बच्चे मेरे भारत से चले जाने के पश्चात ब्रिटिश सरकार द्वारा यातना के शिकार बनते। इसके अतिरिक्त मैं अब वैवाहिक जीवन की किस प्रकार कल्पना कर सकता हू। परन्तु यदि श्री तोयामा की इच्छा है और कुमारी तोशिको सहमत है तो उनकी इच्छा मुझे शिरोधाय है।

जब श्री तोयामा ने सुना कि दोनो विवाह करने के लिए दृढ निश्चय हैं तो वे बहुत प्रसन्न हुए और उन्होने कहा कि मैं उन दोनो की रक्षा करने का प्रयत्न करूगा।

अस्तु श्री रासबिहारी बोस और तोशिको का जुलाई १६१८ म विवाह हो गया। विवाह श्री तोयामा की अध्यक्षता मे हुआ पर विवाह गुप्त रूप से हुआ। क्योंकि मैं बीमार थी मेरे १६ वर्षीय पुत्र टिकाका ने विवाह की सारी तैयारी की। सारा सामान गुप्त रूप से भेजा गया। तोशिको अपने पिता के साथ गई। सोमा परिवार की सब से बडी लडकी का यह कैसा एकाकी प्रस्थान था। मैं उसके साथ नही जा सकी। मैने उसको अपने सोने के कमर की खिडकी से जाते देखा और विदा किया। यदि कोई भी जो जापान म सात वप रह लेता है तो जापान का नागरिक बनने का दावा कर सकता है। नागरिकता का यही कानून है। परन्तु इसका कोई राजकीय प्रलेख नही था कि श्री बोस जापान मे सात वप रह हैं। श्री तोयामा ने इस बात को प्रमाणित कर दिया कि वे जापान म आठ वप रहे हैं। उनके लेख को राजकीय प्रलेख मान लिया गया और उन्हे जापान की नागरिकता मिल गई।

२ जुलाई, १६२३ को आठ वर्षो की लम्बी अवधि के उपरात जब रासबिहारी बोस को जपानी नागरिकता मिली और एकाकी जीवन तथा गोपनीयता से स्वतन्त्रता मिली फिर भी वे निरापद नही थे। उन्हे ब्रिटिश दूतावास के दलालो के हाथो मारे जाने तथा अपहरण कर्त्ताओ से बचने के लिए सत्रह बार से अधिक अपना मकान बदलना पडा था। नागरिकता प्राप्त कर लेने के उपरात वे स्थाई रूप से एक मकान ले सके थे।

[किसी मकान मे तो वे केवल दो चार दिन ही रह सके। कुछ मकानो म वे केवल कुछ महीने ही रह सके और किसी भी मकान म दो वप से अधिक नही रहे सके।]

परन्तु उनकी पत्नी तोशिको इस तनाव भरे जीवन के भार को वह न सह सकी और चल बसी। तोशिको की ४ मार्च, १६२५ को मृत्यु हो गई। वे उस समय केवल अट्ठाईस वप की थी। उन्होने वैवाहिक जीवन के सुख और आनन्द को नहा जाना वे अपने पीछे एक पुत्र और एक पुत्री को छोड गई। उनका जीवन अत्यन्त अल्प और कष्टकर रहा।

(यह ठीक है कि वे गोपनीयता तथा मारे जाने या अपहरण के भय से वैवाहिक जीवन का सुख नही भोग सके। परन्तु उनके रास्ते म दूसरी रुकावट रूढ़िवाद तथा विभिन्न देशो के होने की भी थी।)

तोशिको की मृत्यु के उपरान्त हमने उनके बच्चो के पालन का उत्तर दायित्व ले लिया जिससे कि बोस अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के काय का पूरा समय लगाकर कर सकें।

दस वर्षों के उपरांत मैंने श्री बोस से कहा 'अब तुम्हें नए वैवाहिक जीवन में प्रवेश करना चाहिए। हम दोनों बच्चों की देखभाल बिना कठिनाई के कर सकते हैं। वे अब बड़े हो गए हैं।'

वास्तव में ऐसी अनेक जापानी युवतियां थीं जो श्री बोस के व्यक्तित्व तथा उनकी उदात्त भावना से प्रभावित थीं, उनसे विवाह करके उनके महान कार्य में उनकी सहायता करने के लिए तैयार थीं।

दूसरा विवाह करने के प्रस्ताव को सुनकर वे हँसे। उन्होंने कहा —

"मां, तोशिको का प्यार पुनः पा सकना असम्भव है। यह विचार ही मुझे अत्यन्त पीड़ाजनक प्रतीत होता है। मेरे प्रिय माता पिता हैं। वह यथेष्ठ है मैं सुखी हूँ। जिस प्रकार मेरे आठ प्रिय वर्षों में जबकि मैं छिप कर रहता था तोशिको मेरे साथ थी वह आज भी सदैव मेरे साथ है। इसके अतिरिक्त मेरा जीवन मेरा नहीं है मैंने उसे अपनी मातृभूमि को समर्पित कर दिया है। तोशिको के साथ जो मैंने आठ वर्ष व्यतीत किए उस जीवन से मैं उस समय संतुष्ट था और आज संतुष्ट हूँ। वह मेरे लिए यथेष्ठ से अधिक है।

श्री रासबिहारी बोस से यह शब्द सुनकर मैंने अपनी स्मृति में रहने वाली तोशिको से कहा। "तोशिको तुम कितनी भाग्यशाली और सुखी लड़की हो। श्री बोस वास्तव में महान हैं वे तुम्हारी अपेक्षा अधिक ऊंचे व्यक्ति हैं। क्या ऐसा नहीं है? तुम सुखी हो, क्या ऐसा नहीं है?

बोस का भी कहना ठीक था "कि तुम जापानियों के प्रेम और सहानुभूति के बिना मैं कभी का मर गया होता।"

अध्याय दसवां

इण्डियन इण्डिपेन्डेंस लीग

१९२४ मे रासबिहारी बोस ने एशियाई लोगो को सगठित करना आरम्भ किया। १ अगस्त को उन्होंने नागासाकी म एशिया के प्रतिनिधियो की एक सभा बुलाई। चीन के ग्यारह, भारत के आठ, अफगानिस्तान का एक, फिलीपाइन्स का एक और जापान के बीस प्रतिनिधि उसमे सम्मिलित हुए थे। अपने भाषण मे रासबिहारी बोस ने कहा "कुछ लोगो का कहना है कि एक दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय सगठन खडा करने की कोई आवश्यकता नही है क्योकि एक अन्तर्राष्ट्रीय सगठन विद्यमान है और हम उसके सदस्य होने के नाते सगठित हैं। परन्तु दोनो मे कोई साम्य नही है दोनो एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं। पहला अन्तर्राष्ट्रीय सगठन पचास करोड श्वेत जाति के लोगो के लाभ और कल्याण के लिए है जबकि यह सगठन एक अरब से अधिक एशियाई लोगो के कल्याण के लिए है। हम जो सगठन खडा कर रहे है उससे एक नई पूर्वीय सभ्यता को जन्म देने और उसको स्थापित किया जा रहा है। उसका आधार एशिया के लिए प्रेम और विश्वास होगा। अस्तु हमको मानव जाति को सुखी बनाने म सहायता करने के लिए काय करने के लिए सगठित होना चाहिए।

बाद को उन्होने जापान म "भारतीय समिति" भी सगठित की उसके माध्यम से वे जापान मे रहने वाले भारतीय तरुणो को सगठित कर उनको नेतृत्व प्रदान करते थे। १९३३ मे टोकियो म उन्होने 'विला एशियन" नामक एक एशिया के छात्रो के लिए एक छात्रावास स्थापित किया। वे उस छात्रावास के द्वारा एशिया के छात्रो मे एशियाई लोगो की एकता की भावना जागृत करते थे। उस एशियाई छात्रावास को १९४१ तक वे स्वय चलाते रहे तथा उसका सचालन करते रहे। अपने जापानी मित्रो की सहायता से उन्होने "भारत जापानी मत्री सघ' की स्थापना की। उस सगठन ने जापानी और भारतीयो मे सहृदयता तथा मित्र भाव उत्पन्न करने का प्रशसनीय काय किया। आज तक जापान के भारतीय और जापानी

उसकी सेवाओं को आदर के साथ याद करते हैं। उस संगठन को खड़ा करने तथा बाद को उसका संचालन करने में रासबिहारी बोस को जापान के विभिन्न भागों में भ्रमण करना पड़ा। वे जापानी भाषा धारा प्रवाह बोलते थे। जब वह जापानी भाषा में जापानियों को भाषण देते थे तो जापानी श्रोता मंत्र मुग्ध होकर उनके भाषण को सुनते थे। अपने भाषणों में भारत और जापान के प्राचीन सम्बन्धों, भारतीय संस्कृति भारतीय सभ्यता, भारत का वर्तमान जीवन, ब्रिटिश शासन की निर्दयता तथा ब्रिटिश शासन का शोषण तथा योरोप के साम्राज्यवाद द्वारा एशिया वासियों के शोषण की कहानी अत्यन्त प्रभावशाली शब्दों में कहते थे। श्रोता उनके हृदयस्पर्शी भाषणों को सुनकर भावातिरेक हो उठते और उनके संगठन के सदस्य बन जाते। १९३४ में रासबिहारी कोरिया गए वहां भी उन्होंने एशिया की एकता की आवश्यकता तथा योरोप से एशिया की एकता की आवश्यकता तथा योरोप से एशिया की मुक्ति पर अपने भाषणों में बल दिया। उनके व्याख्यान इतने प्रभावशाली होते थे कि कोरिया के बुद्धिवादी तथा सुसंस्कृत लोग उनके प्रशंसक बन गए। रासबिहारी बोस ने कोरिया के बुद्धिवादियों को अपने भाषणों से बहुत अधिक प्रभावित किया।

केवल एशिया वासियों को श्वेतांग लोगों से मुक्ति पाने के लिए रासबिहारी बोस ने संगठन ही खड़ा नहीं किया उसके लिए उन देशों में जाकर भाषण ही नहीं दिए उनके साम्राज्यवाद के विरुद्ध जागृत ही नहीं किया और उन देशों से सम्पर्क ही स्थापित नहीं किया वरन् उन्होंने अपनी लेखनी से एशियाई लोगों को अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए तथा साम्राज्यवाद के चुंगल से निकलने के लिए प्रेरणा दी।

रासबिहारी बोस जापान की प्रमुख मासिक पत्रिका "जापान तथा जापानीज" के प्रमुख लेखक थे। "न्यू एशिया" पत्रिका का तो वे स्वयं सम्पादन करते थे। वे एशियन रिव्यू के सम्पादक विभाग में काम करते थे। न्यूएशिया ब्रिटिश नीति की ऐसी कठोर आलोचना करती थी कि भारत सरकार ने उसका भारत में आना वर्जित कर दिया था।

रासबिहारी बोस लेखनी के धनी थे। उन्होंने एशियाई देशों तथा विशेषकर भारत के सम्बन्ध में बहुत अधिक लिखा। यही नहीं कि उन्होंने एशिया तथा विशेषकर भारत के सम्बन्ध में बहुत अधिक लिखा वरन् उनकी लेखनी से जो साहित्य निकला वह अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। उन्होंने भारत के सम्बन्ध में जो बड़ी संख्या में पुस्तकें लिखी उनमें से कुछ नीचे लिखी हैं पुस्तकें अंग्रेजी में लिखी हैं—

१ पनोरमिक व्यूज आफ एशियन रिवल्यूशन (१९२९) २ विट एण्ड ह्यूमर आफ इण्डिया (१९३०) ३ इंडिया आपरस्ड (१९३३) ४ स्टोरीज आफ इंडियन प्यूपिल (१९३५) ५ इंडिया इन रिवल्यूशन (१९३६) ६ विक्टरीज आफ यंग एशिया (१९३७) ७ इंडिया अवेकनिंग (१९३८) ८ भगवत गीता (१९४०) ९ ट्रेजिक हिस्टरी आफ इंडिया (१९४२) १० दी रामायण (१९४२) ११ इंडिया आफ इंडियन्स (१९४३) १२ लास्ट सांग १३ बोस अपील्स (१९४४)

अमेरिका ने चियांगकाई शेक को अपने प्रभाव में लाने के लिये उसको सैनिक सहायता दी। चियांगकाई शेक अमेरिका के प्रभावित हो गया। जापान ने द्वारा

अमरिका का विरोध किया। अमरिका द्वारा सनिक सहायता के विरोध स्वरूप जापान ने चीनी सेना पर गोली वर्षा की अस्तु जापान चीन सघष का विस्तार हुआ। रासबिहारी बोस ने टोकियो मे भारतीय स्वतत्रता सगठन का गठन किया और उसके मच स घोषणा की कि एशिया एशियावासियो के लिए है, श्वेत लोगो को वहा रहने का कोई अधिकार नही है। श्वेत लोगो को अपने देश जाना चाहिए।

२८ अक्टूबर, १९३६ को रासबिहारी बोस ने अखिल एशियाई तरुण सघ की मीटिंग टोकियो मे बुलाई और उसम भी एशिया, एशियावासियो की प्रभावशाली आवाज उठाई। उस सम्मेलन मे भारतीय, थाई, इडोनेशियन, मगोनियन तथा अन्य प्रतिनिधियो ने भाग लिया।

८ अक्टूबर, १९४१ को जापान तथा अमेरिकन तथा ऐंग्लोगुट मे युद्ध छिड़ गया। जापानी की नौ सेना न पलहारबर पर आक्रमण कर दिया तथा अमरिका की पसफिक सेना को नष्ट कर दिया। पलहारबर तथा वहा स्थिति अमेरिकन सेना को नष्ट करके वह मलाया मे उतरी।

रासबिहारी बोस जो ब्रिटेन के विरुद्ध जापान मे बहुत दिनों से प्रचार कर रहे थे। उन्हे यह अनुकूल अवसर मिला और उन्होने अपने मित्रो को तथा सहयोगियो-डी एस देशपाडे, गुप्ता, सिंगम, राममूर्ति, नारायण तथा अन्य सहयोगियो के सहयोग से २६ दिसम्बर, १९४१ को टोकियो मे एक मीटिंग बुलाई। उस सभा मे उन्होने स्पष्ट शब्दों मे घोषणा की कि विश्व युद्ध के कारण भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त होने का स्वर्ण अवसर मिला है। उसे उसका लाभ उठाना चाहिए और अपनी स्वतत्रता को प्राप्त करना चाहिए।

१५ जनवरी, १९४२ को टोकियो म रासबिहारी बोस ने एशियन इटरनेशनल सगठन की मीटिंग बुलाई और एशियाई देशो को अमेरिका और इगलड को एशियाई देशो से निकाल बाहर करने का जोरदार शब्दो म आव्हान किया। २४ जनवरी, १९४४ को उन्होने एशियाई प्यूपिल्स कान्फ्रेंस की सभा ओसाका म बुलाई और उसम भी अमेरिकन तथा ब्रिटिश शक्ति को एशियाई देशो से निकाल बाहर करने के लिए अपील की।

रासबिहारी बोस द्वारा एशियाई देशो की स्वतत्रता के लिए ऐसा परिश्रम करते देख जापान के क्रातिकारी नेता तोयामा ने उनका परिचय जापान के सनिक अधिकारियो तथा सेना के मुख्य कार्यालय से करवा दिया।

२७ फरवरी, १९४२ को रासबिहारी बोस ने सन्नो होटल म पत्रकारो के द्वारा भारत वासियो के नाम नीचे लिखी अपील निकाली "भारत के बन्धुओ पिछले एक सौ वर्षों मे हमने भारत म तथा विदेशो मे ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध करते हुए हजारो देश-भक्त भारतीयो को देश की स्वतत्रता के लिए बलिदान चढा दिया। अब जापानी सेना ब्रिटेन के विरुद्ध हागकाग और मलाया म युद्ध कर रही है। हम उनके इस प्रयत्न से बहुत अधिक प्रभावित हुए तथा द्रवित हैं। हम आपसे प्राथना करते हैं कि आप भारत को भारतीयो के लिए सुरक्षित करने उसे स्वतत्रता करने के लिए इस प्रयत्न म हमारा

माफ कीजिए। इस प्रयत्न म साथ दने के लिए हम सब को तयार हो जाना चाहिए और अपने समान हित के लिए साथ साथ कूच करना चाहिए। हम भगवान कृष्ण के द्वारा दी गई निष्काम कम की शक्ति, भगवान बुद्ध द्वारा बताई हुई निस्वार्थ मन तथा भावना तथा शिवाजी तथा गुरु गोविंद सिंह की शिक्षा को ध्यान म रखकर देश को स्वतंत्र करने के इस महान सदय को सफल बनाने म लग जाना चाहिए।"

यह अपील एशिया भर म प्रचारित की गई जिससे कि प्रत्यक क्षेत्र से साथी इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के प्रधान कार्यालय म आकर जमा हो सकें। इसका परिणाम यह हुआ कि सभी प्रदेशो से भारतीय इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के प्रधान कार्यालय टोकियो म जमा हुए और लीग की शाखायें सभी एशियाई देशो म गठित की गई।

दक्षिण पूव एशिया मे सभी क्षेत्रो म जो कि जापान के अधिकार म आ गए थे उनम भारतीय के जीवन, उनकी जायदाद तथा धन, उनकी इज्जत की रक्षा करने का रासबिहारी न प्रशसनीय काय किया। उनको भय था कि कही जापानी सेना के सनिक भारतीयो को शत्रु देश के व्यक्ति मानकर उनके साथ दुव्यवहार न करें और उनको दडित न करें अस्तु उन्होंने जापानी सेना के प्रधान सेनापति से इस आशय की एक सधि की कि जिन प्रदेशो पर जापान का सनिक अधिकार हो जाय उस क्षेत्र के सभी भारतीय जन एक मित्र राष्ट्र के निवासी स्वीकार किए जावें और उनसे मित्र राष्ट्र के नागरिक का व्यवहार किया जाय। इस प्रकार दक्षिण पूव एशिया म रहने वाले बीस लाख भारतीय की उन्होंने रक्षा की और वे भारतीय सनिक जो कि युद्ध म बन्दी बनाए गए वे बन्दी तो बनाए गए पर युद्ध के बन्दी नही माने गए। मेजर फ्यूजीवारा को बगकोक इस उद्देश्य से भेजा गया कि वे इस बात का पता लगायें कि वहा भारतीय क्रांतिकारियो और विद्रोहियो को सगठित करने की सम्भावनाए हैं। वह श्री प्रीतम सिंह से मिले और चार बार भारतीय क्रांतिकारियो से बातचीत करने के परिणाम स्वरूप वहां इण्डियन इण्डिपेंडस लीग स्थापित हो गई।

जब स्लिम नदी के युद्ध मे ब्रिटेन की पराजय हो गई तो पीछे हटने वाली भारतीय सेनाओ की रसद तथा युद्ध सामग्री उनके पास पहुचना कठिन हो गया। जापानी सेनाओ के अधिकार मे वह क्षेत्र आ गया। उस समय तक जापान ने क्वाला-लाम्पुर को विजय कर लिया। उसका परिणाम यह हुआ कि कई हजार भारतीय सनिको ने भारतीय क्रांतिकारियो से मिल कर भारत की प्रथम राष्ट्रीय सेना का निर्माण किया। वास्तव म आजाद हिन्द सेना का यह श्री गणेश था। जब सिंगापुर का पतन हुआ तो ब्रिटिश सेना ने जापानी सेना को आत्मसमर्पण कर दिया। ब्रिटिश सेना म बहुत बडी सख्या म भारतीय सनिक थे। उनम से बहुत बडी सख्या मे भारतीय सनिको ने आई एन ए (आजाद हिंद सेना) म प्रवेश लेना स्वीकार किया। और आजाद हिंद सेना का सगठन किया गया।

प्रीतमसिंह ने अखिल मलाया भारतीय स्वतन्त्रता सघ का सगठन किया था। वे मलाया म भारतीय स्वतन्त्रता आदोलन के सूत्रधार थे श्री रासबिहारी बोस ने तार द्वारा उन्हें सदेश भेजा कि वे भारत को स्वतन्त्र करने के उद्देश्य से टोकियो म भारतीयो का एक सम्मेलन बुला रहे है अस्तु वहा की इण्डियन इण्डिपेंडस लीग अपने प्रतिनिधि

उस सम्मेलन म १६ माच के पूव भेजे। यह तार पाकर प्रीतम सिह, गुहा, मनन, स्वामी सत्यानन्दपुरी, जगन और अय्यर, इण्डियन इण्डिपेंडस लीग के और आजाद हिन्द सेना के मोहन सिह, अगमान और गिल सिंगापुर स टोकियो को चले। स गाव पर उ हाने टोकियो जान क लिए हवाई जहाज लिए। इवाकुरा, फ्यूजीवारा, मोहनसिंह, गिल, राघवन, गुहा तथा मेनन पहल वायुयान से गए और प्रीतमसिंह, पुरी, अय्यर, अगनाम और चिनागुरा ने दूसरा वायुयान लिया। दुर्भाग्यवश दूसरा वायुयान दुघटना ग्रस्त हो गया। वह नष्ट हो गया और उसम यात्रा करने वाले यात्रियो की मृत्यु हो गई। तोयामा ने उनका अंतिम सस्कार करवाया। उसमे जापान के सभी मत्री आए उनके अतिरिक्त पन्द्रह सो जापानियो ने उन भारतीय क्रांति वीरो को श्रद्धांजलि प्रदान की।

२० माच, १६४२ को टोकियो के यूवनो पाक मे एक सम्मलन हुआ। उस सम्मलन म तोयामा सहित तीन सो सत्तर प्रमुख जापानी राजनीतिज्ञ बाईस भारतीय प्रतिनिधि आठ सो से अधिक भारत के साथ सहानुभूति रखने वाले जापानी उपस्थित थे। एक सप्ताह पश्चात टोकियो क सन्नो होटल म भारत के बाहर सभी देशो मे रहने वाले भारतीयो ने अट्ठारह प्रतिनिधियो की औपचारिक मीटिंग हुई। वह तीन दिन तक चलती रही उस सभा ने इंडियन इंडिपेंडस लीग को मान्यता प्रदान कर दी और श्री रासबिहारी बोस का उसका नता स्वीकार कर लिया गया।

२६ अप्रल, १६४२ को श्री डी एस देशपांडे, सहाय, एस सेन रावल तथा कुछ अ य प्रतिनिधियो को साथ लकर श्री रासबिहारी बोस जापान से बंगकाक आए। वहा एक सौ स अधिक भारतीय प्रतिनिधि, पूर्वीय तथा दक्षिणी एशिया के विभिन्न भागो से एशिया मायनर बरमा, श्याम (थाईलैंड) मचूरिया, नानकिंग, शघाई कैन्टन तथा हागकाग से आए हुए थे। उस सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री देवनाथ दास थे। वह सम्मेलन श्री रासबिहारी बोस की अध्यक्षता मे १५ जून, १६४२ को आरम्भ हुआ। उस सम्मेलन मे रासबिहारी ने अपने अध्यक्षीय भाषण म प्रतिनिधियो स कहा कि हम याद रखना चाहिए कि 'हमारा एक अविभाज्य राष्ट्र भारत है, एक शत्रु इगलैंड है और एक लक्ष्य पूर्ण स्वतन्त्रता है।"

उस सम्मेलन म भारतीय प्रतिनिधियो ने भारतीय सनिको तथा भारतीय नागरिको तथा बाद को जो सना मे भर्ती किए जावे। उनकी आजाद हिन्द सेना (आई एन ए) गठित करने का प्रस्ताव पारित किया। उस सेना का एकमात्र उद्देश्य भारत को स्वतन्त्र करना था।

उस सम्मलन म इंडियन इंडिपेंडस लीग का एक विधान भी स्वीकार किया गया। विधान के अनुसार उसकी एक कौंसिल आफ ऐक्शन, एक प्रतिनिधि समिति प्रादेशिक शाखायें और स्थानीय शाखायें बनाई गई। लीग के प्रथम अध्यक्ष श्री रासबिहारी बोस थे और कौंसिल आफ एक्शन म चार सदस्य थे। श्री एन राघवन (पनाग) कप्टेन मोहन सिंह के पी के मेनन और लफ्टीनेंट कनल गिलानी आजाद हिन्द सेना सीधे कौसल आफ एक्शन के आधीन थी।

वह सम्मलन नौ दिन तक चलता रहा। सम्मलन ने इस आशय का प्रस्ताव भी पारित किया कि जापान की सरकार को इस आशय की घोषणा कर देनी चाहिए

कि जो भारतीय जापान द्वारा विजित प्रदेशो मे रह रहे है उन्हे शत्रु राष्ट्र के नागरिक न माना जावे जब तक कि वे कोई ऐसा कार्य न करें जो जापान के हितो के विरुद्ध हो या भारत के स्वतन्त्रता आदोलन के विरुद्ध हो। और भारत मे तथा अन्य देशो मे जो भारतीयो की सम्पत्ति हो, उसे शत्रु राष्ट्र की सम्पत्ति न माना जावे।

उस समय नेताजी सुभाषचन्द्र जरमनी मे थे और भारत को स्वतन्त्र बनाने के लिए जरमनी की सहायता से प्रयत्नशील थे। उन्होने जरमनी से श्री रासबिहारी बोस को बधाई और शुभकामनाए भेजी।

श्री रासबिहारी बोस की जापान मे बहुत अधिक प्रतिष्ठा थी। जापान के अग्रणी व्यक्ति उनका बहुत आदर और सम्मान करते थे। तोयामा जो जापान के महान क्रांतिकारी र जनीतिक नेता था। उनके बडे प्रशसक थे। उनका मानना था कि जब तक भारत ब्रिटेन के आधीन है वह ब्रिटिश साम्राज्यवाद का एक अंग है तब तक जापान की युद्ध मे अंतिम और निर्णायक विजय नही हो सकती। इडियन इंडिपेंडेंस लीग के माध्यम से भारतीय क्रांतिकारियो का जापान की सेना के उच्च अधिकारियो से तथा नागरिक प्रशासन के सर्वोच्च राजनीतिज्ञो से निकट का सम्बन्ध स्थापित हो गया था। बहुत से जापानी इस आवश्यकता को अनुभव करते थे कि जापान को भारत के स्वतन्त्रता आदोलन की सहायता करना चाहिए। इस वातावरण का प्रभाव यह हुआ कि जनरल ताजो जापान के प्रधानमन्त्री ने जापान की पालियामेंट (डाइट) मे यह घोषणा कर दी कि जापान की सरकार भारतीयो को अपने देश की परतन्त्रता से छुट-कारा दिलाने के लिए स्वतन्त्रता आदोलन को सफल बनाने और भारत को स्वतन्त्र करने म हर सम्भव सहायता देगी।

१ सितम्बर, १९४२ को आजाद हिन्द सेना (आई एन ए) की औपचारिक रूप से स्थापना हुई। इडियन इंडिपेंडेंस लीग के अध्यक्ष श्री रासबिहारी बोस ने कप्टेन मोहन सिंह को कप्टन से पदोन्नति कर जनरल नियुक्त किया और आजाद हिंद सेना का सेनापति नियुक्त किया। आधुनिक ढग पर सेना का सगठन किया गया। सेना के सभी विभागो को सगठित किया गया। अग्रेजी के सभी शब्दो को हटाकर हिन्दी के शब्दो को प्रचलित किया गया जनरल ए सी चटर्जी सेना के चिकित्सा विभाग के अध्यक्ष थे। ज्ञान प्रकाश तथा सस्कृत विभाग द्वारा भारतीयो म ईश्वर म विश्वास तथा मानवजाति के प्रति प्रेम की भावना के पाठो का प्रचार किया जाने लगा। भारतीयो म अनुशासन, समय की महत्ता ऊचे चरित्र की आवश्यकता मातृभूमि के प्रति गहन प्रेम और श्रद्धा, एकता विश्वास, और बलिदान तथा त्याग की भावना की शिक्षा दी जाने लगी।

१९४२ के पतझड काल मे लीग की कार्यकारिणी समिति म एक विवाद उठ खडा हुआ। श्री रासबिहारी उनके कारण चिंतित थे। सिगापुर की समिति श्री रास-बिहारी के विरुद्ध थी। मोहन सिंह, गिल और गिलानी कार्य समिति के चुने हुए सदस्य थे। उनको आजाद हिंद सेना ने चुना था। गोहो और मेनन की भांति उन्हे ही वे अपना नेता मानते थे।

यद्यपि सिगापुर की समिति रासबिहारी बोस की विरोधी थी। परन्तु पनांग

समिति के राघवन आदि सब ही रास बिहारी को ही नेता स्वीकार करते थे।

इस विरोध तथा विवाद का वास्तविक कारण जापानी सेना द्वारा इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के प्रति अपनाया गया शंकास्पद दृष्टिकोण था। जापानी सेना का दृष्टिकोण था कि आजाद हिंद सेना जापानी सेना की सहायक सेना है जबकि बंगकाक सम्मेलन में जो ६३ बातें तय की गई थी। उनमें आजादहिंद सेना कौंसिल आफ एक्शन के आधीन थी। इस विवाद का कारण श्री रासबिहारी बोस नहीं थे।

कौंसिल आफ ऐक्शन के अध्यक्ष होने के नाते १९४३ के अपने वक्तव्य में श्री रासबिहारी बोस ने सारे मामले को स्पष्ट कर दिया था। उन्होंने सभी देशभक्त भारतीयों को इस स्वतन्त्रता युद्ध में सहयोग देने के लिए आह्वान किया। उनके आह्वान पर प्रीतम सिंह ने मलाया युद्ध में भाग लिया था। १२ दिसम्बर, १९४१ को मोहन सिंह अपने थोड़े से साथियों के साथ प्रीतम सिंह से आकर मिले क्योंकि प्रीतम सिंह सैनिक अधिकारी नहीं थे और मेजर फ्यूजीवारा जापानी अधिकारी थे व भारतीय सैनिकों के बारे में अधिक जानकारी नहीं रखते थे अस्तु भारतीय सेना का प्रशासन तथा कमांड मोहन सिंह को दे दिया गया। कौंसिल आफ एकशन के चुनाव के पूर्व मोहनसिंह ने अपने भाषणों में जो वक्तव्य दिए व वस्तु स्थिति के सम्बन्ध में भ्रामक प्रतीत होते है। उन्होंने शपथ पूर्वक कहा कि भारतीय सेना के अधिकांश सैनिक बिना किसी धमकी या दबाव के स्वेच्छा से इस आदोलन में आना चाहते हैं। मेजर फ्यूजीवारा ने कहा और लिखा है 'कि मैं यह जानकर अत्यन्त दुखी हुआ कि भारतीय सेना के अधिकारियों तथा सैनिकों को आंदोलन में साथ देने के लिए दबाया गया और उन पर अत्याचार किए गए। जिसके दोषी एक मात्र मोहन सिंह थे। कुछ को गोली मार दी गई तथा अन्यों पर अत्याचार किए गए। कुछ को बन्दी शिविर भेज दिया गया और बेइज्जत किया गया। मोहन सिंह ने दबाव डाल कर उनको आंदोलन में लाने का प्रयत्न किया।

नवम्बर के अन्त में यह ज्ञात हुआ कि आजाद हिंद सेना के सेनापति होने के नाते मोहन सिंह ने जापानी सेनाध्यक्ष इवाकुरा किकन से आजाद हिंद सेना के कुछ सैनिकों को सैनिक प्रशिक्षण के लिए बरमा भेजने का तय कर लिया। मोहन सिंह ने अग्रिम सैनिक दल बिना कौंसिल आफ ऐक्शन की आज्ञा के बरमा भेज दिया। वास्तविकता यह थी कि कौंसिल आफ ऐक्शन को आजाद हिंद सेना के बारे में बिलकुल अन्धकार में रक्खा गया। मोहन सिंह बिना कौंसिल आफ एक्शन से आज्ञा लिए मन माने ढंग से आजाद हिन्द सेना के बारे में निर्णय करते थे। विधान के अनुसार उन्हें कौंसिल आफ एक्शन के आदेशानुसार उसकी आधीनता में कार्य करना था परन्तु वे इस प्रकार का आचरण करते थे मानो वही आजाद हिंद सेना के सर्वेसर्वा हैं। उन्होंने सेना के अधिकारियों तथा सैनिकों के ऊपर यह प्रभाव डालने का प्रयत्न किया कि सेना उनकी है और वे ही उसके सर्वेसर्वा है।

कौंसिल आफ एक्शन की अन्तिम मीटिंग में रासबिहारी बोस ने मोहन सिंह पर यह दबाव डाला कि कुछ प्रश्नों के सम्बन्ध में जापानी सेना प्रमुख से तुरन्त सम्पर्क किया जाय। परन्तु यह सम्भव नहीं था क्योंकि मलाया में कोई अधिकारी नहीं था जो प्रश्नों का उत्तर दे सकता।

मोहन सिंह जापानी सेना अधिकारियो को उन प्रश्नो का उत्तर देने के लिए दबाव नही डालना चाहते थे व उन प्रश्नो का उत्तर न मिलने पर मोहन सिंह तथा अन्य दोनो ने कौंसिल आफ ऐक्शन से त्यागपत्र दे दिया। कप्टेन गिलानी क्योंकि मोहनसिंह के नीचे आजाद हिंद सेना के अधिकारी थे उनके लिए मोहन सिंह की इच्छा के अनुसार काम करने के अतिरिक्त और कोई चारा नही था। क्योंकि मेनन का कौंसिल आफ ऐक्शन मे चुनाव मोहन सिंह के कारण हुआ था। वे भी त्यागपत्र देने पर विवश थे।

रासबिहारी बोस ने लिखा है कि मोहन सिंह ने केवल मेरे निर्देशन की उपेक्षा ही नही की वरन अपने पत्र म जो उ हाने १३ दिसम्बर, १९४२ को मुझे लिखा यह दावा किया कि आजाद हिन्द सेना के सनिको ने केवल मेरे (मोहन सिंह) नाम से शपथ ली है। वे केवल मेरे प्रति भक्ति और आस्था रखते हैं ऐसी दशा मे आजाद हिंद सेना इडियन इडिपैंडस लीग के माध्यम से मातृभूमि की कोई सेवा नही कर सकती। अस्तु सेना इडियन इडिपैंडस लीग से अपना सम्ब ध विच्छेद करती है। यही नही मोहनसिंह कनल इवाकुरा से मिले और उन्ह इस आशय का पत्र दिया। उस पत्र मे लिखा था कि इडियन नेशनल आर्मी उसकी निज की है और वे उसको भग करना चाहते है। ऐसी परिस्थिति मे रासबिहारी बोस ने लिखा है कि मुझे अत्यन्त कष्टकर और खेद जनक निणय लेना पडा कि मोहन सिंह को आजाद हिन्द सेना के प्रधान सेनापतित्व पद से हटाया जावे। उसके अतिरिक्त उस परिस्थिति मे और कोई विकल्प नही था।

क्योंकि मोहन सिंह ने आजाद हिंद सेना को भग करने का षडयन्त्र किया था। रासबिहारी ने मोहन सिंह को जनरल स पद अवनत कर कप्टेन कर दिया। और २९ दिसम्बर, १९४२ को उनको तथा एन एस गिल को गिरफ्तार किए जाने की आज्ञा निकाल दी।

जब बाद को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द सेना आई एन ए की सर्वोच्च कमान सभाली। उ होने मोहन सिंह के मामले को पुन देखा और श्री रासबिहारी बोस के निणय को स्वीकृत किया। उन्होने मोहन सिंह के सम्ब ध मे नीचे लिखा 'आजाद हिन्द सेना को भग करने का मोहनसिंह का षडयन्त्र तथ्यो से सिद्ध होता है अतएव उनको सेना म पुन लेने का प्रश्न ही नही उठता। उनके इस नोट को आजाद हिन्द सरकार के मन्त्रिमडल ने स्वीकार कर लिया।

अगले दो महीनो मे इडियन इडिपैंडस लीग के ऊपर जो विद्रोह का तूफान आया वह शात हो गया और इण्डियन इण्डिपडस लीग तथा आजाद हिंद सेना पुनसगठन किया गया। फरवरी १९४३ मे जनरल भासले को आजाद हिंद सेना का कमाडर नियुक्त किया गया। रासबिहारी बोस, राघवन, मेजर जनरल भोसले और नारायण स्वामी को कौंसिल आफ ऐक्शन का सदस्य चुना गया।

अप्रेल १९४३ मे सिंगापुर मे एक सम्मेलन म रासबिहारी बोस को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत करने का अधिकार दिया गया। उन्होने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का नाम प्रस्तावित किया। एक सनिक प्रतिनिधि ने इस सम्बन्ध म एक प्रश्न उनसे पूछा कि यदि अध्यक्ष ने देश के हित म काम नही किया अथवा योग्य उत्तराधिकारी नही चुना तो क्या होगा। रासबिहारी बोस का उत्तर एक देशभक्त

क्रांतिकारी का उत्तर था। उन्होने एक देशभक्त सच्चे क्रांतिकारी की भांति स्पष्ट उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण आंदोलन क्रांतिकारी आन्दोलन है अस्तु यदि अध्यक्ष अपने कर्त्तव्य से च्युत हो जाता है और क्रांति की सच्ची भावना से देश का काय नहीं करता तो उसको गोली मार दी जानी चाहिए। उसके अनुयायियों को उसको मार देने मे तनिक भी संकोच नहीं होना चाहिए। अपने क्रांतिकारी लक्ष्य को तिलांजलि देने वाला अध्यक्ष प्राण दण्ड के योग्य है। श्री रासबिहारी बोस के ऊपर लिखे वाक्यों से उस सम्मेलन म आए हुए सभी लोग अत्यन्त प्रभावित हुए और उनकी भावना ने सभी को आशान्वित कर दिया।

उससे पूर्व एक सभा मे श्री रासबिहारी बोस से पूछा गया कि क्या वे भारतीय है? फिर उन्होंने अपने पुत्र को जापानी शाही सेना मे भर्ती होने दिया। उन्होंने उत्तर दिया कि मेरा पुत्र शत प्रतिशत भारतीय है और वह भारत को स्वतन्त्र बनाने के प्रयास मे किसी से भी पीछे नहीं रहने वाला है क्योंकि मेरा पुत्र जापान म उत्पन्न हुआ है वह जापानी नागरिक हो गया इस कारण उसे जापानी सेना म भर्ती होना पडा। इस देश का कानून यह है कि जो इस देश मे जन्म लेगा वह इस देश का नागरिक होगा। पर मुझे पूरा विश्वास है कि जब वह समय आवेगा तो मेरा पुत्र आजाद हिन्द सेना का सैनिक बन कर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध तलवार उठाकर भारत के स्वतन्त्र युद्ध म भाग लेगा।

रासबिहारी बोस की ऊपर लिखी स्पष्टोक्ति से ब्रिटिश साम्राज्यवाद के एजेन्ट जो उनके सम्बन्ध म जन समाज मे भ्रान्तियां फैलाते थे वे निरुत्तर हो गए और उस महान देशभक्त और क्रांतिकारी का उज्जवल स्फटिक मणि के समान निष्कलंक क्रांतिकारी चरित्र अपने पूर्ण तेज और प्रकाश से उद्भासित हुआ। वे एशियाई देशों के सभी देशों के भारतीयों के हृदय सम्राट और श्रद्धा के केन्द्र बन गए।

जब रासबिहारी बोस ने देखा कि भारत के राजनीतिज्ञ तथा भारतीय कांग्रेस जापान के धुरी राष्ट्रों से मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे ब्रिटेन तथा उसके मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध काय करने की नीति की निंदा करते हैं और रासबिहारी बोस की नीति को स्वीकार करने के लिए तयार नहीं है तो उन्होंने जापान तथा पूर्वीय एशिया म बसे भारतीयों को संगठित कर उनके द्वारा अपनी नीति का प्रचार करने का भगीरथ प्रयत्न किया।

नवम्बर १९३८ म रासबिहारी ने एक लोक घोषणा पत्र प्रकाशित किया जिसम उन्होंने भारतीय राजनीतिज्ञों तथा भारतीय कांग्रेस की विदेशी नीति म परिवर्तन करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने अपने लोक घोषणा पत्र म लिखा 'कि कुछ वर्षों से विशेषकर चीन–जापान संघर्ष छिड़ने के उपरांत कतिपय भारतीय राजनीतिज्ञों मे यह फैशन बन गया है कि वे धुरी राष्ट्रों की बिना सोचे कटु निन्दा करते हैं। व नहीं जानते कि वे इस बुद्धिमत्ताहीन काय से, वे भारत की स्वतन्त्रता को कितनी अधिक हानि पहुंचा रहे हैं। उनके इस काय मे वे भारत के शत्रु–अधिक देश बन रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है भारत के जितने देश मित्र बनें उतना ही भारत का हित होगा। उन्हें यह बात ध्यान म रखनी चाहिए कि 'ब्रिटेन के शत्रु भारत के मित्र

है। "वे लोग यह भूल जाते हैं कि सैनिक दृष्टि से प्रथम श्रेणी के बलवान देशों को भारत का शत्रु बनाने से वे ब्रिटेन को सहायता करते हैं और भारत में ब्रिटेन शासन को बल देते हैं।"

जापान द्वारा ऐंग्लो सक्सनों के विरुद्ध युद्ध छेड़ने से तथा सात दिसम्बर, १६४१ को पर्ल हारबर पर बम डालकर जापान ने एशिया के देशों के पश्चिमीय राष्ट्रों के साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष में एक नया परिच्छेद जोड़ दिया है। जापान द्वारा इङ्गलैंड और अमेरिका के विरुद्ध युद्ध करने से वे शक्तियां विकसित हुईं। जिनका रास बिहारी भारत की स्वतन्त्रता के लिए उपयोग करने का प्रयत्न करना चाहते थे।

उन्होंने इस सम्बन्ध में जो लिखा है उनके शब्दों में ही पढ़िए। "अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पिछले दस वर्षों में जो घटनायें घट रही थीं वह इस बात की द्योतक थीं कि इस प्रकार का विश्व युद्ध अनिवार्य है और यह स्पष्ट लगता था कि भारत की स्वतन्त्रता का प्रश्न तभी सफलता पूर्वक हल हो सकेगा जब जापान ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध शस्त्र धारण करेगा। इस महत्वपूर्ण तथ्य को ध्यान में रखकर तथा अपनी मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्य का विचार करके हम लोग ८ दिसम्बर, १६४१ को टोकियो के रैनबोप्रिल में मिले और इस महत्वपूर्ण समय में हम क्या करना चाहिए इस पर विचार किया। मेरे साथियों ने एक कमेटी बनाई और मुझसे आंदोलन का नेतृत्व करने को कहा जिसे मैंने प्रसन्नता से स्वीकार किया। हमने सर्व प्रथम पूर्व एशिया में भारतीयों को संगठित करने का निश्चय किया। जापान तथा अन्य पूर्व के एशियाई देशों में भारतीयों की सभाएं आयोजित की गईं और उनमें भारत को स्वतन्त्र करने की घोषणा करने की आवश्यकता पर बल दिया गया। यह भी तथ्य उद्घोषित किया गया कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विनाश करने के लिए भारत की स्वतन्त्रता अत्यन्त आवश्यक है।

रासबिहारी ने २६ दिसम्बर, १६४१ को टोकियो के रेलवे होटल में जापान के चार नगरों कोबे, ओसाका, याकोहाम तथा टोकियो के पचास प्रतिनिधियों का जहां भारतीय बसे हुये थे एक सम्मेलन बुलाया। उस सम्मेलन में एक प्रस्ताव पारित किया गया। उस प्रस्ताव के द्वारा भारतीयों से कहा गया कि वे स्थिति की गम्भीरता को समझें तथा भारत के सामने जो खतरा है उसको अनुभव करें। रासबिहारी ने कुछ प्रतिनिधि शंघाई भेजे और वहां भी भारतीयों की सभा बुलाकर इसी प्रकार का प्रस्ताव पारित किया गया। भारतीयों की यह सभा शंघाई के यंग मैन ऐसोसियेशन के हॉल में हुई थी।

रासबिहारी केवल भारतीयों को संगठित करके ही शांत नहीं हो गए। उन्होंने जापान के उच्च सैनिक तथा प्रशासनिक अधिकारियों से सम्पर्क किया और उनको बतलाया कि जापान ने जिस उद्देश्य से ब्रिटेन और अमेरिका के विरुद्ध युद्ध छेड़ा है तभी पूरा हो सकता है जब भारत स्वतंत्र हो। अतएव अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए जापान को भारत को स्वतन्त्रता के संघर्ष में उसे सहायता करना चाहिए। रासबिहारी ने जापान के उच्च अधिकारियों से स्पष्ट कहा कि जब तक ब्रिटिश साम्राज्यवाद भारत में विद्यमान है तब तक जापान की इस युद्ध में अन्तिम विजय की आशा नहीं की जा

सकी रासबिहारी के प्रयत्न सफल हुए। जापान के तत्कालीन प्रधानमंत्री जनरल तोजो
ने जापान की इम्पीरियल डाइट (प्रतिनिधि सभा) मे घोषणा की कि जापान सरकार
भारत को स्वतंत्र करने म सहायता करेगी। इस काय मे रासबिहारी बोस के मुख्य
सहायक स्वामी सत्यान द पुरी (जो पहले प्रफुल्ल सेन के नाम से जाने जाते थे) और
जो अनुशीलन समिति (भारत के प्रमुख क्रांतिकारियों का सगठन) और सरदार प्रीतम
सिंह थे। दोना भारत को स्वतन्त्र करने के लिए बैंगकाक (प्रयाग) को अपना मुख्य केन्द्र
बनाकर राजनीतिक काय कर रह थे।

जब जापान सरकार ने भारत के मुक्ति आन्दोलन की सक्रिय सहायता करना
स्वीकार कर लिया तो रासबिहारी ने माच, १९४२ म टोकियो म ग्रोर जून, १९४२ म
बगकाक मे भारतीयो के दो सम्मेलन बुलाए ग्रोर यह निश्चय किया कि भारत से बाहर
रहने वाले भारतीय किस प्रकार भारत की स्वतन्त्रता का युद्ध लडें। बैंगकाक सम्मेलन
में उसकी कायकारिणी (कौंसिल आफ ऐक्शन) का गठन किया गया ग्रोर रासबिहारी
बोस सवसम्मत से उसके अध्यक्ष चुने गए। ग्राजाद हिन्द सेना जिसका दिसम्बर १९४१
म गठन किया गया था उसका पुनगठन किया गया ग्रोर उसको कौंसिल ग्राफ ऐक्शन के
नियन्त्रण म रख दिया गया। इस प्रकार राष्ट्रीय भारत की स्वतन्त्र सेना का गठन हुग्रा
और उसके मुख्य प्रवतक रासबिहारी बोस थे। रासबिहारी ने इस सम्बन्ध मे लिखा
"मेरा इस सम्बन्ध मे कि ग्राजाद हिंद सेना एक स्वतन्त्र राष्ट्र की सेना है जापान
सरकार से स्पष्ट समझौता हो गया था। यही कारण था कि मेजर फ्यूजीवारा ने भार
तीय देशभक्तो का मनाया युद्ध म सहयोग मागा था ग्रोर हमारे स्वर्गीय प्रिय प्रीतम सिंह
ने उनके साथ मनाया युद्ध मे सहयोग किया।

१२ दिसम्बर, १९४१ को कप्टेन मोहन सिंह कुछ सनिकों के साथ सरदार
प्रीतम सिंह से ग्रा मिले। सरदार प्रीतम सिंह सनिक ग्रधिकारी नही थे। उनको सेना
सचालन का कोई ग्रनुभव नहीं थे। वे प्रशासनिक अधिकारी थे और मेजर फ्यूजीवारा
जापानी सनिक अधिकारी थे परन्तु आजाद हिन्द सेना का कमाड तथा प्रशासन कप्टन
मोहन सिंह को दे दिया गया।

बैंगकाक सम्मेलन के उपरात रासबिहारी बोस इण्डियन इंडिपेंडेंस लीग ग्रोर
ग्राजाद हिंद सेना के काम मे ऐसी तन्मयता से जुट गए कि उन्होंने ग्रपने स्वास्थ्य की चिंत
नहीं रही। वे भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन का ग्रन्तर्राष्ट्रीय समग्र राजनीति का ए
महत्वपूर्ण ग्रग मानते थे। जब दूसरा महायुद्ध ग्रारम्भ हुआ और उसका विस्तार दि
म्बर १९४१ म सुदूर पूर्व म हो गया तब ता उन्हें भारत की स्वतन्त्रता के लिए ग्रा
आशा हो उठी। वे यह विश्वास नहीं करते थे कि ग्रहिंसा के द्वारा भारत स्वतन्त्र
सकता है। वे चाहते थे कि जापान जरमनी के साथ मिलकर जो ब्रिटेन और ग्रमरिका
के साम्राज्यो के विरुद्ध युद्ध कर रहा है। भारत को उसका उपयोग अपनी स्वतन्त्रता
प्राप्ति के लिए करना चाहिए। यही कारण था कि जापानी सरकार से उन्होंने 'कौंसिल
ग्राफ ऐक्शन' को भारतीय स्वतन्त्रता के प्रतीक के रूप मे स्वीकार करवाया। परन्तु
रासबिहारी का माग सरल नहीं था। उसी समय जनरल मोहन सिंह जिन्हें रासबिहारी
ने ग्राजाद हिन्द सेना का कमांडर बनाया था। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के वशीभूत होकर

'आजाद हिंद सेना' को अपनी निज की सेना कहने लगे और वे ही उसके सर्वेसर्वा हैं इस प्रकार का आचरण करने लगे।

रासबिहारी बोस एक जन्मजात योद्धा थे और उन्होंने अपना जीवन मातृभूमि को स्वतन्त्र करने के लिए अर्पण कर दिया था। अस्तु उन्हें जापान की नागरिकता मिलते ही उन्होंने भारत की स्वतन्त्रता के लिए काम करना आरम्भ कर दिया। उन्होंने १९२४ में इंडिया इंडिपेंडेंस लीग का सगठन किया। उन्होंने इंडिया इंडिपेंडेंस लीग का प्रधान कार्यालय टोकियो में रखा और पूर्व एशिया में उसकी शाखायें स्थापित कर दी। उनका इस सगठन को खड़ा करने का एकमात्र उद्देश्य भारत की स्वतन्त्रता के लिए कार्य करना था। वे सत्रह वर्षों तक इस सगठन के द्वारा पूर्व एशियावासियों को भारत की शोचनीय राजनीतिक दशा से अवगत कराते रहे और इस बात पर बल देते रहे कि एशिया तभी राजनीतिक दृष्टि से और सैनिक दृष्टि से बलवान बन सकेगा। जबकि भारत स्वतन्त्र बन जावेगा। वे एशिया के उदय के लिए भारत को स्वतन्त्र और शक्तिशाली बनाना आवश्यक मानते थे। "एशिया एशियावासियों के लिए" का नारा उन्होंने ही सर्व प्रथम दिया। यह उनका ही प्रयत्न था कि एशियावासी जो गहरी दासता की निद्रा में पड़े थे जाग उठे और पश्चिमीय साम्राज्यवाद को एशिया से निकाल बाहर करने की बात सोचने लगे। यह बोस के प्रयत्नों का ही परिणाम था कि एशिया के राजनीतिज्ञ यह मानने लगे कि महान एशिया का निर्माण करने के लिए भारत की स्वतन्त्रता नितांत आवश्यक है। उन्होंने भारत द्वारा जापान के साथ राजनैतिक स्तर पर सहयोग बढ़ाने का प्रशसनीय कार्य किया। वे पक्के यथार्थवादी थे। ब्रिटेन के शत्रु को वे भारत का हित और मित्र मानते थे फिर वह चाहे किसी राजनीतिक नीति और आदर्शवाद को मानने वाला हो।

यही कारण है कि १९३० के उपरांत जब जापान की सैनिक शक्ति आश्चर्यजनक ढंग से बढ़ी वह ससार का सैनिक दृष्टि से बलशाली राष्ट्र बन गया और १९३७ में वह धुरी राष्ट्रों के सगठन का सदस्य बन गया तो रासबिहारी बोस मन में प्रसन्न हुए क्योंकि धुरी राष्ट्रों का सगठन ब्रिटेन के साम्राज्यवाद के विरुद्ध था। ससार की राजनीति में यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में धुरी राष्ट्रों के इस ब्रिटेन विरोधी सगठन में उन्हें अपनी मातृभूमि भारत की मुक्ति की सम्भावनाओं के दर्शन हुए इस कारण वे बहुत प्रसन्न थे। उनके राजनीतिक दर्शन में ब्रिटेन का शत्रु भारत का मित्र था। वे कल्पना जगत में विचरण करने वाले पुस्तकीय राजनीतिक दर्शन तथा सिद्धांतों को मानने वाले राजनीतिज्ञ नहीं थे। वे दृढ़ यथार्थवादी राजनीतिज्ञ थे। मातृभूमि का जिसमें हित हो वही उनका मान्य था यही कारण था कि जब जापान द्वारा चीन के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही की गई तो मानवीय दृष्टिकोण से सब प्रश्नों को देखने वाले भारतीय राजनीतिज्ञों ने जापान की इस सैनिक कार्यवाही की निंदा की परन्तु रासबिहारी बोस ने भारत में जापान विरोधी प्रचार को भारत के हितों के विरुद्ध माना और उन्होंने गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टगोर को नीचे लिखा पत्र लिख भेजा।

भारतीय व्यापारी, विद्यार्थी तथा भारतीय नागरिक जो जापान में निवास करते हैं आपसे याचना करते हैं कि आप कांग्रेस तथा पंडित जवाहर लाल नेहरू को

भारतीय हितो तथा भारत-जापान की मित्रता के लिए जापान विरोधी काय करने से रोकें। यह केबिल १० अक्टूबर, १९३७ का था।

रासबिहारी न जापान म भारतीयो की सभाए बुलाकर भारतीयो और जापानियो के आर्थिक तथा राजनैतिक स्वार्थों की समानता पर बल दिया और भारत व जापान की मित्रता को आवश्यक बतलाया। उन्होंने एशियाई देशो के तरुणो को टोकियो म "सनकेडो" म एक सम्मेलन २८ अक्टूबर, १९३७ को बुलाया और उस "एशिया एशियावासियो के लिए श्वेत लोग अपने घर जावो" आदि नारो का प्रचार किया। रासबिहारी बोस न एशियावासी युवको म योरोप के श्वेतो द्वारा एशियाई देशो का शोषण करने के विरुद्ध गहरा रोष उत्पन्न कर दिया।

अध्याय ग्यारहवां

रासबिहारी बोस जापान में

जब रासबिहारी जापान में भूमिगत थे तब ब्रिटिश गुप्तचरों से उनकी रक्षा करने का श्रेय मुख्य रूप से उनकी पत्नी का था। ब्रिटिश सरकार उनके पीछे पड़ी थी। वह उनका अपहरण या मरवा देना चाहती थी। भारत सरकार भी उनके पीछे थी उसने भी अपने गुप्तचरों को जापान इसी कार्य के लिए भेजा हुआ था। भारत सरकार ने एक अत्यन्त कुशल पुलिस उच्च कर्मचारी को, जो पुलिस विभाग में अत्यन्त प्रसिद्ध था और बहुत ऊंचा अधिकारी था इसी कार्य के लिए जापान भेजा था। उस पुलिस अधिकारी ने श्री रासबिहारी बोस के सम्बन्ध में जो रिपोर्ट भारत सरकार को भेजी उसका सारांश यह था कि रासबिहारी भूमिगत हैं। जुलाई के अन्तिम दिनों में रासबिहारी टोकियो से बिलकुल लापता हो गए। क्योंकि ब्रिटिश अधिकारियों और गुप्तचरों को उनके छिपने का स्थान मालूम हो गया था। ब्रिटिश गुप्तचरों ने जापान की पुलिस की सहायता से अत्यन्त कुशलता पूर्वक छानबीन करके पता लगा लिया था कि जापान के पूर्वीय समुद्र तट पर स्थित "कस्तूरा" नगर के समीप "ओकित्सू" ग्राम में रासबिहारी टोकियो छोड़कर जा छिपे हैं। बोस को जैसे ही यह बात ज्ञात हुई कि ब्रिटिश गुप्तचरों को उनके छिपने का स्थान ज्ञात हो गया है वे "ओकित्सू" से तुरन्त भाग कर "टोकियो" आ गए और जापान के सम्राट के महलों और सम्राट गृह के महा अधीक्षक के विशाल अहाते में वहीं छिप गए। जो थोड़े उनके पत्र हाथ लगे उनसे पता चला कि वे अमरिका में भारतीय षडयन्त्रकारियों के प्रमुख "नरेन भट्टाचार्य" थे या पूर्वीय देशों में रहने वाले भारतीय क्रान्तिकारियों के थे।

रासबिहारी बोस का सब भारतीय क्रान्तिकारियों से चाहे वह भारत में हों या विदेशों में सबसे सम्पर्क बना हुआ था। वे जापान से भारतीय क्रान्तिकारियों का नेतृत्व करते थे। उनके नेतृत्व और लोकप्रियता में जापान चले जाने से तनिक भी कमी नहीं हुई थी। उन पत्रों से ब्रिटिश गुप्तचरों को यह ज्ञात हो गया कि रासबिहारी बोस आज भी भारतीय क्रांतिकारियों के सर्वमान्य नेता हैं। जब श्री तारकनाथ दास जापान में थे

ता उनका सम्मान बोस से बड़ा हुआ था और वे रासबिहारी बोस को अपना गुरु स्वीकार करते थे। उन्हीं दिनों उनकी ब्रिटिश जहाज को डुबाने की एक योजना बनाई थी। जबकि रासबिहारी जापान में भूमिगत थे उन्होंने अपना नाम 'इवामा दकरा' रख लिया था और नाकामूरा दाम्पति उन्हें इस नाम से जानते थे।

रासबिहारी बोस अपने बंगला की तरह लिखना पढ़ना भी जानते थे कि ब्रिटिश गुप्तचर उन्हें पकड़ न सके। यही नहीं भाषा सीखने की उनकी प्रतिभा इतनी विलक्षण और अद्भुत थी कि उन्होंने जापानी भाषा पर पूरा अधिकार कर लिया था। वे जापानी भाषा को बड़ी सरलता से बोलते थे। जब वे 'भाई जी माता' और उनकी पत्नी के मकान में रहते थे तब चार महीने तक छिपे रहकर उन्होंने जापानी जैसी क्लिष्ट भाषा को सीख लिया और वे जापानी भाषा को धारा प्रवाह बोल और लिख सकते थे। जब कभी किसी सभा में बोलते थे तो कोई व्यक्ति यह अनुमान नहीं कर सकता था कि वे जापानी नहीं हैं।

जब वे जापान में प्रगट रूप से रहने की स्थिति में हो गए तब उनकी राजनीतिक गतिविधियां बहुत विस्तृत हो गईं। वे "न्यू-एशिया" तथा 'एशिया रिव्यू' पत्रों को भी निकालते और इन पत्रों का सम्पादन करते थे साथ ही वे सभी महत्त्वपूर्ण जापानी पत्र पत्रिकाओं में लेख लिखते थे कई महत्वपूर्ण जापानी पत्र पत्रिकाओं में वे सम्पादकीय लेख भी लिखते थे। अब रासबिहारी बोस का नाम जापान में "एशियाई राष्ट्रवाद" के जन्मदाता के नाम से प्रसिद्ध हो गया था जापानी उन्हें एशिया के राष्ट्रवाद के जन्मदाता के रूप में श्रद्धा से देखते थे। उनके द्वारा पश्चिमीय साम्राज्यवाद के विरुद्ध एशिया के राष्ट्रों का संगठन बनाने के कारण वहाँ राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न हो गया। जापान तथा एशिया के लोग उनको अत्यन्त श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखने लगे। सर्वत्र उन्हें एशिया के राष्ट्रीय नेता के रूप में देखा जाने लगा। जापान के युवक उनके प्रति इतने श्रद्धालु हो गए कि उन्हें 'स सी' कहना आरम्भ कर दिया। जापान में 'स सी' का अर्थ 'महान गुरु' है अर्थात् वे उनको महान गुरु स्वीकार करते थे। जापानी युवक बोस को स सी अर्थात् महान गुरु के नाम से ही पुकारते थे। जापानी सैनिक भी रासबिहारी को अत्यन्त श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखते थे। उन पर भी रासबिहारी बोस का गहरा प्रभाव था।

रासबिहारी बोस का मानना था कि जब तक जापान सरकार तथा जापानी जनता को भारत तथा एशिया के अन्य राष्ट्रों की समस्याओं से अवगत नहीं कराया जाता तब तक उनके स्वतन्त्रता आंदोलन तथा संघर्ष में जापान सक्रिय की सहायता नहीं मिल सकती। वे मानते थे कि जब भारत तथा एशिया के अन्य परतन्त्र राष्ट्रों के लिए अनुकूल अवसर आयेगा तब जापान का सहयोग तभी मिल सकेगा जबकि जापान की सरकार तथा जापान के लोग भारत की समस्याओं से पूर्ण रूप से अवगत हों। प्रथम महायुद्ध के अनुभव ने उन्हें यह बतला दिया था। उस समय जापान एशिया के स्वतन्त्रता के आन्दोलन से सर्वथा उदासीन रहा था।

१९३३ में मंचूरिया की घटना के कारण 'लीग आफ नेशन्स' में जापान के विरुद्ध निन्दा का प्रस्ताव पारित हुआ और जापान ने लीग की सदस्यता से त्यागपत्र दे

दिया। जापान में उस समय ब्रिटिश विरोधी भावना अत्यन्त तीव्र हो उठी क्योंकि ब्रिटेन ही उस प्रस्ताव को पारित करवाने में अग्रणीय था। रासबिहारी बोस ने उस ब्रिटेन विरोधी भावना का पूरा लाभ उठाया। उन्होंने समस्त जापान का दौरा किया प्रत्येक स्थान पर सभायें की और जापानियों से कहा कि परतन्त्र भारत ब्रिटेन की महान शक्ति है। यदि एशिया में ब्रिटेन की शक्ति को कम करना हो तो उसकी शक्ति के आधार भारत का स्वतन्त्र करना आवश्यक है। ब्रिटिश साम्राज्य भारत की परतन्त्रता पर टिका है। जब भारत स्वतन्त्र हो जावेगा तो ब्रिटिश साम्राज्य ढह जावेगा। एशिया में यदि ब्रिटेन की शक्ति को कम करना है तो भारत की स्वतन्त्रता आवश्यक है।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध एशियाई राष्ट्रों के संगठन को अधिक तेजवान बनाने के लिए रासबिहारी बोस ने २८ अक्टूबर, १९३७ को 'एशियाई युवक सम्मेलन' बुलाया और पश्चिमीय साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक प्रभावशाली और सबल मोर्चा खड़ा कर दिया।

दूरदर्शी रासबिहारी बोस ने देख लिया था कि अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर तेजी से घटनायें घट रही हैं और भावी युद्ध में ब्रिटेन और जापान में युद्ध होगा। जब जापान और ब्रिटेन में युद्ध हो तब भारत को सशस्त्र विद्रोह के द्वारा स्वतन्त्र करने का अलभ्य और अनुकूल अवसर होगा। इस उद्देश्य से वे दक्षिण-पूर्व एशिया के सभी देशों में बसे भारतीयों का संगठन कर लेना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने 'इंडियन इंडिपेंडेंस लीग' की सभी दक्षिणी पूर्वी एशिया के देशों में शाखायें स्थापित कीं। वे स्वयं वहां गए और 'डी० एम० पांडे तथा देवनाथ दास को उन देशों में लीग की शाखायें स्थापित करने के लिए भेजा। उन लोगों ने दक्षिण पूर्वीय एशिया में भारतीयों का एक प्रभावशाली और सबल संगठन खड़ा कर दिया।

३ सितम्बर १९३९ को द्वितीय महायुद्ध आरम्भ हो गया। इंडिया इंडिपेंडेंस लीग की एक कमिटि बनाई गई। रासबिहारी उसके अध्यक्ष और देवनाथ दास तथा आनन्द मोहन सहाय उसके सदस्य थे। रासबिहारी बोस ने श्री देवनाथ दास को थाईलैंड तथा इंडोचीन के विभिन्न भागों हनोई, हैफांग, ह्यूई, कम्बोडिया तथा सुवर्ण भूमि (मलाया) में भारतीयों से सम्पर्क करने भेजा। श्री रासबिहारी बोस ने श्री प्राणलाल कपाडिया को पत्र देकर भारत भेजा। वे श्री रासबिहारी बोस की ओर से महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, राजेन्द्र बाबू तथा शरत चन्द्र से मिले। उनका नेताजी सुभाषचन्द्र से न मिलना नहीं हुआ क्योंकि वे जेल में थे। रासबिहारी बोस ने महात्मा गांधी तथा अन्य राष्ट्रीय नेताओं को लिखा तथा कपाडिया द्वारा कहलाया कि शीघ्र ही दक्षिण पूर्व में युद्ध छिड़ेगा। जापान का ब्रिटेन से युद्ध होगा। भारत की स्वतन्त्रता प्राप्त करने का यह दैवी वरदान सिद्ध होगा। जापान की हमें सहायता मिल जावेगी। देश के अन्दर यदि कांग्रेस और दक्षिण पूर्व एशिया में इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करें तो भारत स्वतन्त्र हो जावेगा। किन्तु कांग्रेस के नेता तब तक कुछ निश्चय नहीं कर सके थे। वे जापान के साथ मिलकर ब्रिटेन के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं करना चाहते थे। महात्मा गांधी और नेहरू का मत था कि इस समय कोई आंदोलन करके ब्रिटेन की

कठिनाइयों को बढ़ाना नहीं चाहिए। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का इसी प्रश्न पर कांग्रेस से मतभेद हुआ था। त्रिपुरी कांग्रेस में उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि ६ महीने में द्वितीय विश्व युद्ध होगा। हम ब्रिटेन को चुनौती देकर संघर्ष के लिए तैयारी करनी चाहिए। परन्तु कांग्रेस ने उनके सुझाव को स्वीकार नहीं किया और उनको कांग्रेस से हटना पड़ा। भारतीय नेताओं ने रासबिहारी के प्रस्ताव को गम्भीरता पर लिया।

भारतीय कांग्रेस से निराश होने पर रासबिहारी बोस की दृष्टि सुभाष चन्द्र बोस की ओर गई। जब वे आमरण अनशन करके जेल से छूट गए और एकान्तवास में भारत से विदेश जाने की तैयारी कर रहे थे तब रासबिहारी बोस ने उन्हें जापान लाने की योजना बनाई। उन्होंने जापान के स्थल, नभ और जल सेना के सर्वोच्च सैनिक अधिकारियों से मिलकर सुभाष चन्द्र बोस को जापान लाने की व्यवस्था कर ली। छद्म वेश में गुप्त रूप से उन्होंने श्री देवनाथ दास को एक जापानी समुद्री जहाज में 'अक्याब' भेजा।

श्री देवनाथ दास अक्याब में उतर गए तो भारत के जापानी कौंसिल जनरल से उन्होंने सम्पर्क कर यह निश्चय किया गया कि वह सुभाषचन्द्र बोस को एक जापानी स्टीमर से 'अक्याब' तक पहुंचा दे। योजना यह थी कि अक्याब पर जापानी एयरलाइंस सुभाषजी को टोकियो तक पहुंचा देगी। उस समय तक यद्यपि ब्रिटेन और जापान में खिंचाव अवश्य था। परन्तु जापान ब्रिटेन में युद्धरत नहीं था इस कारण जापान और ब्रिटेन के दौत्य सम्बन्ध पूर्ववत थे। अक्याब पर हवाई जहाज से श्री सुभाषचन्द्र को टोकियो लाने की पूर्ण व्यवस्था थी। परन्तु कलकत्ता में जापान का कौंसिल जनरल अन्तिम क्षण पर हिचकिचा गया। उस महान क्रांतिकारी (रासबिहारी बोस) की योजना यदि सफल हो जाती और नेताजी सुभाषचन्द्र जापान से युद्ध छिड़ने के पूर्व ही जापान पहुंच जाते तो भारत का इतिहास ही दूसरा होता परन्तु यह होना नहीं था।

८ दिसम्बर, १९४१ को दक्षिण एशिया में युद्ध छिड़ गया तुरन्त ही रासबिहारी बोस ने अपने नाम से एक छोटी सी पुस्तिका प्रकाशित की और लाखों की संख्या में उसको जापानी सेनाओं में बंटवाया उसमें जापानी सैनिकों को बतलाया गया था कि वे भारतीयों और विशेषकर भारतीय स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार करें। रासबिहारी बोस का जापानी सैनिकों पर ऐसा प्रभाव था कि उन्होंने उनके कहने के अनुसार भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया और किसी भी भारतीय महिला के साथ अभद्र व्यवहार नहीं किया।

युद्ध छिड़ते ही रासबिहारी बोस ने एक भारतीय सेवादल का निर्माण किया जिसके कमांडर श्री देवनाथ और अध्यक्ष स्वामी सत्यानन्द पुरी थे। वह सेवादल मलाया सिंगापुर, बरमा जहां-जहां जापानी सेना कूच करती थी उसके साथ कूच करता था। इन प्रदेशों में लाखों भारतीय रहते थे। यह सेवादल भारतीयों के जीवन और धन सम्पत्ति की सुरक्षा करता था। इस सेवादल ने भारतीयों की अद्भुत

सेना की उसके फल स्वरूप समस्त दक्षिण पूर्वीय एशिया में रासबिहारी के नेतृत्व में इंडिया इंडिपेंडेन्स लीग में गहरा विश्वास उत्पन्न हो गया।

जब ८ दिसम्बर, १९४१ को जापान ने मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी तो रासबिहारी सचेत हो गए। वे जान गए कि भारत को स्वतन्त्र करने का समय आ गया है। उन्होंने तुरन्त घोषणा की कि इंडिया इंडिपेंडेंस लीग का लक्ष्य भारत से ब्रिटिश शासन उखाड़ फेंक कर जिन प्रदेशों पर जापान का अधिकार हो जाय वहां बसे हुए भारतीयों की सेवा और उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध करेगा।

बहुत शीघ्र ही १३ दिसम्बर, १९४१ को 'कोटा बारु' में भारतीय क्रांतिकारी राजनैतिक नेताओं तथा ब्रिटिश भारतीय सेना के कतिपय सैनिक अधिकारियों का ऐतिहासिक मिलन हुआ और 'आजाद हिन्द सेना (आई एन ए) का नव प्रथम गठन हुआ सिंगापुर का १५ फरवरी १९४२ को पतन हो गया।

श्री रासबिहारी बोस ने यद्यपि जापानी सैनिकों से भारतीयों के साथ सदव्यवहार करने की अपील निकाली थी परन्तु वे जानते थे कि केवल अपील निकालना ही यथेष्ट नहीं है। वे जापानी सेना के सर्वोच्च सेनापति फील्ड मार्शल सुगीयामा से मिले और उनसे प्रार्थना की कि वे आज्ञा प्रचारित कर दें कि विजित प्रदेशों में भारतीयों को शत्रु न माना जावे। फील्ड मार्शल सुगीयामा ने रासबिहारी की इस प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा कि भारत ब्रिटिश साम्राज्य का एक अंग है। जिससे जापान युद्ध कर रहा है अतएव भारतीयों को शत्रु माना जावेगा। तब रासबिहारी बोस युद्ध मन्त्री से मिले और उन्हें यह आज्ञा निकालने के लिए तयार कर लिया।

जब जापानी सेनाओं ने थाईलैंड (श्याम) पर अधिकार कर लिया तो स्वामी सत्यानन्द पुरी ने बैंकाक में "इंडियन इंडिपेंडेंस लीग स्थापित की। इसके उपरांत लीग के प्रतिनिधि जापानी सेना के साथ जाते और भारतीयों के हितों की रक्षा करते। इसके अतिरिक्त वे स्थानीय भारतीयों के नेतृत्व में लीग की वहां शाखायें स्थापित करते क्रमशः मलाया के सभी राज्यों, फिलीपाइन द्वीप समूह, थाईलैंड, डच, ईस्ट इंडीज, फ्रेंच इंडोचाइना, शघाई, बरमा, कोरिया और मंचूरिया में भी इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की शाखायें स्थापित हो गई जो रासबिहारी बोस के नेतृत्व में काम करने लगीं।

श्री रासबिहारी बोस जापान के प्रधानमंत्री से मिले और उन्हें जापान सरकार द्वारा यह घोषणा करना तैयार कर लिया कि जापान सरकार भारत को स्वतन्त्र करने के लिए भारतीय स्वतन्त्रता युद्ध की सहायता करेगी। १६ फरवरी १९४२ को प्रधानमन्त्री 'श्री तोजो' ने जापान की राष्ट्रीय सभा में इस आशय की घोषणा कर दी।

इसके उपरांत श्री रासबिहारी बोस ने भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध को अधिक बलशाली तथा तेजवान बनाने के लिए तथा भारतीयों का सुदृढ़ संगठन बनाने के लिए

पूर्वीय एशिया मे बसे हुए प्रमुख भारतीय देशभक्तो और क्रांतिकारियो का २८ मार्च से ३० मार्च, १९४१ तक 'टोकियो' मे एक बडा सम्मेलन बुलाया। इस सम्मेलन मे नीचे लिखा निश्चय किया गया।

"भारत पर आक्रमण भारत की राष्ट्रीय सेना भारतीय सेनापति की अधीनता मे करेगी। वह जापान से केवल उतनी ही सैनिक सहायता लेगी जो कि इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की कार्यकारिणी परिषद आवश्यक समझेगी। वह उसके लिए जापान सरकार से प्रार्थना करेगी। स्वतंत्र भारत का भावी विधान केवल मात्र भारत के प्रतिनिधियो द्वारा बनाया जावेगा।"

उक्त सम्मेलन मे यह भी निश्चय किया गया कि १९४२ के जून मास मे बैंकाक मे एक बडा और अधिक प्रतिनिधि भारतीयो का सम्मेलन बुलाया जावे।

रासबिहारी बोस ने अत्यन्त उपयुक्त समय पर टोकियो मे भारतीयो का वह सम्मेलन बुलाया जिसमे इंडियन इंडिपेंडेंस लीग का नवीन सगठन किया गया। भारत के स्वतंत्र होने की घोषणा की गई और भारत को स्वतंत्र बनाने का कार्यक्रम भी तैयार किया गया।

जहा इस ऐतिहासिक सम्मेलन मे पूर्वीय एशिया के रहने वाले सभी भारतीयों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। वहा भारत की स्वतन्त्रता के लिए अथक परिश्रम करने वाले स्वामी सत्यानन्दपुरी तथा उनके क्रांतिकारी वीर साथी ज्ञानी प्रीतम सिंह कप्तान अकरम खा और नीलकठ अय्यर नही थे। वे बैंकाक से टोकियो सम्मेलन मे भाग लेने के लिए आ रहे थे कि उनका विमान दुर्घटना ग्रस्त हो गया और वे चारो भारत माता के वीर सपूत भारत माता को स्वतंत्र बनाने के लिए बलिदान हो गए। महाविप्लवी नायक श्री रासबिहारी बोस ने उन वीर क्रांतिकारियो और देशभक्तो की प्रशसा करते हुए कहा हमे इस महान शोक की छाया मे उन दिवगत देशभक्तो की पावन स्मृति मे प्रण करना चाहिए कि हम मृत्यु पर्यन्त मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए जूझते रहेगे।

इस सम्मेलन के निर्णय के अनुसार १ जून, १९४२ को बैंकाक मे एक वृहद भारतीय सम्मेलन हुआ। उसमे सभी प्रदेशो से भारतीय प्रतिनिधि बडी सख्या मे आए थे जिन्हे जापानी सेनाओ ने ब्रिटेन की दासता से मुक्त कर दिया था। आजाद हिंद सेना का भी एक प्रतिनिधि मडल उस सम्मेलन मे आजाद हिंद सेना का प्रतिनिधित्व करने के लिए सम्मिलित हुआ था।

बैंकाक सम्मेलन मे इंडियन इंडिपेंडेंस लीग का नया विधान स्वीकार किया गया। आजाद हिंद सेना उसकी सेना थी। इस सम्मेलन मे लीग की एक कार्यकारिणी परिषद बना दी गई जो लीग के कार्य का सचालन करती और भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध का निर्देशन करती। महाविप्लवी क्रांतिकारी श्री रासबिहारी बोस उसके अध्यक्ष चुने गए। उसमे दो सदस्य आजाद हिंद सेना के रक्खे गए। जनरल मोहनसिंह और कर्नल एम एस गिल और दो गैर सैनिक सदस्य रक्खे गए। उनमे से एक श्री राघवन थे।

बैंगकाक सम्मेलन के अवसर पर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने जरमनी से रेडियो सन्देश भेजा था कि वे शीघ्र ही भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध में भाग लेने पूर्व की ओर आवेंगे।

बैंगकाक सम्मेलन से जब प्रतिनिधि वापस अपने प्रदेशो को गए और उन्होंने सम्मेलन के निश्चय लोगो को बतलाए तो पूर्वीय एशिया में बसे भारतीयों में आश्चर्य-जनक उत्साह उत्पन्न हो गया और भारतीय युवक बहुत बडी संख्या में आजाद हिंद सेना मे प्रवेश पाने के लिए उत्सुक हो उठे। श्री रासबिहारी बोस ने समस्त पूर्वीय एशिया का दौरा कर भारत की स्वतन्त्रता के इस निर्णायक युद्ध में प्रत्येक भारतीय को भाग लेने की प्रेरणा दी।

श्री रासबिहारी बोस केवल इंडियन इंडिपेंडेंस लीग तथा आजाद हिंद सेना को संगठित करके ही संतुष्ट नही हो गए। उन्होंने आकाशवाणी के द्वारा देश में विद्रोह खड़ा कर देने के लिए आह्वान किया। वे भारतीयो के नाम संदेश प्रसारित करते, उन्होंने महात्मा गांधी तथा भारत के अन्य सभी नेताओ (नेहरू, पटेल, राजेन्द्र बाबू, सीमान्त गांधी, राजगोपालाचार्य आदि) से अपील की कि वे सब मिलकर फिर चाहे वे किसी भी आदर्श को स्वीकार करते हो देश के शत्रु ब्रिटिश शासन के विरुद्ध उठ खडे हों। भारत में जब स्वतन्त्रता का युद्ध छिड़ेगा तो इंडियन इंडिपेंडेंस लीग बाहर से युद्ध करेगी और उनकी सहायता करेगी।

जबकि महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस देश को स्वतन्त्र करने के लिए व्यूह रचना कर रहे थे तथा अपने थके हुए जर्जर शरीर को देश की स्वतन्त्रता के युद्ध का संचालन करके रात दिन बिना विश्राम किए और अधिक थका रहे थे, तभी दुर्भाग्यवश जनरल मोहन सिंह और रासबिहारी बोस में तीव्र मतभेद उत्पन्न हो गया। वास्तव में जनरल मोहन सिंह इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के आधीन रहना नही चाहते थे। वे इस प्रकार आचरण करते थे कि मानो आजाद हिंद सेना स्वतन्त्र संगठन हो और वे उसके सर्वोच्च सेनापति हो। बैंगकाक सम्मेलन में जो प्रस्ताव पारित किए गए थे, उसमे जापान सरकार से कुछ स्पष्टीकरण मांगा गया था। जापान सरकार का जो उत्तर आया वह बहुत स्पष्ट और सन्तोषजनक नही था। रासबिहारी जापान सरकार को भलीभांति जानते थे। वे यह भी जानते थे कि जापानी सरकार से किस तरह अपनी बात स्वीकार करानी पर मोहनसिंह अड गए। जब मतभेद अधिक तीव्र हो गये तो रासबिहारी ने मोहन सिंह को अपदस्थ कर दिया। जनरल मोहनसिंह ने आजाद हिंद सेना का विघटन कर दिया। उस समय स्थिति बहुत बिगड गई थी। इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की कार्यकारिणी परिषद के सदस्यो ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया परस्पर संदेह और अविश्वास का वातावरण गहन होता गया।

जनरल मोहन सिंह तथा उनके कतिपय साथियो ने उस महान क्रांतिकारी जिसने देश के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर दिया उसकी देशभक्ति पर भी संदेह किया। परन्तु मातृभूमि के लिए प्रति क्षण जीवित रहने वाले महान क्रांतिकारी देशभक्त ने इसकी तनिक भी चिंता नही की। उसने कठोरता पूर्वक अपने अधिकार का उपयोग

किया। कार्यकारिणी परिषद के सभी सदस्यो ने त्यागपत्र दे दिया था। अस्तु बोस न सर्वाधिकार अपने म निहित कर लिए। उन्होने जनरल मोहन सिंह को केवल अपदस्थ ही नही किया वरन उन्हें नजरबन्द भी कर दिया उनके साथ ही कर्नल एम एस गिल को भी गिरफ्तार कर लिया। श्री रासबिहारी बोस आजाद हिन्द सेना को विघटन से बचाना चाहते थे। इस कारण उन्हें ऐसे कठोर कदम उठाने पडे।

उसके उपरात उन्होने मेजर ज के भासले, ए सी चटर्जी, लोकनाथन, जमन कियानी और शाहनवाज की सहायता स आजाद हिंद सेना का पुनर्गठन किया। इस प्रकार आजाद हिंद सेना का विघटन होन से बच गया। लीग का प्रधान कार्यालय बगकाक से सिंगापुर लाया गया।

रासबिहारी बोस बहुत पहले से चाहते थे कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जरमनी से जापान आकर भारत की स्वतन्त्रता के इस युद्ध मे सहयोग दें। उन्होंने जापान सरकार से नेताजी को जापान लाने की व्यवस्था करने का आग्रह किया। आरम्भ म जापान सरकार असमजस मे पड गई। उसके सामने यह प्रश्न उठ खडा हुआ कि नेताजी सुभाष चन्द्र के जापान आने पर वरिष्ठता का प्रश्न खडा हो जावेगा। परन्तु रासबिहारी के विशेष आग्रह पर तथा नेताजी की जापान सरकार ने जापान आने की तीव्र इच्छा देखकर, जापान सरकार ने जरमन सरकार से बात की और नेताजी को जापान लाने की व्यवस्था की।

अप्रेल, १९४२ म महाविप्लवी रासबिहारी बोस अपने प्रधान कार्यालय सिंगापुर से टोकियो गए। १३ जून को नेताजी सुभाष चन्द्र टोकियो पहुचे। ४ जुलाई, १९४३ को समस्त सुदूर पूर्व के भारतवासियो का प्रतिनिधि सम्मेलन सिंगापुर मे बुलाया गया। रासबिहारी बोस के साथ नेताजी १३ जुलाई को सिंगापुर पहुचे।

श्री रासबिहारी बोस तथा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, भारतीय स्वतन्त्रता युद्ध के उन दोनो महान सेनानायको ने, सिंगापुर के सिटी हाल के सामने भारत की राष्ट्रीय सेना का एक साथ निरीक्षण किया। उसके उपरात वह ऐतिहासिक भारतीयो का प्रतिनिधि सम्मेलन आरम्भ हुआ।

सुदूर पूर्व के सभी देशो मे रहने वाले भारतीयो का विशाल जन समूह जिसमे बहुत बडी सख्या मे स्त्री-पुरुष तथा नवयुवक एकत्रित हुए। दोनों क्रान्तिकारी नेताओ को सुनने के लिए वहा उपस्थित था। उस विशाल जन समूह के सामने भारत की स्वतन्त्रता के लिए जीवन पर्यन्त सघर्ष करने वाले दोनो महान क्रान्तिकारी नेता खडे थे।

श्री रासबिहारी बोस ने आवेश म भावना से भरे शब्दो मे नेताजी का इन शब्दो मे परिचय दिया।

"मित्रो और भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध मे मेरे साथियो आप अब मुझसे

पूछ सकते हैं कि मैंने भारतीय स्वतन्त्रता के लिए क्या काय किया। म आपके लिए क्या उपहार लाया हू। फिर उ होने नेताजी की ओर सकेत करके कहा "मैं आपके लिए यह उपहार लाया हू।" सुभापच द्र का आप भारतीयो को परिचय देने की आवश्यकता नही है, भारत की तरुणाई मे जो कुछ सवश्रेष्ठ, अनुकरणीय, सराहनीय है और गतिशीलता है वे उसके प्रतीक हैं।

"भारत मे जो कुछ सवश्रेष्ठ और सर्वोत्तम है वे उसका प्रतिनिधित्व करत हैं।" "मित्रो और भारत की स्वत त्रता के युद्ध म मरे साथियो आज आपकी उपस्थिति म मैं अपने पद को छोडता हू और श्री सुभापच द्र बास को पूव एशिया की इडियन इडिपडेंस लीग का अध्यक्ष मनोनीत करता हू।"

अध्याय बारहवां

नेताजी का आगमन

पिछले दिनों में जनरल मोहन सिंह की महत्वाकांक्षा के कारण जो आजाद हिंद फौज की विकट समस्या खड़ी हो गई थी। उसको दृढ़ता तथा एक चतुर राजनीतिज्ञ की तरह हल करने में तथा इंडियन इंडिपेंडेंस लीग का एक तेजस्वी संगठन बनाने के लिए रासबिहारी बोस अत्यधिक कार्य करने से बहुत अधिक थक और अशक्त हो गए थे। वे शरीर और मन से बहुत थक गए थे और उनका पुराना रोग क्षय पुनः उभर आया था। डाक्टरों ने उनको आराम करने तथा काम न करने के लिए बहुत कहा परंतु जिसने अपना समस्त जीवन मातृभूमि की सेवा के लिए तथा उसको स्वतंत्र बनाने के लिए अर्पण कर दिया हो वह अपने प्राणों तथा शरीर की कब चिंता करता है। इसका परिणाम यह हुआ कि उनका क्षय रोग गम्भीर रूप से जोर पकड़ गया।

रासबिहारी बोस को अब इस बात की चिंता थी कि उनका स्वास्थ्य तो काम नहीं देता अस्तु किसी प्रकार नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को जापान लाया जावे जिससे की वे उन्हें इंडियन इंडिपेन्डेन्स लीग तथा आजाद हिंद सेना का भार सौंप सकें। उन्होंने जापान से गुप्त रूप से भारत में वीर सावरकर के पास यह संदेश भेजा कि वे किसी प्रकार नेताजी सुभाषचन्द्र को जापान भेज दें। भारत से निकलने के पूर्व नेताजी सुभाषचन्द्र बोस वीर सावरकर से मिले थे तभी वीर सावरकर ने रासबिहारी बोस का संदेश उन्हें दिया था। वीर सावरकर ने उनके विदेश जाकर आजाद हिंद सेना का संगठन कर देश को स्वतन्त्र करने के विचार का समर्थन किया।

रासबिहारी बोस का सन्देश पाकर उन्होंने विदेश जाकर ब्रिटेन के शत्रु राष्ट्रों से सहायता लेकर आजाद हिन्द सेना खड़ी कर देश को स्वतन्त्र बनाने का संकल्प कर लिया। इस प्रकार वे जियाउद्दीन का वेश धारण कर एक पठान के छद्म वेश में

अफगानिस्तान, इटली होते जरमनी पहुचे यह सर्वविदित है। जब वे जरमनी म थे तब रासबिहारी बोस उनको जापान लाने के लिए और अधिक सक्रिय हो उठे। रासबिहारी बोस के प्रयत्नो का ही परिणाम था कि बैंगकाक सम्मेलन म सम्मिलित होने के लिए नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को जरमनी मे जापान सरकार ने निमत्रण भेजा था। यही नही बगकाक सम्मेलन मे उनकी प्रेरणा से एक प्रस्ताव निम्नलिखित आशय का पारित किया गया।

"यह सम्मेलन श्री सुभाषचन्द्र बोस से प्राथना करता है कि वह कृपा करके पूव एशिया मे आवें और जापान सरकार से अपील करता है कि वह जरमन सरकार से श्री सुभाषचन्द्र बोस को जरमनी से जापान आने की सभी सुविधायें प्रदान कर जिससे कि श्री सुभाषचन्द्र बोस पूव एशिया मे सकुशल पहुच सकें। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि जरमनी और जापान मे गुप्त मत्रण तथा प्रब ध के कारण ही श्री सुभाषचन्द्र सकुशल जून, १९४३ मे टोकियो पहुचे।"

श्री रासबिहारी बोस ने लफ्टीनैन्ट जनरल "सीजो अरिस्वे" को जो जापान के सूचना विभाग के सर्वोच्च अधिकारी थे अपने पास बुलाया और कहा कि जापानी अधिकारियो को शीघ्र से शीघ्र श्री सुभाषचन्द्र बोस को जापान बुलाने का प्रयत्न करना चाहिए। जापानी अधिकारियो को यह आशका थी कि यदि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जापान म आए तो यह प्रश्न उठ सकता है कि उन दोनों मे वरिष्ठ कौन हो। सर्वोच्च अधिकारी ने रासबिहारी बोस से स्पष्ट पूछा कि मुझे तथा मेरे साथियो को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को जापान बुलाने म कोई आपत्ति नही है पर प्रश्न यह है कि हम इस बात के लिए चिंतित हैं कि दोना बोस नेताओ म से वरिष्ठ कौन होगा। जापानी अधिकारी इसी कारण नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को जापान बुलाने मे सशकित तथा चिंतित हैं। उस महान देशभक्त ने कहा इसकी आप तनिक भी चिंता न करें। मैं नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व म देश की स्वतन्त्रता के लिए काम करने के लिए तयार हू। मैं उनकी आधीनता मे काय करू गा। लैफ्टीनैंट जनरल "सीजो अरिस्वे" रासबिहारी की बात सुनकर आश्चय मे पड गए। उन्होंने लिखा है "कि मैं उनके आश्वासन से बहुत प्रभावित हुआ, उनके महान व्यक्तित्व के प्रति मैं श्रद्धान्वित हो गया। अब मैं समझा कि रासबिहारी बोस कितने महान देशभक्त हैं। अपने देश की स्वतन्त्रता को वे मान प्रतिष्ठा ही नही अपने प्राणो से अधिक मानते हैं।

सन हिगुची जरमनी (बर्लिन) मे जापानी राजदूत के अटची थे। उन्होंने सन् १९४१ म रासबिहारी बोस की पुस्तक 'भारत की पुकार' (क्राई आफ इण्डिया) पढ़ी थी। वे उस पुस्तक को पढकर रासबिहारी बोस के भक्त बन गए थे। वह पुस्तक उनको ऐसी प्रेरणादायक और रूचिकर प्रतीत हुई कि उन्होंने उसे कई बार पढा। वे उनके महान प्रशसक बन गए थे। जब नेताजी सुभाषचन्द्र बोस बर्लिन म पहुचे तो हिगुची को भी रासबिहारी बोस की तरह यह लगा कि यदि नेताजी जापान जाकर भारत की स्वतन्त्रता के लिए कार्य करें, तो बहुत अच्छा हो। उनके भी मन मे नेताजी को जापान भिजवाने की इच्छा बलवती हो उठी। अतएव सन् १९४१ के अत मे वे

स्वय जापानी राजदूत ग्रोह्सिमा से मिले ग्रौर उनसे प्रार्थना की कि वे शीघ्रातिशीघ्र नेताजी को जापान भिजवाने की व्यवस्था करें।

राजदूत ने टोकियो को नेताजी के जापान आने का सन्देश भेजा। उसने नेताजी के जापान ग्राकर भारत की स्वतन्त्रता के लिए काम करने की इच्छा का जोरदार शब्दों म व्यक्त किया ग्रौर ग्रपनी सहमति भी व्यक्त की। परन्तु जापान के उच्च राजनीतिक ग्रधिकारियो न इस प्रस्ताव की उपेक्षा की। उनका मानना था कि जापान में एक महान भारतीय क्रांतिकारी पहले से ही मौजूद है इसलिए बर्लिन से नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को ग्रामन्त्रित करने की कोई आवश्यकता नही है।

इधर स्वय नेताजी सुभाषचन्द्र बोस प्रति सप्ताह जापानी राजदूत से मिलते थे ग्रौर उनसे प्रार्थना करते थे कि उनको शीघ्र जापान भिजवाने की व्यवस्था करें। जापानी राजदूत ने जब उन्हें रासबिहारी बोस के बारे मे बताया कि वे वहा भारतीय स्वतन्त्रता के सम्बन्ध मे पहले से काय कर रहे हैं, उन्होंने वहां "इंडियन इण्डिपडेंस लीग' का सगठन किया है और ग्राजाद हिन्द सेना का गठन किया है तो नेताजी ने जापानी राजदूत को उत्तर दिया–वह उनकी महान देशभक्ति का उदाहरण है। उन्होंने जापानी राजदूत से कहा "मुझे ग्रत्यन्त हर्ष होगा यदि मैं उनके नेतृत्व मे एक सनिक के रूप मे भारत की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध कर सकू।" नेताजी के ऊपर लिखे वाक्य जब जापानी राजदूत ने जापान के राजनीतिज्ञो को लिख भेजे तो जापानी राजनीतिज्ञो की दुविधा समाप्त हो गई। नेताजी के जापान जाने का माग जो जापानी राजनीतिज्ञो की दुविधा के कारण रुका हुआ था, खुल गया।

अब रासबिहारी बोस ने नेताजी को जापान लाने के लिए जापान के सनिक ग्रधिकारियो के परामश से सारी व्यवस्था की।

जापान का स्वर ग्रब बदल गया। जापानी ग्रधिकारियों ने जरमन अधिकारियो से कहा कि हमे ग्रत्यन्त हर्ष होगा कि यदि वे नेताजी को जापान भेजने की व्यवस्था कर सकें। उन्होने जरमन अधिकारियो से यह भी कहा कि नेताजी एक ग्रत्यन्त महत्वपूर्ण राजनेता हैं। ग्रस्तु उनको जापान भेजने की व्यवस्था करते समय उनके सकुशल सुरक्षित जापान पहुचाने की व्यवस्था का ध्यान रक्खा जावे। उनके जापान सुरक्षित पहुचाने की गारन्टी होनी चाहिए। जापानी ग्रधिकारियो ने सीधे हिटलर से इस सम्बन्ध मे बात की ग्रौर यह तय हुग्रा कि नेताजी को जरमन पनडुब्बी (सब मैरीन) मे भेजा जावे।

हिटलर ने नेताजी को जापान जाने से विमुख करने का बहुत प्रयत्न किया। पर नेताजी भारत की स्वतन्त्रता का ग्रपने प्राणो से भी ग्रधिक मूल्यवान मानते थे इस कारण उन्होंने हिटलर से परामश को अमान्य कर दिया। हिटलर ने नेताजी से कहा "महामहिम आपके सकुशल जापान पहुच सकने की पाच प्रतिशत भी सम्भावना नही है। क्योंकि जापान जाने का समुद्री माग शत्रु राष्ट्रों के समुद्री जहाजो से भरा हुआ है। ग्राखिर पनडुब्बी (सब मैरीन) को कभी-कभी तो जल के ऊपर ग्राना ही होगा। उसका शत्रु राष्ट्रों के डेस्ट्रायस (सनिक जहाजो) से बच सकना सम्भव नही होगा।"

नेताजी ने जो हिटलर को उत्तर दिया वह ऐतिहासिक है और उनकी भारत की स्वतन्त्रता के लिए सम्पूर्ण त्याग करने की तयारी का एक उदाहरण है। नेताजी ने हिटलर को उत्तर दिया "यदि भगवान चाहता है कि मैं अपने देश की सेवा करू तो यह देखना भगवान का काम है कि मैं जापान सकुशल पहुचू। मुझे अपनी सुरक्षा की तनिक भी चिंता नही है। उसकी व्यवस्था करना कि मैं सकुशल जापान पहुचू मगलमय भगवान का काम है।"

फरवरी, १९४३ मे एक भोज मे नेताजी ने अपने परिचितो से कहा कि वियना में कुछ महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी हैं। हमारे स्वतन्त्रता आदोलन के लिए उनसे मिलने मैं कल वियना जाऊगा। मैं वर्लिन से एक महीना बाहर रहूगा।

परन्तु भोज की समाप्ति पर उन्होंने नाम वेयर और हिगुची से एकात मे गोपनीय बातचीत की। उन्होन उन दोनो से कहा 'कि मेरा जापान जाना खतरे से खाली नही है किंतु मेरा विश्वास है कि मैं वहा सकुशल पहुच जाऊगा मैं वहा अपने मित्रो और भारतीय सैनिको (३ हजार भारतीय सनिक जिन्हें युद्ध मे जरमनी ने बन्दी बनाया था और नेताजी ने उन्हे देश की स्वत त्रता के सग्राम के लिए युद्ध करने के लिए देशभक्ति की भावना से प्रेरित कर आजाद हिंद सेना मे भर्ती कर लिया था) को भी ले जाना चाहता हू पर उन्हें जापान ले जाने के लिए कोई यातायात की व्यवस्था नही हो सकती, मैं उनके प्रतिनिधि के रूप म जा रहा हू। यदि मेरा माग म ही अ त हो जावे तो तुम मेरी अ तिम वसीयत रासबिहारी बोस को द देना और उनकी सफलता के लिए मेरी अ तिम इच्छा बतलाना। मेरे जरमन से जाने के उपरात भारतीय स्वतन्त्रता आदोलन के नेता श्री नामबेयर होगे तुम उनका सम्पर्क श्री रासबिहारी बोस से करा देना जिससे कि हमारा आदोलन तथा स्वतन्त्रता सग्राम चलता रह।"

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस उम सब मैरीन मे तीन महीने की खतरनाक यात्रा करके ८ मई, १९४३ को सुमात्रा पहुचे। 'हिकारी' के अध्यक्ष श्री यमामाटू वायुयान से सुमात्रा उनका स्वागत करने ८ मई, १९४३ को गए। जब नेताजी टोकियो पहुचे तो उनका भावभीना स्वागत हुआ।

इडीयन इडिपेडेंस लीग का प्रधान कार्यालय मार्च, १९४३ मे ही सिंगापुर ले जाया गया था। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस १३ जून को जापान की राजधानी टोकियो पहुचे। रासबिहारी बोस वहा पहले से ही उपस्थित थे। समस्त सुदूर पूर्व के भारतीयो का एक प्रतिनिधि सम्मेलन ४ जुलाई, १९४३ को सिंगापुर म बुलाया गया। रासबिहारी बोस नेताजी के साथ ३ जुलाई १९४३ को सिंगापुर पहुचे।

महाविप्लवी रासबिहारी बोस तथा नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भारतीय स्वत त्र युद्ध के उन दोनो महान नेताओ ने सिंगापुर के सिटी हाल के सामने भारत की राष्ट्रीय सेना का एक साथ निरीक्षण किया उसके उपरात भारतीयों का वह ऐतिहासिक सम्मेलन आरम्भ हुआ।

रासबिहारी ने समस्त सुदूर पूर्व के भारतीयो का यह प्रतिनिधि सम्मेलन ४ जुलाई १९४३ को सिंगापुर म बुलाया था। अस्तु सुदूर पूर्व के समस्त देशो मे रहने वाले भारतीय स्त्री पुरुषो का विशाल जन समूह वहा एकत्रित था।। उस विशाल जन

समूह के सामने भारत की स्वतन्त्रता के लिए जीवन पर्यन्त संघर्ष करने वाले दोनों महान क्रांतिकारी नेता खड़े थे।

श्री रासबिहारी बोस ने आवेश और भावना से भरे शब्दों में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का उस विशाल जन समूह को इन शब्दों में परिचय दिया।

मित्रो और भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध में मेरे साथियो आप अब मुझसे पूछ सकते हैं कि मैंने भारतीय स्वतन्त्रता के लिए क्या काम किया। मैं आपके लिए क्या उपहार लाया हूं। फिर उन्होंने नेताजी की ओर संकेत करके कहा मैं आपके लिए यह उपहार लाया हूं। सुभाष चन्द्र बोस का आपको तथा भारतवासियों को परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। भारत की तरुणाई में जो कुछ सर्वश्रेष्ठ अनुकरणीय साहसिकता है और सर्वाधिक गतिशीलता है व उसका प्रतिनिधित्व करते हैं, उसके प्रतीक हैं।

भारत में जो कुछ सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम है वे उसके प्रतिनिधि और प्रतीक हैं। मित्रो और भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध में मेरे साथियो आज आप की उपस्थिति में मैं इण्डियन इण्डिपेंडेंस लीग के अध्यक्ष पद को तथा आजाद हिन्द सेना के सर्वोच्च सेनापतित्व के पद को छोड़ता हूं और श्री सुभाषचन्द्र बोस को इण्डियन इण्डिपेंडेंस लीग का अध्यक्ष और आजाद हिन्द सेना का सर्वोच्च सेनापति नियुक्त करता हूं।

उपस्थित जन समूह स्तब्ध था। ऐसा आत्म त्याग और निस्पृहता तो इस भौतिकवादी युग में सुनी और देखी नहीं गई थी। सत्ता और अधिकार के लिए सत्ताधारी राजनीतिक नेता कौन से जघन्य कार्य नहीं करते। सत्ता प्राप्त करने के लिए कुचक्र देशद्रोह, और विश्वासघात जैसे भयंकर नीच कर्म करने से भी राजनेता नहीं चूकते। स्वतन्त्र भारत में आज जो सत्ता प्राप्त करने के लिए अशोभनीय आचरण देखने को मिलता है वह इसका ज्वलन्त उदाहरण है। पर उस समय लोगों ने देखा कि जीवन पर्यन्त तिल तिल कर अपने को देश की स्वतन्त्रता के लिए मिटा देने वाला वह महान क्रांतिकारी नेता सत्ता दूसरे को सौंप कर हार्दिक प्रसन्नता अनुभव कर रहा है। वह दृश्य देव दुर्लभ था। संसार के इतिहास में ऐसे उदाहरण अधिक नहीं हैं। महाविप्लवी रासबिहारी बोस का यह त्याग उनकी गहन देशभक्ति और उनके महान और उच्च व्यक्तित्व का परिचायक है।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने उस महान उत्तरदायित्व को स्वीकार करते हुए श्री रासबिहारी बोस के प्रति अपनी गहन श्रद्धा व्यक्त करते हुए अपने भाषण में कहा 'पिछले महायुद्ध के समय भारत की स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणों को जोखिम में डालकर उन्होंने जो अद्भुत काम किए वे हमारी स्मृति में ही ताजे नहीं हैं ब्रिटिश साम्राज्यवाद के कागजों और फाइलों में भी ताजे हैं।

एम ए अय्यर ने श्री रासबिहारी बोस के उस भाषण के सम्बन्ध में लिखा है कि जिस उच्च भावना से प्रेरित होकर श्री रासबिहारी बोस ने उस ऐतिहासिक आंदोलन का नेतृत्व श्री सुभाषचन्द्र बोस को सौंप दिया वह भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का एक अविस्मरणीय अध्याय है। उस समय श्री रासबिहारी बोस का व्यक्तित्व उच्चता के शिखर पर पहुंच गया था। पूर्व एशिया हजारों प्रतिनिधि जो सिंगापुर के थे सिनेमा हाल के सामने उनके इस भाषण को सुन रहे थे उनकी दृष्टि में श्री रासबिहारी बोस

बोस बहुत ऊंचे उठ गए। यह उनका अन्तिम सार्वजनिक भाषण था।

बाद को जब नेताजी ने अस्थाई आजाद हिंद सरकार का गठन किया तब श्री रासबिहारी बोस को सरकार का सर्वोच्च परामर्श दाता बनाया। वे उनसे सभी महत्वपूर्ण प्रश्न पर परामर्श लेते थे।

एस ए अय्यर नेताजी सुभाषचन्द्र के बड़े भक्त और प्रशंसक थे वे किसी भी भारतीय क्रांतिकारी तथा स्वतन्त्रता के संघर्ष में भारतीय राजनीतिज्ञ को नेताजी के समकक्ष मानने को तैयार नहीं थे। उन्होंने स्वयं लिखा है कि जब वे रासबिहारी के भाषण को सुन रहे थे तब वे इस असमंजस में पड़ गए कि वे उन दोनों देशभक्तों में किसको बड़ा मानें।

रासबिहारी बोस की महानता

रासबिहारी बोस का जापान में बहुत ऊंचा पद था जापान में लोग उनको अत्यन्त आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। जापान के सम्राट से लेकर साधारण पत्रकार तथा राजनीतिज्ञ उनको अत्यन्त श्रद्धा की दृष्टि से देखता था। वे आजाद हिंद सेना के सर्वोच्च नियन्त्रक तथा "इंडियन इंडिपेंडेंस लीग" के अध्यक्ष थे। जापानी सरकार उनको भारत की स्वतन्त्रता के नेताओं में अग्रणी मानती थी। वे यदि चाहते तो स्वयं इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के अध्यक्ष और आजाद हिंद फौज के नियन्त्रक बने रह सकते थे। परन्तु उन्होंने सब कुछ त्याग दिया क्योंकि वे वास्तव में सच्चे अर्थों में देशभक्त थे। उन्होंने देख लिया कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में अधिक कार्य कर सकते हैं। उनका भारत में स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने वालों से अधिक सामीप्य था सम्बन्ध है। राजनैतिक नेताओं में ऐसा त्याग इतिहास के पृष्ठों में देखने को नहीं मिलता। इतिहास के पृष्ठों में इस प्रकार की घटनाएं जब कि एक राजनीतिक नेता ने अन्य देशों से मान व अधिकार अपने देश के हित में त्याग दिए हों नहीं मिलते। रासबिहारी बोस ने भारत की स्वतन्त्रता के लिए सब कुछ त्याग दिया। यह उनकी महानता थी।

वास्तव में रासबिहारी बोस भारत को स्वतन्त्र बनाना चाहते थे। उसका श्रेय किसी को मिले इसकी उन्होंने किंचित चिंता नहीं की। ऐसा निस्वार्थ देशभक्त इतिहास के पृष्ठों में अन्यत्र नहीं मिलता। ऐसे थे महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस।

अध्याय तेरहवां

दो विद्रोहों का नेता

नेताजी के जापान म आने और लीग के अध्यक्ष बनने के थोड़े समय उपरात महान क्रान्तिकारी दो युद्धों का नेता महान विप्लवी क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस गम्भीर रूप से बीमार हो गए । रासबिहारी मधुमेह के रोगी थे । उनकी प्रिय पत्नी जिन्होंने ने ब्रिटिश गुप्तचरों से उनकी रक्षा करने मे अपने शरीर का ध्यान नही रक्खा वे अस्वस्थ हो गई । एक दिन म उनको कई बार बचाने के लिए मानसिक दृष्टि से सन्तप्त रही । रासबिहारी उनको बहुत प्रेम करते थे । वे पहले ही मर गई । उनका शत्रु द्वारा जापानी जहाज डुबो दिए जाने के कारण उनके प्रिय पुत्र मशोहिदे के समुद्र मे डूब जाने के कारण उनको दो भयकर आघात लग चुके थे । उनको यह दोनो भयकर आघात लग चुके थे । फिर पिछले दिनो लीग और आजाद हिंद सेना के काय ने उनको बहुत थका दिया था । उन्होंने अपने स्वास्थ्य की तनिक भी चिंता नही की । वे मातृभूमि को स्वतन्त्र बनाने के लिए कृत सकल्प थे । उनको लीग तथा आजाद हिंद सेना के पुनर्गठन के काय मे इतना कठोर परिश्रम करना पडा कि उनका शरीर निर्बल हो गया वह इतने श्रम को सहन न कर सके और वे गम्भीर रूप से बीमार हो गए। जनवरी १६४५ मे वे टोकियो के हास्पिटल म चिकित्सा के लिए गए । जब वे हास्पिटल म गम्भीर रूप से बीमार थे तब जापान के सम्राट ने दोहरी किरणो वाले उगते सूय के द्वितीय आडर के जापान के उच्चतम राष्ट्रीय सम्मान से उन्हे विभूषित किया । सम्राट का प्रतिनिधि श्री सीजो उसे लेकर अस्पताल गए जहा श्री रासबिहारी अत्यन्त रुग्ण अवस्था म थे । यह पदक जब उन्हें दिया गया तो वह वीर क्रांतिकारी भावातिरेक से विह्वल हो उठा उसकी आखो से अश्रु टपकने लगे । उन्होंने बहुत धीमे स्वर म कहा "अपने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के युद्ध म जो गत वर्षों म आपने सहयोग और सहायता दी उसका मैं अत्यन्त कृतज्ञ हू और इसके लिए अनेक धन्यवाद" अभी तक किसी विदेशी को जापान सम्राट ने वह पदक नहीं दिया था । जापान सम्राट स्वय भी महाविप्लवी रासबिहारी

बोस की प्रतिष्ठा करते थे परन्तु उनके प्रति जापानी जनता की भी अगाध श्रद्धा थी इसका भी उनको ध्यान था। यही कारण था कि जब उस क्रांतिकारी का निधन हुआ तो उन्होंने उस वीर के शव को अन्तिम संस्कार के लिए ले जाने के लिए वह यान भेजा जिसमें जापान के सम्राट का शव अन्तिम संस्कार के लिए ले जाया जाता था। यह महाप्रयाण करने वाले उस क्रांतिकारी का अधिकतम सम्मान था।

२१ जनवरी, १९४५ को भारतीय स्वतन्त्रता के लिए दो विद्रोहों का वीर नेता चिर निद्रा में सो गया। २१ जनवरी, १९४५ को वह महान क्रांतिकारी देशभक्त वीर अपने हृदय में यह इच्छा लिए हुए कि दूसरे जन्म में वह अपनी जन्म भूमि, बचपन की क्रीड़ा भूमि और यौवन की संग्राम भूमि भारत के दर्शन करेगा। महाप्रयाण कर गया। उसका पार्थिव शरीर भारत माता की मिट्टी में नहीं जापान में भस्मसात हुआ।

जापान में उनको जो श्रद्धा और आदर मिला वह इसी बात से प्रगट होता है कि उनके शव को अंतिम संस्कार के लिए ले जाने को जापान के सम्राट ने उस वाहन को भेजा जिसमें केवल सम्राट के शव ले जाए जाते थे।

उनके निधन पर नेताजी सुभाषचन्द्र ने उनकी महान सेवाओं का उल्लेख करते हुए कहा 'वे सुदूर पूर्व में भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन के जनक थे। उन्होंने इंडियन इंडिपेंडेंस लीग और भारत की राष्ट्रीय सेना (आजाद हिन्द सेना) का निर्माण करके भारत की जो महान सेवा की है वह चिरस्मरणीय रहेगी। जब उनकी बीमारी के दिनों में नेताजी उन्हें देखने आए तो उनकी एकमात्र चिंता भारत की स्वतंत्रता की थी। वे असीम आशावादी थे। इम्फाल का प्रथम आक्रमण विफल हो चुका था परन्तु रासबिहारी बोस निराश नहीं थे। उन्होंने नेताजी को विश्वास दिलाया कि उनका प्रयत्न सफल होगा भारत अवश्य स्वतन्त्र होगा।

२१ जनवरी, १९४५ को जब उस महान देशभक्त का टोकियो में अन्तिम संस्कार हुआ तो नेताजी ने इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की सभी शाखाओं के भारतीयों को सामूहिक सभाएं करने का आदेश दिया। २५ फरवरी को आजाद हिंद सरकार के मंत्रिमण्डल की बैठक में रासबिहारी बोस के निधन पर शोक प्रगट किया गया और सब सम्मति से "आर्डर आफ सन आजाद हिंद" जो कि उस सरकार का सर्वोच्च सम्मान था, सर्वप्रथम रासबिहारी बोस को मातृभूमि के लिए की गई महान सेवा के उपलक्ष में मृत्युपरान्त दिया गया। मंत्रिमण्डल ने यह भी निश्चय किया कि टोकियो की सैनिक एकेडेमी से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले सर्वश्रेष्ठ भारतीय केडेट को रासबिहारी पदक दिया जाय। उस महान देशभक्त के लिए उन भारतीयों ने जो उस समय ब्रिटिश साम्राज्यवाद से जूझ रहे थे जिनका जीवन प्रतिपल संकट में था उन्होंने तो उस वीर देशभक्त और भारत की स्वतंत्रता के लिए अनवरत संघर्ष करने वाले वीर सेनानी के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित की किन्तु स्वतन्त्र भारत की सरकार ने उस महान देशभक्त और भारत की स्वतन्त्रता के लिए अनवरत संघर्ष करने वाले वीर सेनानी के प्रति किसी प्रकार की श्रद्धा या सम्मान व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं समझी।

कृतघ्न भारत

स्वतन्त्र भारत में सरकार के द्वारा उनका जन्म दिन या पुण्य तिथि नहीं मनाई

जाने, उनका बाद राष्ट्रीय स्मारक नहीं बनाया गया। लोकसभा की दीर्घा में उनका चित्र नहीं लगाया गया। दिल्ली में उस स्थान पर जहाँ उन्होंने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंककर शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य को ललकारा था और उस चुनौती दी थी कोई स्तम्भ खड़ा नहीं किया या शिलालेख नहीं लगाया। डाक विभाग ने उनके सम्मान में डाक टिकट नहीं निकाला। रासबिहारी बोस की एकमात्र जीवित सन्तान श्रीमती हिगुची का भारत सरकार ने उनके पिता की मातृभूमि में आमंत्रित कर सम्मानित नहीं किया। हम भारतीयों को इस चरम सीमा की कृतघ्नता देखकर स्वयं कृतघ्नता को लज्जा अनुभव होती होगी। जो सत्ता में हैं हम उनका सम्मान करते नहीं थकते पर उन देशभक्तों को याद करने का भार भी उठाना नहीं चाहते जिन्होंने अपने वतन की स्वतन्त्रता के लिए अपना-अपना सब कुछ गंवा दिया और जिनकी हड्डियों पर भारत की स्वतन्त्रता का यह भवन खड़ा है। हम भारतीय कृतघ्नता में बेजोड़ हैं सर्वोपरि हैं।

अपने जीवन के दर्शन के मूल तत्व की व्याख्या करते हुए उस महान देशभक्त ने २१ अप्रैल १९४२ को कहा था—

"I was a fighter one fight more
the Last and the best"
"मैं एक योद्धा रहा हूँ, एक और
अन्तिम और सर्वोत्तम"

रासबिहारी का लेखन तथा प्रकाशन

रासबिहारी बोस प्रचार और प्रकाशन का महत्व जानते थे। यही कारण था कि उन्होंने दो पत्र निकाले "न्यू एशिया" तथा "एशिया रिव्यू" उनमें वे भारत तथा परतन्त्र एशियाई देशों के सम्बन्ध में लिखते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद तथा यूरोपीय साम्राज्यवाद की धज्जियाँ उड़ाते थे। वे जापान के प्रमुख पत्रों में भारत तथा एशिया के पराधीन देशों के सम्बन्ध में लिखते रहते थे। और कतिपय जापानी पत्र के सम्पादकीय लेख भी लिखते थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने भारत के सम्बन्ध में जापानी भाषा में अनेक पुस्तकें भी लिखीं जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—

१ एशिया की क्रान्ति का सिंहावलोकन (१९२९) २ भारत (१९३०) ३ उत्पीडित भारत (१९३३) ४ भारतीयों की कहानियाँ (१९३५) ५ भारत में क्रान्ति (१९३६) ६ तरुण एशिया की विजय (१९३७) ७ भारत का रुदन (१९३८) ८ भगवत गीता (१९४०) ९ भारत का इतिहास (१९४२) १० दासता की शृंखलाओं में जकड़ा भारत ११ स्वतन्त्र भारत, १२ स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष (१९४२) १३ रामायण (१९४२) १४ भारतीयों का भारत (१९४३) १५ अन्तिम गान (टैगोर की शेखर कविता) (१९४३) १६ बोस की अपील (१९४४)।

क्या ही अच्छा हो कि भारत का शिक्षा मंत्रालय बोस की लिखी पुस्तकों में से कुछ का हिन्दी, अंग्रेजी और बंगाली में अनुवाद कराकर प्रकाशित कराये। एक विद्वान जापान भेजा जावे जो जापान के पत्रों तथा उनके पत्रों में से रासबिहारी के लेख ढूँढ निकाले उनके अनुवाद कराकर उनको पुस्तकाकार प्रकाशित करे। उन्होंने जो भारतीय राजनैतिक नेताओं के नाम तथा भारतीयों के नाम अपने भाषण आकाशवाणी

से प्रसारित किये उनका संकलन किया जावे और उन्हें प्रकाशित किया जावे । जिससे भारतीय जान सकें कि भारत की जटिल राजनीतिक समस्याओं के बारे मे उनकी क्या सम्मति थी । यह अत्यन्त खेद की बात है कि जो जीवन पर्यन्त मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करता रहा और भारत की स्वतन्त्रता के लिए उसने दो बार समस्त भारत म सशस्त्र विद्रोह का आयोजन किया उसके विचारो से सामान्य भारतीय अनभिज्ञ रहे ।

वास्तव म भारत सरकार ने महाविप्लवी रासबिहारी बोस के साथ जसी उदासीनता का व्यवहार किया वह आश्चर्य जनक और अत्यन्त खेदजनक है यदि वे किसी अन्य देश मे पैदा होते और उसकी स्वतन्त्रता के लिए इतना काम करते तो कृतज्ञ देशवासी उनकी पूजा अर्चना करते । देशभर म उनका जन्म दिन मनाया जाता और उनका एक सुन्दर और भव्य स्मारक खड़ा किया जाता और उनके लेखो का अनुवाद करके उनके विचारो का प्रचार किया जाता । किंतु स्वतन्त्र भारत मे यह सब कुछ नही हुआ । यह दुर्भाग्यपूर्ण है ।

परिशिष्ट

सिंगापुर मे कोई तनाव नही था वह शिथिल और आनन्दमग्न था। चीनी कैलेंडर के अनुसार सोमवार पन्द्रह फरवरी नव वर्ष का दिवस था। शनिश्चर से इस नगर ने व्यापार और व्यवसाय, आयात और निर्यात, जहाजों पर माल लादने की अनुसूचियो, कोयले की आवश्यकता और जहाजो के प्रस्थान समय के सम्बन्ध में विचार करना बन्द कर दिया था। सिंगापुर का अस्तित्व ही धन कमाने के लिए था सन् १८१९ से जबकि स्टम्फोर्ड रैफिल्स ने २०९ वर्ग मील के जंगल और वायुशिथिल दलदल के उस अल्प जन संख्या वाली भूमि पर यह व्यापारिक स्थान स्थापित किया था सिंगापुर यही करता आ रहा था। उस स्थान पर व्यापारिक केन्द्र स्थापित करने का उसका उद्देश्य ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी को डच कम्पनी से जो सुमात्रा जावा अर्थात सुदूर पूर्व ईस्ट इंडीज के लाभदायक समीपवर्ती क्षेत्र में लम्बे समय से अच्छी तरह से जमी हुई थी, निकट प्रतिस्पर्द्धा में लाना था।

सिक्ख पहरेदारों के अतिरिक्त जो सुरक्षा के लिए नियुक्त किए गए थे सिंगापुर के बड़े व्यापारिक संस्थानों के भवनों में और कोई नहीं था। वे जन शून्य थे। बंदरगाह के नौस्थल (डाक) और गोदाम सूनसान थे और केपल बंदरगाह का जल प्रशांत तथा अछूता था। वह कालियर घाट से बिना किसी रुकावट के स्वतन्त्रता पूर्वक टकरा रहा था। १९१५ के इस वर्ष मे सिंगापुर और मलाया स्टेट में व्यापारिक जहाजो से कम ही लोगों को वास्ता पड़ा था क्योंकि विश्व व्यापी महायुद्ध ने रबर और टिन की कल्पनातीत अधिकतम राशि को सोख लिया था। अस्तु लाभ और हानि को सामान्य व्यापारी भूल गए थे। चीनियों ने कुछ घण्टे अपने परिवारों में अदम्य उत्साह के साथ नववर्ष का समारोह मनाया और योरोपियन मलाया और भारतीयों तथा अन्य जातियों ने इस सार्वजनिक अवकाश का लाभ अपने ढंग से आनन्द मनाने और उस नम (आर्द्र) थका देने वाले और कष्टकर जलवायु में आराम करने में व्यतीत किया।

कतिपय वृद्ध योरोपियन धनी चीनियों के घरों पर उन्हें नववर्ष की बधाई देने

गए। उनकी आर्थिक सम्पन्नता जो उस द्वीप के मध्यपत्तन व्यापार के द्वारा निर्मित हुई थी तथा उनके द्वारा बाह्य रूप म पश्चिमीय ढग के रहन-सहन को अ गीकार करने के कारण (कम से कम व्यवसायिक कारबार के समय) ने उस औपनिवेशिक समाज म उनको एक सीमा तक सामाजिक मान्यता दिलादी थी । उन सम्पन्न व्यापारिक प्रतिद्वि दियों को अभिवादन करके, उ हें परम्परागत नववर्ष की शुभकामनाए अर्पित कर और परिवारो को भेंट और उपहार देकर वरिष्ठ योरोपियन या तो अपने क्लबो म म दिरापान, ताश खेलन तथा बिलिअर्डस के लिए अथवा अपने बडे बगलो के ठडे बरामदो मे गहरी और आरामदायक बास की कुर्सिया म सोने के लिए वापस लौट आते थे ।

तरुण योरोपियन जिनकी सख्या पिछले वष से बहुत कम हो गई थी । क्योकि उनम स बहुत से किचनर की नई सेनाओ मे भर्ती होन के लिए स्वदेश वापस लौट गए थे । अपनी निजी गोष्ठी बना लेते थे जो मुख्यत अविवाहितो के सगठन थे । वे गोष्ठिया इस बात पर बल देती थी कि जब सदस्य को नौकरी मिल जाय तो भी वह अविवाहित ही रहगा क्योकि उनमे अधिकाश वे लोग होते थे जो नियुक्ति के लिए प्रार्थी होते थे । सदस्य का कई वर्षों तक अविवाहित ही रहना पडता था । यह कोई अधिक कठिन बात नही थी क्योकि द्वीप मे बहुत कम सख्या मे महिलाए थी और समय का तकाजा था कि अन्य किसी जाति की स्त्री से केवल गुप्त सम्बन्ध रखा जा सकता था । अस्तु इन तरुणो के लिए सिगापुर में सावजनिक अवकाश का अर्थ था कि वे कोई न कोई खेल खेलें । अवकाश के दिन वे क्रिकेट, गाल्फ तथा तैराकी मे समय व्यतीत करते थे । तत्पश्चात वे अपने क्लब मे जाकर मद्यपान मे अधिक लम्बा समय व्यतीत करत थे ।

स्टेट सैटिलमट के मूल निवासियों मलयालियो के लिए तीन दिनो का अवकाश व ह या तो अपने घरा म रहा अथवा नगर के बाहर जगला और नदियों के तट पर बसे हुए अपने गावा जो अधिक दूर नही थे, जाने का अवसर प्रदान कर देता था । परिश्रमी भारतीय लोग कठिन श्रम की थकान मिटाने के लिए विश्राम करत थे । यद्यपि कुछ भारतीय दुकानदार अपनी दुकाने खोलते थे ।

नव वष के दिन का प्रात काल स्वच्छ आकाश और सूय की किरणो से आच्छादित था परन्तु अपराह्न के पश्चात आकाश मेघाछन्न हो गया और रुक-रुक कर द्वीप में हल्की वर्षा होती रही। यह उत्तर पूर्वी मानसून के लुप्त होने का वार्षिक सपनन था । चीनियो ने मौसम की इस खराबी की तनिक भी परवाह नही की और अपने पव को पूववत उल्लास और उत्साह से मनाया । नगर के जिस भाग मे चीनी रहते थे उसकी तग गलिया आतिशबाजी के गोलो की आवाज से प्रतिध्वनित हो उठी । आद्र वायु ने जली हुई बारूद की तेज गध को अपने म समाहित करके दूकान गृहो के नीचे महराबदार तग रास्ता को जिन्हे पाच फिट के मार्ग भी कहा जाता है उन रग-बिरगी गलियो को चलाई हुई आतिशबाजी की चमकती हुई राख से पाट दिया ।

रात्रि का भोजन करके योरपियन मुहल्ले मे लोग आराम कुर्सी मे धीरे चलते

हुए पखो के नीचे या अपने पलग के चारो ओर मच्छरदानी लगा कर उस सुकुमार और आराम देने वाले कारावास म सोते थे। व्यापारी जहाजो के मालिक बैंकर और बगीचा के स्वामी बड़े-बड़े टिफिनो से उफनती हुई ठडी बियर से अपने गले को सीचते थे। दूर पर आतिशबाजी का शोर उनके आराम म बाधा नहीं डालता था। वे उस शोर के अभ्यस्त हो गए थे। वे इसके लिए विवश थे। क्योकि बिना विस्फोट और कोलाहल के किसी चीनी त्यौहार या समारोह की कल्पना ही नही की जा सकती थी।

उन लोगो म जिन्होने उस नीरस और चिपचिपे दिन मध्याह्न के बाद कुछ घटे विश्राम करने का निश्चय किया था। स्टेट सैटिलमेट की सेना के जनरल आफिसर कमाडिंग ब्रिगेडियर जनरल डी एच रिडाऊट भी थे। उनकी तबियत ठीक नही थी। मलेरिया ज्वर के भयकर प्रकोप ने उन्हें अब भी प्रभावित कर रखा था। पूर्ण और ओजस्वी स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए उनकी शात दिनचर्या म उस दिन प्रात काल अपने शासकीय गृह टागलिन से अलक्जैंड्रिया बैरेक म जाने की अनिवार्य आवश्यता ने विघ्न उपस्थित कर दिया था। वहा उन्होने इडियन रैजीमेट पाचवी लाइट इनफट्री का जहाज पर जाने के पूर्व का निरीक्षण किया जो 'नाग' सैनिक जहाज से दूसरे दिन हागकाग को जाने वाली थी। ब्रिगेडियर विदाई की उस परेड से बहुत प्रसन्न हुआ और रजीमेट के मार्च पास्ट तथा प्रदर्शन के सम्बन्ध मे उसने कमाडिंग आफिसर लैफ्टीनट कर्नल मार्टिन से सराहना की। उसने सैनिको को भी सम्बोधित किया उनकी पूर्व सेवाओ की उसने भूरि-भूरि प्रशसा की और उनकी नई नियुक्ति पर शुभकामनाए अर्पित की। दुर्भाग्यवश रिडाऊट अपने भाषण म पाचवी लाइट इफैंट्री का कहा जाना है इसका उल्लेख करना भूल गया। यह ऐसी चूक थी जिसके कुछ ही घटा म गम्भीर परिणाम सामने आए।

ब्रिगेडियर ने पाचवी लाइट इफैंटरी के अफसरो के साथ दिन का भोजन किया और मोटर कार से टैंगलिन लौट आया। वह अपने कमरे म अधिक देर विश्राम नही कर सका होगा कि ३ बजे सायकाल को टेलीफोन की घटी ने उसके विश्राम में बाधा पहुचाई। पाचवी लाइट इफैंटरी के कर्नल मार्टिन टेलीफोन लाइन पर थे। उन्होने अत्यन्त आश्चर्य चकित कर देने वाली रिपोर्ट दी। उसकी पाचवी लाइट इफैंटरी "राजभक्त पाचवी" ने सैनिक विद्रोह कर दिया और सैनिको ने कुछ अधिकारियो को मार दिया।

यद्यपि रिडाऊट यह जानता था कि बटालियन म कुछ असतोष व्याप्त है पर इस समाचार ने अवश्य ही उसे भौंचक्का बना दिया होगा। क्योकि उसी दिन प्रात काल उसने एक तेजस्वी और दिखती हुई अच्छी अनुशासित रजीमेट का निरीक्षण किया था। अब उससे कहा जा रहा था कि जिन सैनिको ने परेड ग्राऊड पर उसे इतना अधिक प्रभावित किया था, विद्रोही हो गए उन्होने कुछ अधिकारियो को गोली मार दी और मार्टिन के बगले पर धावा बोलने की तयारी कर रहे हैं। टेलीफोन का यह सदेश जहा तक सिंगापुर का सम्बन्ध था व्यापक फलितार्थों मे भयभीत कर देने वाला था। अन्यो की अपेक्षा रिडाऊट को अधिक अच्छी तरह ज्ञात था कि नगर आतरिक सुरक्षा के लिए किसी आतरिक खतरे का सामना करने के लिए तनिक भी सज्जित

नहा था। उस द्वीप म पाचवी ही नियमित इन्फैंट्री बटालियन थी। उस द्वीप मे सामान्यत दो बटालियन रहती थी। किंतु पहली बटालियन अर्थात किंग्स ओन याक-शायर लाइट इन्फैंटरी कुछ ही समय हुआ स्वदश का वापस लौट गई थी। पश्चिम के मार्चे पर लाइया मे अपना स्थान ग्रहण करने के पूव उसको स्वदश भेज दिया गया था। अब जबकि पाचवी बटालियन न सैनिक विद्रोह कर दिया तो रिडाऊट के पास केवल शाही सेना के साथ स्थान "रायल गरिसन आरटिलरी" क कुछ तोपची सनिक, मलाया स्टेट गारड्स की एक खच्चर बटरी जोहोर स्टेट सेना की एक छोटी टुकडी और स्थानीय बडी उमर के स्वय सेवक (वालंटियर) थे।

यदि विद्रोही सनिक कृत निश्चय हा और उनका नतृत्व ठीक प्रकार का हो तो वे ब्रिटन के अत्य त महत्वपूर्ण और साम्राज्य क जीवन-आवश्यक इस विदेशी उप निवेश पर अधिकार कर सकते थे, जिसके भयकर परिणामो की कल्पना नही की जा सकती थी। विद्रोही सैनिक द्वीप को अवश्यभावी ब्रिटिश प्रत्याक्रमण के विरुद्ध अपन अधिकार म रख सकने की आशा नही कर सकते थ। परन्तु इस बीच वे स्थानीय युद्ध की तयारी को पगु बना सकते थे, अत्यन्त सुकमार जातीय सम्बन्धो को उस अनक जातियो क समाज म बिगाड और उलट सकते थे तथा अधिक सख्या म अंग्रेजो को मारने के अतिरिक्त सम्पत्ति को तहस नहस कर सकत थे। छियानवे वर्षा तक सिंगापुर ने ब्रिटेन के शांतिपूर्ण शासन का उपयोग किया था। चाहे कितने कम समय के लिए ही सही उस पर से ब्रिटेन का नियत्रण हट जाने से एशियावासियो म ब्रिटेन की प्रतिष्ठा कम हो जाने के रूप म बहुत महगा पडेगा, इससे भी अधिक महत्व की सम्भावना यह थी कि जरमनी और टर्की इस स्थिति का उपयोग ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध प्रचार करन म कर सकते थे।

रिडाऊट के मस्तिष्क म यह सब विचार कौंध गए हाग। उसने शीघ्रता पूवक अपनी सनिक वर्दी पहनी और उसी उस फोर्ट कैनिंग क सनिक मुख्यालय को ले जाने के लिए अपनी कार को मगवा भेजा। परन्तु कुछ एस आवश्यक काय थ जिन्हे उस क्षण उसे छोडना पड रहा था। उसका पहला कर्त्तव्य यह था कि वह अपने थोडे से सनिको का सगठित करता और विद्रोही सेना पर शीघ्रता पूवक आक्रमण करता तथा जनता को सावधान करता और उन्हे जो कुछ घटित हो रहा था उससे अवगत कराता। अपनी मोटर कार म बैठने से पूव उसने अपनी पत्नी स कहा कि वह जरमन और आस्ट्रियन कैदियो के शिविर के कमांडर को फोन करके जो कुछ घट रहा है उससे सावधान कर दे।

जनता को उस खतरे से सावधान करना सरल नही था, द्वीप म रेडियो की सुविधा नही थी, केवल कुछ ही निजी व्यक्तियो के यहा फोन थ। अपने बगलो में वे अलग थलग थ। यारोपियनो का इस बात का तनिक भी ज्ञान नही था कि अलक्षेद्रिया बरिया में क्या हो रहा है। बहुतो ने विद्रोही सनिको द्वारा राइफिल से गोली चलाने की आवाज का भूल से आतिशबाजी चलना समझा। जबकि विद्रोही सनिक सडको पर घम रहे थ। तब भी वे योरोपियन यही समझते रहे कि यह आतिशबाजी चलन तथा उत्सव का शोर है। इस भूल के कारण बहुतो को प्राणो स हाथ धोना पड़ा।

वह कौन था जिसने पहली गोली चलाई इसका कभी पता नहीं लगाया जा सका। यह निश्चित है कि एक सैनिक को यह कार्य सुपुर्द किया गया था कि पांचवी लाइट इफैंटरी बटालियन के ८१८ सैनिकों को विद्रोह करने के लिए, अपने ब्रिटिश अधिकारियों को मार डालने के लिए तथा उसके बाद सिंगापुर पर आक्रमण करने के लिए कूच करने का संकेत देने के लिए वह एक राऊंड गोली चलाए। सैनिक विद्रोह स्वतः अपने आप नहीं हुआ था। कुछ समय पूर्व उसकी योजना तैयार की गई थी। रजीमेंट की आठ कम्पनियों में जो लोग सैनिक विद्रोह में सम्मिलित होने के लिए राजी थे उन्हें क्या करना है यह तय कर लिया गया था और उन्हें बतला दिया गया था। पहली गोली लगभग तीन बजे सायंकाल को अलक्षेंद्रिया बरिकों के प्रवेश द्वार पर स्थित गार्ड रूम के समीप चलाई गई। ज..। कुनीदल छोटे अस्त्र-शस्त्र तथा खाली बारूद के केस ट्रकों में लाद रहे थे। कुछ अधिकारी गोली की आवाज सुनकर अपने क्वार्टरों से यह पता लगाने के लिए निकल भागे कि जिस गम्भीर अस्त-व्यस्तता का उन्हें बहुत दिनों से भय था, क्या आरम्भ हो गया?

फिलिप मैसन के शब्दों में इस सैनिक विद्रोह में भी वे पुराने और प्रतिष्ठित तत्व मौजूद थे जो प्रत्येक भारतीय सैनिक विद्रोह में देखने को मिलते हैं। अर्थात प्रभावहीन अधिकारी, बाहर का विघटनकारी प्रभाव तथा सेना की शिकायतें यह तीनों कारण वास्तव में विस्फोटक थे जिनका सम्मिश्रण हो गया था। परंतु जब हम देखते हैं कि रजीमेंट की इस खतरनाक स्थिति से सैनिक और नागरिक अधिकारी अवगत थे तो सामान्य जन को यह असाधारण प्रतीत होता है कि उस स्थिति को अर्थात उन कारणों को अलग-थलग करने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। एक अस्पष्ट और आत्मतुष्टि की आशा पर भरोसा रक्खा गया कि पांचवीं बटालियन की नैतिक मनःस्थिति में दृश्य तथा जलवायु के परिवर्तन से सुधार हो जायेगा।

जहां तक अधिकारियों (अफसरों) का प्रश्न था बटालियन में शीर्ष स्थान अर्थात कमांडिंग आफिसर से ही कठिनाई और गड़बड़ की शुरूआत थी। वह पहले उसी रजीमेंट में मेजर के रूप में दो कम्पनियों का नेतृत्व कर चुका था। मेजर के रूप में उसकी कर्त्तव्य पालन की कुशलता इस प्रकार की थी कि उसके कमांडिंग आफिसर ने अपने वरिष्ठ अधिकारियों से इस बात का शासकीय रूप में संदेह प्रगट किया था कि वह उसके उत्तराधिकारी के रूप में रजीमेंट का कमांडिंग आफिसर होने के योग्य नहीं है। यह स्थिति भद्दी थी उसमें आत्मविश्वास नहीं था, इस कारण वह दूसरों को संदेह की दृष्टि से देखता था। नया कमांडिंग आफिसर अपने सैनिकों तथा आधीनस्थ अधिकारियों की श्रद्धा और आदर पाने में असफल रहा और कुछ अवलोकन करने वाला का कहना था कि कुछ ब्रिटिश और भारतीय अधिकारी उसे घृणा की दृष्टि से देखते और उसके साथ अमानवता का व्यवहार करते थे। मार्टिन के सम्बन्ध में कर्नल के प्रतिकूल प्रतिवेदन (रिपोर्ट) के परिणाम स्वरूप मार्टिन को अपमानजनक अनुभव को सहन करना पड़ा। उसे तीन महीने के लिए रजीमेंट से विशेष परीक्षा के लिए भेज दिया गया। आश्चर्य की बात है कि परीक्षा का परिणाम यह निकला कि रजीमेंट का कमांड करने के लिए वह योग्य पाया गया और वह वापस अपनी रजीमेंट को

कमाड करने के लिए भेज दिया गया। यह स्वय उसके लिए तथा उसके नीचे काम-करन वाले आदमियो के लिए न्यायपूर्ण नही था। सामान्य बुद्धि तथा प्राज्ञता का तकाजा था कि यदि उसे अपनी अपनी योग्यता को प्रमाणित करने का न्यायपूर्ण अवसर देना था तो उसको अन्य किसी रजीमट म भेजा जाना चाहिए था। परन्तु उच्च अधिकारियो ने इसके विपरीत आज्ञा दी।

नया पदोन्नति पाया हुआ लफ्टीनैंट कनल पाचवी बटालियन मे इस विश्वास को लेकर वापस लौटा कि उसको अपने अधीनस्थ अधिकारियो का समथन प्राप्त नही है। और एक समूह ऐसा है जिसने उस बटालियन का कमाड प्राप्त करने से रोकने के लिए षडयत्र किया था। वह पुरानी बातो को भूल जाने के लिए तैयार नही था। उसने अपनी विमनयता को छिपाया नही और उन अधिकारियो को जिन्हे वह अविश्वास की दृष्टि से देखता था उनके सनिको के सामने ही उन्हे अपमानित कर देता था। कुछ अधिकारी उसके सम्बन्ध मे अपने विचारों को अपने तक ही रखते थे, परन्तु अन्य अपने असन्तोष को खुल कर सिगापुर म सामाजिक पार्टियो तथा सम्मेलनो म व्यक्त करते थे। सिगापुर के क्लबो और अन्य सावजनिक स्थानो पर रजीमेंट की गिरी हुई स्थिति चर्चा का विषय बन गई थी। पाचवी बटालियन की दशा कितने नीचे स्तर पर पहुच गई थी यह इसी से स्पष्ट हो जाता है कि बटालियन के अधिकारी रजीमैंट की आन्तरिक समस्याओ को असनिक नागरिको के सहानुभूति पूर्ण कानों को सुनाते थे। इस पर टिप्पणी करने की आवश्यकता नही है।

यदि बटालियन युद्धरत क्षेत्र मे होती तो सम्भवत स्थिति इससे कुछ अच्छी हो सकती थी। परन्तु १९१५ मे सिगापुर सैनिक दृष्टि से पिछडा हुआ क्षेत्र था। शान्तिकाल मे यद्यपि वहा की नियुक्ति अशक्तता के कारण होती थी, सिगापुर सुखद था। वहा का सामाजिक जीवन यद्यपि विभिन्न प्रकार का था, परन्तु गतिशील था। जबकि खेलो के लिए वहा बहुत सुविधा थी। मलाया के वनों म बडे जानवरो के शिकार से लेकर सिद्धाते पादग म क्रिकेट और स्थानीय भद्र जनो के सुन्दर घास कटे हुए लानो पर क्रिकेट खेलने की सुविधा थी। सनिक ड्यूटी कठोर और थका देने वाली नही थी। अधिकतर समारोह सम्बन्धी सनिक ड्यूटी होती थी। सिगापुर की गरम और आर्द्र जलवायु म अधिक ओजस्वी सैनिक प्रशिक्षण की गुजाइश नही थी फिर यहा सनिक कवायद कराने के लिए क्षेत्र भी कम थे यदि कोई उनको आवश्यक समझता। केवल असाधारण सनकी शिकारी ही जगलो म शिकार खलने जाता था और अभी हाल म लगाए गए बहुमूल्य रबर के बाग उद्दड सनिको की पहुच के बहार थे। वे उनमे नही जा सकते थे। अतएव सिगापुर की सनिक व्यवस्था मे परेड तथा अच्छे और भव्य माच पास्ट का महत्व बहुत अधिक था।

पाचवी बटालियन सिगापुर मे कई वर्षो तक रही थी निस्सदेह उसका उन पर प्रभाव पड़ा। थका देने वाले इस जलवायु म एक छोटे समूह म जिन घेर म रख दिया गया था। आपसी मेल जोल तथा सद्भाव रख पाना एक कठिन समस्या थी। यदि छोटी-छोटी क्षोभ उत्पन्न करने वाली बातो को बहुत अधिक तूल नही देना हो तो अपने पर नियत्रण रखना तथा सहिष्णु होना आवश्यक होता है। पाचवी बटालियन के

आफिसर भोजन गृह (मेस) म इन गुणा का अधिकतर प्रभाव था। पर तु कनल और उन अधिकारियो म जिन्ह वह कुचक्री मानता था। दुर्भावना बहुत गहरी पठ गई थी। फिर भी सब ठीक हो जाता यदि पाचवी बटालियन की नियुक्ति उस क्षेत्र मे होती जहा उसके अधिकारी चाहत थे। अर्थात मसोपाटामिया के युद्ध मोर्चे पर परतु उसका हागकाग सनिक दृष्टि से पिछडे और गतिहीन क्षेत्र म भेजा गया।

युद्ध से दूर रक्खे जाने की भावना और अधिक कष्टदायक हो गई जबकि "किंग्स आन लाइट इन्फ्रैंटरी" ब्रिटेन के लिए रवाना हो गई और जरमनी का विध्वसक समुद्री जहाज "ऐमडन" ब्रिटिश जहाजा को हिदुस्तान के महासागर म डुबो रहा था। उस स्थिति म सिंगापुर मे यथेष्ट सेना का रखना आवश्यक था विशेषकर जब कि "ऐमडन" पाच सौ मील उत्तर पश्चिम म साहसिक धावा करके पनाग पहुच गया और एक रूसी क्रजर और फ्रैंच डैस्ट्रायर (जहाजा का नष्ट करने वाला) कि तु ग्यारह दिन बाद ९ नवम्बर, १९१४ को उसकी एच एम ए एस सिडनी जहाज से मुठभेड हुई और वह समाप्त हो गया।

एमडन–जहाजा को डुबान वाला के समाप्त हो जाने पर सिंगापुर तथा उसके व्यापार का बडा खतरा समाप्त हो गया। एमडन के समाप्त हो जाने पर तनाव दूर हो गया प्रत्येक व्यक्ति शिर रक्षण का आनन्द प्राप्त करने लगा और "कोयली" जहाज का नौ प्रस्थान की आज्ञा दे दी गई। भारत मे यह रीति थी कि जब कोई नियमित–रगुलर ब्रिटिश यूनिट ब्रिटिश सेना जाती थी तो उसके स्थान पर प्रादेशिक सेना (टरीटोरियल रजीमट) लती थी। सिंगापुर म यह आवश्यक नही समझा गया यही नही वह योजना करने वाले उच्च अधिकारी एक पग आगे बढ गए। क्योंकि चीन के सधि बन्दरगाह और चीनी समुद्र तट पर स्थित जरमनी के प्रदेश की चौकसी करने के लिए सेना की आवश्यकता थी। यह तय किया गया कि हागकाग से एक बटालियन का वहा लाकर वहा चौकसी करने वाली सेनाओ की सख्या म वृद्धि की जाव उस भारतीय बटालियन का स्थान पाचवी लाइट इन्फ्रैंटरी ले ले।

पाचवी बटालियन के अधिकारियो ने इस प्रस्ताव का बुरी दृष्टि से देखा। जब कभी सनिक कायवाही करनी होती थी तो राज्य भक्त पाचवी को पीछे छोड नही जाता था जिस प्रकार सेना के पीछे ड्रम बजाने वाल रहत है।

बगाल नटिव इन्फ्रैंटरी' * *की बयालीसवी रजीमेट होने के रूप म वह बर्मा* और अफगानिस्तान और प्रथम सिक्ख युद्ध मे तीन भयकर युद्धा मे लडी थी। १८५६ के सनिक विद्रोह म बयालीसवी रजीमेट सागर मे विद्रोहियो की ओर चली गई थी। *किन्तु किसी तरह वह उस घृणा से बच गई जा अन्य विद्रोही सेनाओ पर बरसाई गई।* *१८६१ म उसका रजीमट बगाल नेटिव लाइट इन्फ्रैंटरी के रूप मे पुनसगठन किया गया।* जिसने बरमा और अफगानिस्तान म विजय प्राप्त कर और अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त

---

* पाचवी लाइट इन्फ्रैंटरी की उत्पत्ति का पूरा विवरण 'अ' परिशिष्ट म पाठक देख सकते हैं।

की थी उसको "राज्य भक्त पाचवीं" की उपाधि से पुरस्कृत किया गया। १८५६ के सनिक विद्रोह म उसके वास्तविक आचरण को सम्भवत भुला दिया गया। क्योंकि १८५७ के सनिक विद्रोह पर १९१५ मे की जाने वाली टिप्पणियों मे ५८ वष पूर्व के इस विद्रोह म उस सेना की दृढ राज्यभक्ति की निरतर प्रशसा की जाती थी। तब उसने विद्रोह नही किया तो अब उसने क्यों विद्रोह किया ? यह एक सद्धातिक प्रश्न था परन्तु उस समय उसन सिंगापुर के निवासियों को इस प्रश्न पर सोचने को विवश कर दिया।

वह रजीमट असाधारण थी क्योंकि उसम सभी सनिक पूर्वीय पजाब और दिल्ली के मुसलमान रगर तथा पठान थे और थोडे से बिलोची थे। सिंगापुर में नववर्ष के दिन जो घटना घटी उस पर सैनिकों के धम का प्रभाव था।

महायुद्ध के प्रथम दो वर्षों में जरमनो, तुर्कों और भारतीय क्रांतिकारियों ने भारतीय सेनाओं के घटकों म असन्तोष फैलाने का भागीरथ प्रयत्न किया था। * पान इस्लाम के एजेंटों ने यह प्रचार किया कि मुसलमानों को टर्की से युद्ध करना जो इस्लाम की खिलाफत का मुख्य स्थान है, गलत है। अलक्सैंड्रिया बरिकों के समीप स्थित मस्जिद का मौलवी नियमित रूप से इस तरह का उपदेश देता था और सैनिक उसको ध्यान पूवक सुनते थे। एक भारतीय व्यापारी कासिम मसूर भी लगभग इसी प्रकार का प्रचार करता रहता था। वह समुद्रतट पर पसीर पजाग म एक कॉफी की दुकान चलाता था। जहा सनिक कॉफी पीने बहुत करके जाते थे। इनके अतिरिक्त और भी बाणिया थी जो सैनिकों के कानों मे इसी प्रकार की बातें फुसफुसाती थीं। बहुधा पाचवीं बटालियन की टुकड़िया युद्ध के बंदियों की चौकसी करने के लिए युद्ध बदी शिविर की रखवाली के लिए भेजी जाती थी जिसमें ऐमडन जहाज के कुछ नाविक भी थे। ऐसा प्रतीत होता है कि जरमन बंदियों ने भारतीय सैनिकों को विश्वास दिला दिया था कि न केवल जरमनी तथा मध्य योरोप की शक्तियां युद्ध मे जीत रही हैं वरन कसर स्वय मुसलमान है और पगम्बर मुहम्मद साहब का वशज है। सनिकों के मस्तिष्क मे यह बठ गया कि जरमन बदी मुसलमान हैं और ब्रिटेन ने मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध छेडा है।

दो भारतीय अधिकारी टर्की के पक्ष मे प्रचार करते थे परन्तु इसम आश्चय की कोई बात नही थी कि सनिकों म असन्तोष की गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो गई थी। सनिकों म इस बात की चिंता उत्पन्न हो गई कि उनको टर्की से लडने के लिए भेजा जावेगा और जब अपने अंतिम निरीक्षण के समय ब्रिगेडियर रिडाउट यह कहना भूल गए कि रजीमट को हागकाग भेजा जा रहा है तो सनिकों मे तुरत यह कानाफूसी होने लगी थी कि ब्रिगडियर उन्हें सच बात बतलाने से भयभीत हो गया कि उन्हें तुर्की से लडने के लिए मैसोपोटमिया भेजा जा रहा है।

मानो यह सब कारण सनिकों म असन्तोष उत्पन्न करने के लिए यथेष्ट नहीं

* इन प्रयत्नों की कहानी अगले परिच्छेद म दी गई है।

थे पाचवी बटालियन म दो अ य प्रभाव काम कर रहे थे। महायुद्ध के छिडने के समय से भारतीय क्रांतिकारी अमेरिका से पजाब आ रहे थे। उनमे से बहुत से अपने घर पजाब मे जाते समय रास्ते मे सिंगापुर मे रुक गए और उन्होने मस्जिदो और मन्दिरो मे यह प्रचार करना शुरू कर दिया कि सब भारतीय फिर चाहे उनका कोई धम क्यो न हो उन्ह ब्रिटेन के विरुद्ध उठ खडे होना चाहिए और इस अवसर का कि जब ब्रिटिश राज्य का ध्यान महायुद्ध के कारण बटा हुआ है, लाभ स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए उठाना चाहिए। पुन इस राष्ट्रवादियो की बात को सैनिको ने ध्यान से सुना। अन्य सेनाओ से पृथक पडी हुई उस सेना के सनिको को ऐसा लगा होगा कि बाहर की दुनिया टूट रही है, नष्ट हो रही है भाग्य ने उन्ह गलत पक्ष मे ला खडा किया है जबकि इस्लाम पर आक्रमण किया जा रहा है और उनका देश स्वतन्त्रता प्राप्त करने वाला है। अलक्षेन्द्रिया बरिको मे किसी ने इसके विपरीत भिन्न बात नही कही।

अन्त मे पदोन्नति के प्रश्न के झगडे को लेकर पाचवी बटालियन दो शिविरो या समूह मे बट गई। एक हवलदार जिसे कमीशन रैंक मिलने की आशा थी, वह कमीशन प्राप्त करने म असफल रहा। इसको लेकर सनिक दो दलो मे बट गए एक दल उनका था जो कि उस महत्वाकाक्षी हवलदार को इस प्रकार अवमानित किए जाने पर बहुत क्षुब्ध था और दूसरा दल उन लोगो का था जो कि उसके प्रगति रोध पर बहुत प्रसन्नता था।

बटालियन की आ तरिक कठिनाइयो और बाह्य राजनीतिक प्रभावो जो सनिको को प्रभावित कर रहे थे देखते हुए यह आश्चय की बात है कि सकट इससे पूव ही क्यो नही फूट पडा निश्चय ही इस बात की बहुत-सी चेतावनिया मिल चुकी थी कि अलक्षेन्द्रिया मे खतरा मडरा रहा है। नागरिक सनिको के आचरण मे परिवतन हो जाने के सम्ब ध म टिप्पणी करते थे। विशेषकर उन सनिको के आचरण म विशेष परिवतन हुआ था जो तजोंग-कटाग जो योरोपियन लोगो के स्नान करने का प्रिय स्थान था को जाने वाली सडक की चौकसी करते थे। वे सनिक अत्यन्त नाराज दिखाई पडते थे। सनिक विद्रोह के फूट पडने के कुछ दिनो पूव दो कप्तानो ने रजीमेंट मे जो सकट की स्थिति उत्पन्न हो रही थी उसके बारे म खुल शब्दो म कहा था। उनकी इस टिप्पणी ने श्रीमती ई एफ हावल मध्य सिंगापुर म मैथाडिस्ट प्रकाशन गृह म रहने वाली गिरजाघर की कायकर्त्ता के कथन की पुष्टि कर दी थी।

यद्यपि सनिक विद्रोह की योजना सावधानी स तयार की गई थी। परन्तु योजना के अनुसार जब वह होना चाहिए था उसमे पूव फूट पडा। जब ब्रिगेडियर रिगाऊट ने विदाई का निरीक्षण किया रजीमट का भारी सामान तथा उपकरण मशीन गनो सहित नोरे जहाज पर भेज दिया गया था। छोटे अस्त्र-शस्त्र तथा गोली बारूद दूसरे दिन प्रात काल भेजी जाने वाली थी सनिक विद्रोहियो की योजना थी कि उस रात्रि म ८ बजे रात्रि को शस्त्रागार पर धावा बोला जावे। परेड जब समाप्त हो गई तो मार्टिन का विचार बदल गया और उसन ऐम्यूनिशन को उसी दिन दोपहर के बाद जहाज पर भेजे जाने की आज्ञा दे दी तो सनिक विद्रोह के नेता अपन अनुसूचित काय

को नियत समय से पूर्व करने पर विवश हो गए। जब तीन बजे सायंकाल को संकेत देने वाली गोली चलाई गई। तो एन सी ओ के एक समूह ने तथा सनिकों ने तुरन्त उन ट्रकों को घेर लिया जिन पर ऐम्यूनिशन लादा गया था और उन्होंने उसे शीघ्रता-पूर्वक विद्रोही सनिकों में बांट दिया। ऐसा अनुमान किया जाता है कि आठ कम्पनियों में से चार कम्पनियों ने विद्रोह कर दिया था। श्रीमती हावेल से कैप्टेन बोयसी (एक अधिकारी) ने बटालियन की आन्तरिक स्थिति के सम्बन्ध में चिंता प्रगट की थी वह उन विद्रोही सनिकों के पास गया और उनसे इस कार्य का जब उसने प्रतिषेध किया तो उसे गोली मार कर मार दिया गया।

अन्य अफसरों (अधिकारियों) जिन्होंने शीघ्रता पूर्वक खतरे का अनुमान कर लिया उन्होंने भारतीय अफसरों से हस्तक्षेप करने को कहा। उनको उत्तर मिला कि बात बहुत आगे बढ़ चुकी है। यह सुनकर उन अफसरों ने तर्क-वितर्क में समय को नष्ट नहीं किया वे नौरमैंटन की ओर भागे वह सैनिक शिविर समीप ही था जहां मलाया स्टेट वालंटियर राइफिल्स के सैनिकों का प्रशिक्षण चल रहा था। कप्तान सिडनी स्मिथ ने अपने सिपाही वालंटियरों को एकत्रित किया और वह पांचवी बटालियन के बगले की ओर चल दिया। वे लोग विद्रोही सनिकों से पहले वहां पहुंच गए और उसने बगले को प्रतिरक्षित कर दिया। उसी समय कनल ने ब्रिगेडियर जनरल रिडाऊट को फोन किया। फोन ठीक समय पर कर दिया गया कुछ ही मिनटों में फोन की लाइन काट दी गई और गोलियों की बौछार ने घोषणा कर दी कि उसके बगले की घेराव दी कर ली गई है।

रिडायट फोर्ट कनिंग पहुंचे और उन्होंने एच एम एस कडनस को सन्देश भेजा। सौभाग्यवश नौ सनिकों का तट पर जाने की छुट्टी नहीं दी गई थी। कप्तान बाल ने नागरिक पुलिस को पांचवी बटालियन के विद्रोही हो जाने की चेतावनी दे दी। किंतु किसी कारण से जिसकी कभी व्याख्या नहीं की गई। श्रीमती रिडाऊट ने पी ओ डब्लू शिविर से फोन पर सम्पर्क करने में देरी कर दी। जिसका परिणाम जैसा कि हम आगे देखेंगे बहुत से गार्डों (चौकसी करने वालों) के लिए घातक हुआ।

पांचवी बटालियन के पास ही मलाया स्टेट खच्चर बटरी के एक सौ सैनिक गाइड रखे हुए थे। जो कि प्रधानतः एक सिक्ख यूनिट थी। गाइड अर्थात मार्गदर्शक नाम * होते हुए भी गाइड्स का एक दूसरा यूनिट था जो आन्तरिक कठिनाई से आक्रान्त था। उनकी कठिनाई मुख्यतः धार्मिक थी। १९१० में मलाया में सिक्ख समुदाय जो मजाह मानवा के संघर्ष के नाम से प्रसिद्ध हुआ, के कारण विघटित हो गया था। यह विभाजन आज भी मलाया में सिक्खों को एक दूसरे से पृथक किए हुए है। यह संघर्ष एक धार्मिक सुधार आदोलन के कारण उत्पन्न हुआ था जिसका पंजाब के मालवाई जिले में प्रादुर्भाव हुआ। मालवाई लोगों और परम्परा तथा रूढ़ियों को अधिक मानने वाले मजाह लोगों में भयंकर द्वन्द्व उठ खड़ा हुआ। यह झगड़ा धार्मिक

* परिशिष्ट 'ब' को देखिए।

सिद्धांतो और रूढियो के कतिपय बिन्दुओं को लेकर था। इस झगडे ने गाइड (मार्ग दशक सैनिको) मे इतना भयकर रूप धारण कर लिया कि सिक्खो को मजाह और मालवा कम्पनियो को पुनगठिन कराना पडा। ऐसा सदेह करने के कारण हैं कि परिभ्रामी क्रातिकारियो ने इस झगडे का लाभ उठाया उस और उत्तेजित किया क्योकि १९१४ मे गाइड माग दशक सनिको ने विदेश म काय करने से इकार कर दिया। उनको पूव अफ्रीका मे भेजे जान के लिए रखा गया था।

बटरी के सनिको ने थोडे से समय के लिए विद्रोही सनिको का साथ दिया वे कप्टेन मक्लियन के निवास स्थान पर गए जो रायल गरिसन आरटीलरी जो गाइडो माग दशक सनिको के साथ जुडी हुई थी का एक अधिकारी था और उसे मार दिया। उस हत्या को करके माग दशक सैनिक गायब हो गए। वे अपनी तोपो का छोड गए। जिनको सौभाग्यवश विद्रोही सनिक चलाना नही जानत थे। इस बात की सम्भावना है कि सिक्खो का हृदय परिवतन हुआ हो उनका विचार बदल गया हो और उन्होने पजाबी मुसलमानो का साथ देने के विरुद्ध निणय किया हो। जिन्हें वे अपने स हीन समझते थे बाद को कुछ गाइड माग दशक सैनिक मलाया मे उत्तर की ओर कूच करते हुए पाये गए। उनका कहना था कि वे पैराक म टीन के सनिक डिपो म रिपोट-हाजरी देने जा रहे हैं। कुछ सिंगापुर मे बैरिको और थानो म रिपोट की।

जबकि गाइड माग दशन सैनिक चले गए तो विद्रोह सनिकों ने मार्टिन के बगले पर अधिकार करने और उसे बन्दी बनाने के लिए एक दल को पीछे छोड दिया। उसके उपरात वे दो समूहो मे बट गए एक दल पासिर पजाग के चक्करदार माग से सिंगापुर की ओर बढा और दूसरा दल ग्रामीण क्षेत्र का पार कर 'टागलिन' जा जरमन सनिको का बन्दी शिविर था, उसकी ओर गया।

पहले दल को सिंगापुर निते के निना जज (न्यायाधीश) श्री सी वी डायसन मिल जिन्हे उन्होने मार दिया। उसके उपरात उन्होने चाइना म्युचुअल बीमा कम्पनी के श्री मागल और ईस्टन ऐक्सटेंशन टैलीग्राम कम्पनी के श्री वी एम वुलकोम्बे तथा उनकी पत्नी को गोली से मार दिया एक सनकी श्री गिबसन उन्हें मिल जो सडक पर स्वय अपने से बात करते हुए टहलते हुए मिले। विद्रोही सनिको ने यह तय किया कि वे पागल हैं उन्हे अपने रास्ते जान दिया जावे। कुछ सनिक नगर की ओर मुडने के बजाय पासिर पजाग की ओर बढ गए जहा वे अपने गुरु काशी की दुकान के मालिक मसूर से सम्मिलन स्थान पर मिलने की आशा करते थे। रास्ते म वे श्री मकगिलवे तथा श्री डन जो एक बहुत बडे व्यापारिक सस्थान ग्रथरिक वाघ के कमचारी थे के समुद्रतट पर बने हुए बगला के पास आए। उन दोनो न उस दिन प्रात काल एक स्नान करने के लिए पार्टी को आमत्रित किया था और उन स्नान करने वाले अतिथियो मे से श्री बट स्वय जो उनके निकट पडोसी चाय पीने के लिए रुक गए थे। विद्रोही सनिको ने उन्हें बरामदे म सिगरेट पीते और आनन्द करते हुए देखा उन्होने तीनों को गोली मार दी। डन ने उससे बचने की कोशिश की परन्तु जब वह बरामदे की रेलिंग पर चढने का प्रयत्न कर रहा था, तब उसके गोली लगी।

जिन सैनिकों ने नगर का रास्ता लिया था वे पांचवी बटालियन के लफ्टीनेंट इलियट के पास आए और उन्हें मार दिया। इस सड़क पर उनके पांच मे से वह पहला था। एक अथवा दो नागरिक भाग्यवान थे उन पर गोली चलाई परन्तु वे भागने मे सफल हो गए और उन्होंने भागकर शहर मे खतरे की सूचना दे दी।

इतने मे विद्रोही सैनिकों का मुख्य दल चार बजे सायकाल के लगभग टांगलिन पहुंच गया। युद्ध बन्दी शिविर की चौकसी करने वाले रखवालों को उन्होंने नितान्त असावधान पाया।

वहां जोहोर राज्य की सेना के मलाया सैनिकों की सहायता से सिंगापुर वालंटियर राइफिल्स के वालंटियर स्वयं सेवक ड्यूटी कर रहे थे। मनोनीत जोहोर सुलतान की निजी सेना के सैनिक थे जो ब्रिटेन का विशिष्ट मित्र था और जो स्टूटस मे पार अपने राज्य का शासन करता था।

जिस समय विद्रोही सैनिक गार्ड रूम (गार्ड रूम) मे घुसे उस समय गार्ड कमांडर लफ्टीनेंट जैक माटगोमरी ने श्रीमती रिडाऊट से बातें करने को टेलीफोन के रिसीवर को उठाया ही था। श्रीमती रिडाऊट ने फोन पर गोली चलने की आवाज सुनी और फिर फोन बन्द हो गया। फोन की लाइन कट गई थी सुन हो गई, तब माटगोमरी घातक रूप से घायल होकर गिर पड़े और विद्रोही सैनिक उनके ऊपर से छलांग मार कर शिविर मे घुस गए। वहां उन्होंने कमांडेंट दो कप्तान, दो कारपोरलों तथा चार वालंटियरों को मार दिया। आरमी सर्विस कोर्पस के सार्जेंट रावसटन, रायल गैरिसन आरटिलेरी के सार्जेंट वेगले एक मलाया अधिकारी और दो मलाया सैनिक, एक जरमन युद्ध बन्दी मारे गए। उन्होंने तीन वालंटियरों और एक कैदी को घायल कर दिया।

विद्रोही सैनिक शिविर मे दौड़ रहे थे। और बन्दियों से हाथ मिला रहे थे जो कि अत्यन्त भयभीत हो गए थे। यद्यपि शिविर के फाटक खोल दिए गए थे। जरमन तथा आस्ट्रियन युद्ध बन्दी शिविर से गए नहीं वरन वे घायल और मृतकों की सहायता करने लगे। कारण यह था कि युद्ध बन्दी मुख्यत व्यापारी थे जो वर्षों से सिंगापुर मे रह रहे थे। उनको उनके रखवाले (गार्ड) अच्छी तरह जानते थे उनमे युद्ध पूर्व के उनके बहुत से मित्र थे। बन्दी अवस्था अधिक कठोर और श्रम साध्य नहीं थी और शिविर की चौकसी बहुत ढीली थी। बाद को जैसे दिन चढ़ता गया, सत्रह जरमनों ने अपने भाग्य की परीक्षा करने का निश्चय, किया वे शिविर से निकल गए। बाद को उनमे से चार पुन गिरफ्तार कर लिए गए। परन्तु शेष तटस्थ डच ईस्ट इंडीज मे पहुंचने मे सफल हो गए।

यह विडम्बना ही कही जावगी कि जरमन कैदियों का एक समूह शिविर से निकल जाने के लिए एक गुप्त सुरंग बना रहा था। जब विद्रोही सैनिक एकाएक शिविर मे पहुंचे तो वह सुरंग सम्पूर्ण होने के समीप थी। कुछ दिनों मे ही वे बन्दी शिविर से निकल जाने मे सफल हो जाते। किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश बन्दियों ने सोचा कि सैनिक विद्रोह का लाभ उठा कर बन्दीगृह से

मुक्त होना स्वतंत्रता प्राप्त करने का सम्मानजनक तरीका नहीं है अस्तु उन्होंने उस अवसर को अस्वीकार कर दिया।

परन्तु एक व्यक्ति जो बन्दी शिविर से निकल जाने के लिए दृढ़ संकल्प था वह लैफ्टीनेंट जूलस लाटरबैच था। वह ऐमडन जहाज का पूर्व अधिकारी था और उसने पांचवीं बटालियन के सैनिकों के नैतिक बल को गिराने में बहुत कार्य किया था। पांचवीं बटालियन ने विद्रोह कर दिया तो लाटरबैच का सारा प्रयत्न किसी प्रकार सिंगापुर से निकल जाने में केन्द्रित हो गया। वह अपने कतिपय नाविकों के साथ उस रात्रि को निकल गया और स्टेट को पार करके जोहोर में पहुंच गया। वहां उसे एक नाव मिल गई जिसके द्वारा साहसिक यात्रा करके वह शंघाई पहुंच गया। बाद का वह समुद्र में धावा मारने वाले 'मोवे' जहाज का कमाण्डर बना जो जिसने एमडन ही तरह बहुत से ब्रिटिश जहाजों को डुबो दिया।

अधिकांश युद्ध बन्दियों द्वारा शिविर से निकल जाना अस्वीकार कर देने से सैनिक चकित हो गए उनके लिए वह एक पहेली बन गई। जैसा कि लाटरबैच और उसके मित्रों ने उनको परोक्ष रूप से आज्ञा दी थी। उन्होंने उनके लक्ष्य को पूरा कर दिया था। परन्तु उन्होंने देखा कि जिन अंग्रेजों को उन्होंने गोली मारी थी उन ब्रिटेन वासियों की जरमन बन्दी सहायता कर रहे थे। आश्चर्य चकित होकर विद्रोही सैनिक बिखर गए। आगे क्या करें वे यह नहीं जानते थे। कुछ लोग उस टर्की के युद्ध पोत की खोज में सिंगापुर गए जो मंसूर के कथनानुसार उन्हें उस द्वीप से ले जाने के लिए आने वाला था। अन्य विद्रोही सैनिक जो अधिक जागरूक थे और वास्तविक स्थिति समझते थे उन्होंने अनुभव कर लिया कि खेल समाप्त हो गया। वे समझ गए कि उन्हें जरमनों के बारे में गलत फहमी में रखा गया (खेद की बात यह थी कि कुछ विद्रोही सैनिक जरमनों को तुर्क समझते थे) वे वहां से निकलने के लिए एक मात्र मार्ग स्ट्रेटस के पार जो कि द्वीप को प्राय द्वीप से पृथक करता था और जोहोर के जंगलों में जाता था उसी मार्ग पर निकल पड़े।

सैनिक विद्रोह का प्रारम्भ हुए कुछ ही घन्टे हुए थे किन्तु विद्रोही सैनिक उद्देश्य विहीन होने लगे थे। उनका कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं था और न उनका कोई नेता था जो उनको बतलाता कि उन्हें क्या करना चाहिए। शीघ्र ही वे बिखरने लगे व यही अनुभव नहीं कर सके कि उनका बल एक साथ संगठित होकर रहने में है। बिखरे हुए, अलग-थलग विद्रोही सैनिकों के दल नगर की सड़कों पर घूमने लगे उन्होंने कुछ नागरिकों को गोली मार कर मार दिया। यद्यपि उन्होंने अधिकांश स्त्रियों को बिना छेड़छाड़ के जाने दिया। स्त्रियों ने जो कुछ हुआ उसको बढ़ा चढ़ा-कर कहा और लोगों को सुनाई इस कारण जनता में भय और आतंक फैल गया और भगदड़ मच गई। पन्द्रह मई को अपनी टिप्पणी में 'स्टेट टाइम्स' समाचार पत्र ने लिखा कि यदि विद्रोही सैनिकों में एक भी योग्य नेता प्रगट होता तो वे सीधे सिंगापुर में कूच कर सकते थे और जैसा चाहते वैसा कर सकते थे। क्योंकि द्वीप इस प्रकार की घटना का सामना करने के लिए बिलकुल तैयार नहीं था। पर हुआ यह कि विद्रोही सैनिक विक्षिप्त की भांति चारों ओर दौड़ते रहे और उन्होंने विस्मय का जो लाभ उन्हें मिल सकता था वह उन्होंने खो दिया। रात्रि पड़ते-पड़ते ब्रिटिश

लोग प्रारम्भिक धक्के तथा घबराहट से स्वस्तीभूत हो गए और उन्होंने अपने को संगठित करना आरम्भ कर दिया ।

ब्रिगेडियर रिडाऊट ने सभी सावजनिक और सरकारी इमारतों तथा नौका स्थलों पर सशस्त्र पहरेदार नियुक्त कर दिए । उसने वालंटियरों को ड्रिल हाल पर तथा पुलिस को आरचड स्टेशन पर केन्द्रित कर दिया । पुलिस की सहायता के लिए छत्तीसवीं सिक्ख रजीमेंट से मिलने के लिए यात्रा कर रही थी और मार्ग में थी । जापानी कासल अपने १९० देशवासियों को विशेष कांस्टेबिल के रूप में नियंत्रण में रखे हुए था और पुलिस ने उनको राइफिलें दे दी ।

बड़ी संख्या में नागरिकों से मोटर कारें अधिग्रहण कर ली गई उन्हें धातुओं की चादरों से आरक्षित करके उनका उपनगरों से योरोपियन स्त्रियों और बच्चों को लाने के काय में उपयोग किया गया । उन्हें अस्थायी शरण तो गवनमेंट हाऊस में दे दी गई । बाद का कपल ब दरगाह में खड़े जहाजों पर उनमें से कुछ को ले जाया गया । पासिर पजाग क्षेत्र से विद्रोही सनिकों का नगर में प्रवेश अवरुद्ध करने के लिए रिडाऊट ने काडमस जहाज के अस्सी नाविक सैनिकों के दल को आगे भेजा । साढ़े ६ बजे सायंकाल को मार्शल ला फौजी कानून लगाए जाने की घोषणा कर दी गई । सूर्यास्त होते-होते द्वीप में उचित सुरक्षा की व्यवस्था हो गई ।

यह निर्णय किया गया कि दूसरी प्राथमिकता पांचवी बटालियन के कनल के बंगले में जो लोग घिरे हुए हैं उनको जैसे ही यथेष्ट रोशनी हो जावे, निकालने के काय को दी जावे । विद्रोही सनिक रात्रि में बंगले पर गोलियां दागते रहे परन्तु वे बंगले पर सीधा आक्रमण करने से कैंपिंग माटी के पास से एक सच लाइट का प्रकाश जो बंगले और उसके कम्पाऊंड पर पड़ता था, के कारण हिचक गए । बंगले के अन्दर पांचवी बटालियन के एक मेजर की पत्नी ने १८५७ के सनिक विद्रोह की परम्परा के अनुरूप ही काय किया वह रक्षा करने वालों में घायलों के जख्मों पर पट्टी बांधती थी और बीच में रक्षकों का काय भी देती थी ।

इस काय को करने के लिए एक कायकारी सेना जिसमें इक्कीस तोपची पचास वालंटियर, पच्चीस सशस्त्र नागरिक तथा कडमस जहाज के आदमी थे । लैफ्टीनेंट कनल सी डब्लू बारलो आर ए के नेतृत्व में गठित की गई । उनको यह आज्ञा दी गई कि पौ फटते ही बंगले की घेराबंदी का तोड़ कर बंगले में घिरे हुए लोगों को निकाला जावे ।

विद्रोही सनिक पुलिस स्टेशनों पर और बंगले पर गोली चला रहे थे । इस कारण अन्धकार के घन्टों में रह-रह कर गोली चलाए जाने की आवाज आती थी । अलेक्जेंड्रिया रोड पुलिस स्टेशन के डाक्टर ए एफ लग्गे (सिंगापुर वालंटियर मेडिकल कम्पनी) जब आर जी ए की एक तोपची को जो घातक रूप से घायल हो गया था, थूपा करने गए तो मार गए ।

बकिट तिमाह पुलिस स्टेशन पर पांचवी बटालियन के १३८ सनिकों ने अपने को पुलिस के हवाले कर दिया और आरचड रोड स्टेशन पर दो विद्रोही सनिक गोलियों के आदान-प्रदान में मारे गए ।

आश्चर्य की बात थी कि उस सारे समय के अन्तर्गत नगर का जीवन सामान्य ढंग से चलता रहा। चीनियों का मानो उससे कोई सरोकार ही नहीं था कि जो कुछ उनके आसपास हो रहा था। चीनियों का क्षेत्र (चाइना टाउन) उस रात्रि को पर्व मनाता रहा। स्टेशन पर पनाग से डाक गाड़ी समय पर आई और रात्रि को डाक गाड़ी जो पेनाग को जाती थी समय पर गई पनाग रेल गाड़ी में जाहौर राज्य की सेना के १५० सैनिक जाहौर सुल्तान के व्यक्तिगत नेतृत्व में सवार थे जो कि गवनमेंट हाऊस द्वारा सहायता की प्रार्थना पर आए थे।

जब द्वीप पर प्रातःकाल का प्रकाश फूटा तो ब्राऊनलो मोटर कारों में अपनी सहायक सेना को लेकर घिरे हुए बंगले की ओर गया। अलक्षेन्द्रिया बैरिकों के समीप सैनिक मोटरों से उतरे और उन्होंने बैरिकों पर धावा बोल दिया और वे बंगले की ओर बढ़े। एक ऊंची पहाड़ी से गोलियों की मार से उन्हें थोड़े समय के लिए रुकना पड़ा। परन्तु उन्होंने पार्श्व चालन के द्वारा उस पर विजय प्राप्त कर ली और बंगले पर पहुंच कर ब्राऊनलो ने यह तय किया कि क्योंकि विद्रोही सैनिकों की शक्ति बहुत अधिक है अतः उसको (बंगले) को निश्चय पूर्वक अपने अधिकार में नहीं रखा जा सकता अतएव रक्षक दल तथा सहायता के लिए गई सेना आवरण गोली की बौछार में वहां से हट गई। इस युद्ध में एक व्यक्ति मारे गए और चार घायल हो गए और विद्रोही सैनिकों में से ग्यारह हताहत हुए।

जब ब्रिगेडियर की सेना नगर की ओर वापस लौट रही थी तो उन्होंने टांगलिन के गोल्फ के मैदान तथा अन्य स्थानों को साफ कर दिया और तीस चालीस विद्रोही सैनिकों को पकड़ लिया। पांचवीं बटालियन के सैनिक अब सम्पूर्ण सिंगापुर में आत्म समर्पण कर रहे थे। अन्य बहुतों ने मस्जिदों में शरण ले ली। जब उन्हें भरोसा हो गया कि अब पुन प्रगट होने में कोई जोखिम नहीं है तभी वे बाहर निकले। उनमें से जिन्होंने आत्म समर्पण कर दिया अधिकांश का विद्रोह से कोई सरोकार न था परन्तु यह अस्वाभाविक नहीं था कि ब्रिटिश अधिकारियों ने उन सभी के साथ सन्देह का व्यवहार किया कि जब तक जांच पड़ताल से पता न चल जाए कि कौन विद्रोही थे और कौन राजभक्त थे।

सम्पूर्ण सोलह तारीख और सत्रह तारीख में भी छुटपुट गोली चलती रही और आरचर्ड रोड स्टेशन पर आक्रमण को मार कर विफल कर दिया गया। अन्त में लफ्टीनेंट सोंग-आंग सियांग जो सिंगापुर वालंटियर सेना में कमीशन पाने वाला प्रथम चीनी था के नेतृत्व में एक अभीक्षण दल भेजा गया जिसने यह रिपोर्ट दी कि समस्त टांगलिन और अलक्षेन्द्रिया का क्षेत्र विद्रोही सैनिकों से साफ हो गया है। परन्तु सोंग के गश्त लगाने वाले दल को एक पुराने चीनी कब्रिस्तान में नीचे तहखानों में अस्त्र शस्त्रों का बड़ा भंडार मिला।

समुद्र पर जहाजों को वायरलैस से सूचना दे दी गई और सत्रह तारीख को मर्चेन्ट क्रूजर "मादराम" जो सिंगापुर से सैनिक विद्रोह के दिन चला था। १९० आदमियों तथा मशीनगनों को उतारने के लिए वापस आया। वृहस्पतिवार अठारह तारीख को रूसी क्रूजर 'ओरल' बंदरगाह में आया और उसने १४० आदमियों

को उतारा। शनिवार को जापानी क्रूजर "टिसुचमा" ने पचहत्तर आदमी उतारे। रविवार को रगून से 'ऐडवाना" जहाज आ गया उसमे किंग्स ओन शापशाइर लाइट इन्फैंटरी की चौथी बटालियन ही आई थी। उस समय तक यह अनुमान था कि पाचवी बटालियन के ८१८ म से ६१५ आदमियो ने या तो आत्मसमपण कर दिया था, या गिरफ्तार कर लिए गए थे और ५२ मारे गए थे। बोरनियो से खोजी सैनिक बुलाए गए जो उन लोगो को खोज निकालें जो जोहार मे जगलो मे छिप गए हो इस प्रकार थोडे-थोड़े करके उस प्रतिष्ठित रजीमेंट के खोये हुए भयभीत और आधे भूखे बचे हुए सनिक पकड लिए गए।

जबकि थोडे से बचे हुए भगोडा की खोज हो रही थी। अधिकारी गिरफ्तार किए हुए विद्रोही सनिको के विरुद्ध कानूनी कायवाही करने मे व्यस्त थे। २४ फरवरी प्रोवोस्ट माशल मेजर ए एम थामसन ने घोषणा की कि पिछले दिन दो आदमियो को कोट माशल किया गया और गोली मार दी गई। वे उन बहुतों से पहले थे। जिन्हे कोट माशल किया गया। सब मिलाकर १२६ का कोट माशल किया गया। ४६ को मृत्यु दड दिया गया और उन्हे आउटराम रोड की जेल पर सावजनिक रूप से गोली मार दी गई ४१ को आजीवन कारावास और कालापानी का दण्ड दिया गया। ८ को बीस वष, १६ को पन्द्रह वष, १० को दस वष दो को सात वष और १२ को एक से पाच वर्षों के कारावास का दण्ड दिया गया। पहले यह घोषणा की गई थी कि कासिम मजूर को सावजनिक रूप से लटका कर फासी दी जावेगी परन्तु बाद को अधिकारियो का विचार बदल गया और फासी की टिकटी जो अधबनी थी वह गिरा दी गई और काफ़ी की दूकान के मालिक को आउटरम रोड के बमटिली के समान जेल के अन्दर फासी दे दी गई।

२१ अप्रेल को दो भारतीय अफसरो सूबेदार डूडे खा और जामादार चिश्ती खा जिन्होने सनिक विद्रोह को भडकाने मे सहायता की थी आउटरम रोड जेल से ले जाए गए उनके दानो ओर सिक्ख पुलिस चल रही थी। वे नागरिको की पोशाक मे थे। जब उनकी सजा को उदू मलाया और चीनी मे पढ कर सुना दिया गया उनको खम्भो से बाध दिया गया उनकी आखो पर पट्टी नही बाधी गई और रायल गैरिसन आर-टीलरी के दस सनिको के दस्ते ने गोली मार दी। उनकी मृत्यु को हजारो भारतीयो चीनियो, मलायो और योरोपियनो ने देखा। उस दिन दोपहर के बाद औरो को भी गोली मारी गई। गोली मारने वाले दस्तो को उन यूनिटो से लिया गया जिनके आदमी इस युद्ध मे मारे गए थे।

तब से इस बात पर कि कितने विद्रोही सनिक मारे गए कुछ विवाद खडा हो गया है। सरकार आकडा को प्रकाशित करने की अनिच्छुक थी और श्री एडवर्ड ल्याज मैंक्सवल स्ट्रेट सटिलमेंट के स्थानापन्न औपनिवेशिक सचिव ने सैनिक विद्रोह के सम्बन्ध म अपनी राजकीय रिपोट मे मृत्यु दण्ड का कोई उल्लेख ही नही किया। सामान्य रूप से यह स्वीकार किया जाता है कि सैतालीस विद्रोही सनिको को मृत्यु दण्ड दिया गया, यद्यपि इस सम्बन्ध मे राज्य द्वारा गोपनीयता बरती जाने के कारण यह अफवाह कि वास्तविक आकडे अधिक हैं, बहुत अधिक प्रचरित हो गई थी।

२५ मार्च को मृत्यु दण्ड के एक अवसर पर गोली मारने वाले दल में सिंगापुर वालटियर आरटिलेंरी मैक्सिम कम्पनी और सिंगापुर वालटियर राइफिल के ११० आदमी थे। उन्होंने बाईस विद्रोही सनिको को गोली से मार दिया। प्रत्येक विद्रोही सैनिक को मारने के लिए पाच व्यक्ति नियत किए गए। अंतिम प्राण दण्ड सत्रह मई को दिया गया।

सैनिक विद्रोह के सम्बन्ध म ब्रिगेडियर जनरल राउटन ने राजकीय जाच की जो भारत से भेजे गए थे परन्तु उनकी रिपोट कभी प्रकाशित नही की गई लैफ्टीनट कनल ब्राउनलो सैनिक अदालत के अध्यक्ष थे और मेजर ऐज (१/४ के एस एल आई) और कप्टेन बात (पाचवी लाइट इफैंटरी) उनके सहायक थे। उनकी सनिक विद्राह के सम्बन्ध में निज की रिपोट में छीटाकशी के इस विशेष कथन पर कि सशस्त्र नागरिको मे इतनी यथेष्ट बुद्धि थी कि बगले पर आक्रमण करने की बहुत भद्दी भूल न की जावे। इस विशेष कथन ने सिंगापुर के नागरिको मे तीव्र रोष उत्पन्न कर दिया। वालटियर नागरिको की ओर से तेज ताडन के रूप मे प्रति उत्तर आया कि हम खेद है कि हम इस समादर वाक्य को वापस नही कर सकते।

सिंगापुर के निवासियो का ब्राउनलो के प्रति रुष्ट होना समझ मे आ सकता है। जो कुल सतालीस व्यक्ति मारे गए उनमे आधे से अधिक वालटियर और नागरिक थे। परन्तु यह नाराजगी शीघ्र ही लुप्त गई। अधिकारियो ने सैनिक विद्राह की विभीषिका को कम करके दिखलाना आरम्भ कर दिया और सिंगापुर क निवासियो ने उसे यह समझ कर कि युद्ध काल मे इस प्रकार की घटनायें घट सकती हैं अपने मन से निकाल फेंका और अपने कामो मे व्यस्त हो गए। सैनिक विद्रोह के समय तथा उससे कई सप्ताहो बाद तक समाचार पत्रो पर प्रतिबन्ध (सैंसर) लगा दिया गया था कि वे केवल राजकीय वक्तव्यों को ही प्रकाशित करेंगे। जब यह प्रतिबन्ध उठा लिया गया तो स्ट्रेट टाइम्स ने सिंगापुर मे भारतीयो की सामान्य राज्य भक्ति पर एक मृदु (नरम) टिप्पणी लिखी साथ ही इस बात का भी अनुरोध किया कि सरकार ने द्वीप म जितने भी भारतीय हैं उनका पजीकरण किए जाने की जो आना नी है वह जितना सम्भव ह विचार शीलता से किया जाने। जनता का विश्वास था कि सनिक विद्रोह एक स्थानीय मामला था। इस मान्यता को सरकार ने भी बढावा दिया। परन्तु वास्तविक सच्चाई यह है कि सैनिक विद्रोह भारतीय क्रातिकारियो के उस बडे षडयन्त्र का एक हिस्सा था जो उन्होने ब्रिटिश राज्य को सिंगापुर मलाया और बरमा से समाप्त करने के लिए रचा था। उसके बाद वे भारत पर आक्रमण करते जहा उन्हें आशा थी कि दक्षिण पूर्व से आक्रमण होने पर वहा विद्रोह खडा किया जा सकेगा। यद्यपि सनिक विद्रोह असफल हो गया परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से वह महत्वपूण है। वह क्रातिकारियो की महत्वाकांक्षी योजना अर्थात भारत पर आक्रमण की एक महान सफलता थी। भारत पर आक्रमण करने का स्वप्न कभी समाप्त नही हुआ। जसा कि हम देखेंगे कि जब १५ फरवरी १९४२ का सिंगापुर पर जापानियो का अधिकार हो गया। जबकि इस के सनिक विद्रोह की सत्ताइसवीं वर्षगांठ थी तब क्रांतिकारियो की एक नई पीढी को भारत पर आक्रमण करने का नया अवसर प्राप्त हो गया।